शब्दों का सौदागर

निर्मोही व्यास

पुस्तक मंदिर, बीकानेर

शब्दों का सौदागर

(सात लघु मंचीय नाटकों का संग्रह)

निर्मोही व्यास

पुस्तक मन्दिर, बीकानेर

अनुक्रमणिका

समर्पण

हिन्दी के यशस्वी महाकाव्यकार एवं शब्दर्षि महोपाध्याय स्व.श्री माणकचन्द रामपुरिया को सश्रृद्ध रचना सुमन सादर समर्पित ।

– निर्मोही व्यास

जीवन के विविध जटिल यथार्थ को पाठकों एवं दर्शकों के सामने लाने के लिए नाटक से बढ़कर कोई सहज माध्यम नहीं है । दूसरे शब्दों में कहा जाये तो समाज के सभी वर्गों की सहभागिता केवल नाटक के साथ ही देखी जा सकती है । इस संदर्भ में वरिष्ठ शब्दकर्मियो का यह कथन सही है कि सौद्देश्य एवं अर्थपूर्ण प्रतीको के तहत नाटक की कथा मे अन्तर्निहित मूल भावनाओ को आसानी से उजागर किया जा सकता है ।

वैसे भी, साहित्य की सर्वाधिक सामाजिक विधा नाटक है जो समाज की विसंगतियों और विडम्बनाओं को समाज के सामने नंगा करने में कहीं कोई हिचक नहीं दर्शाता । इसलिए नाटक का रचनात्मक स्वरूप ऐसा होना चाहिए जो समाज के हर व्यक्ति को अपना अन्तर टटोलने को उत्प्रेरित कर सके ।

मैंने अपने इन नाटकों की रचना मे यह भरपूर चेष्टा की है कि नाटक अपनी समग्रता में अवधरित हो । आज हर व्यक्ति जीवन की ऐसी व्यस्तता में उलझा हुआ है कि प्रेक्षागृह की ओर चाहते हुए भी उसके कदम नहीं उठते । कुछेक रंगप्रेमी, जो कभी–कभास नाटक देखने की लालसा को अधिक दबा नहीं पाते, उनका भी यह मानना है कि घंटे–सवा घंटे से अधिक नाटक की मंचनावधि उन्हें प्रायः अखरने लगती है ।

मैंने भी कई दफे महसूस किया कि लंबी अवधि के नाटक दर्शकों को प्राय. रास नहीं आते । बस, इसी बात को ध्यान में रखते हुए मैंने अपनी इस नाट्य कृति में केवल उन्हीं हास्य–व्यंग के लघु नाटको को स्थान दिया है जिनकी प्रस्तुति एक घंटे से अधिक की न हो ।

हिन्दी के बहुचर्चित समालोचक एवं साहित्य के अधिष्ठाता श्रीयुत् उमाकान्त गुप्त का मैं हृदय से आभारी हूँ जिन्होनें अपनी व्यस्ततम दिनचर्या में से समय निकाल कर इस पुस्तक की भूमिका लिखने के मेरे अनुरोध को स्वीकार करने की अनुकम्पा की ।

अन्त में, मैं श्री ब्रजमोहन पारीक, संचालक विकास प्रकाशन को धन्यवाद देना चाहूंगा जिन्होंने इस कृति के प्रकाशन का बड़ी संजीदगी के साथ दायित्व वहन किया ।

निर्मोही व्यास

"कर्टेन रेजर"

श्री निर्मोही व्यास नाट्य चेतना से सम्पन्न कुशल रंगकर्मी के रूप मे बीकानेर की नाट्य परंपरा के सशक्त रचनाकार है । प्रयोगों की उछलकूद से दूर सामाजिक समस्याओं से दो–चार होना एवं उनसे बाथेड़ा करना निर्मोही व्यास की खूबी है । प्रेक्षकरंजन से भरपूर उनके नाटक अपनी विशेष छाप छोड़ते हुए रंग–जगत में समादृत हुए हैं । हिन्दी (आज के चार नाटक; अनामिका; आधी रात का सूरज, कथा एक रंगकर्मी की तथा समय के साये) एवं राजस्थानी (ओळमो; भीखो ढ़ोली; सांवतो; बाबोसा; प्रणवीर पाबूजी तथा अेक गांय री गोमती) दोनों में आपने अपनी कलम के जौहर दिखाए हैं । सहजता और सूक्ष्म पर्यवेक्षण निर्मोही व्यास की रचनात्मक सिद्धि का कारक है । अपने आसै–पासै को कथ्य में बुनकर अनेक रंगों में प्रस्तुति देना निर्मोही व्यास के सरोकारों को प्रमाणित–रेखांकित करता है । निर्मोही व्यास के नाटक रंगमंच से बोध के स्तर पर सीधे जुड़े होकर प्रस्तुति के धरातल पर नाट्य स्थिति, चरित्र और संवाद के नियोजन में सफल हुए हैं । दार्शनिक ऊहापोह एवं सांकेतिकता के स्थान पर यथार्थ का सरल आग्रह निर्मोही व्यास के नाटकों मे अधिक है। उनके नाट्य अभिव्यंजना की रूढ़ि अथवा पूर्वाग्रहों से मुक्त जीवन–मूल्यो की तलाश और पुनर्प्रस्थापना में सक्रिय दिखाई देते हैं। मानसिक भावनाओ के घात–प्रतिघात तथा आरोह–अवरोह के माध्यम से इस सक्रियता को रूपायित किया है। "शब्दों का सौदागर" में इस रूपांकन को देखा जा सकता है ।

'शब्दों का सौदागर' घोषणा पत्रों के लिए अथवा उनके हिसाब से लिखी गई रचना नहीं अपितु मूल्यान्वेषण वृत्ति तथा समय के सच को जानने की कोशिश का परिणाम है । इसका केन्द्रीय विषय बढ़ते बाजारवाद, घटती संवेदना, दरकते रिश्तों, सरकते आधारों के बीच स्त्री–पुरुष सम्बन्धों के बदलते आयामो को उद्घाटित करना है।

पुस्तक 'शब्दों का सौदागर' में सात नाटक हैं जो आधुनिक रंग चेतना और कालबोध से जुड़े हैं ।

'शब्दों का सौदागर' पुस्तक शीर्षक नाम्नी किराएदारी समस्या के बहाने से समकालीन सामाजिक स्थिति को बेपर्दा करने वाला सहज नाटक है ।

धोखा, छल, दोहरी मानसिकता, पीढ़ी का अन्तराल मय द्वन्द एवं सोच की संकीर्णता इस नाटक की बुनावट में करीने से उकेरी गई है । किराए के लिए खाली मकान– मकान मालिक की अधिक किराया झपने की लोलुप दृष्टि को; पुत्र रोहित की अध्यापिका के प्रति देहात्मक दृष्टिजनित स्वच्छंदताजन्य अहमन्यतापूर्वक माता–पिता के प्रति अवहेलनात्मक सोच तथा सन्यासी के दोहरे, छलात्मक, भोगवादी नजरिए के त्रिकोण में विकसित नाटक है । नाटककार ने निर्मम स्थितियो से जूझते हुए संवादात्मक यात्रा की --करायी है । वे जिन्दगी के दोहरेपन को इकहरी भाषा में व्यक्त करते हैं ।

तीसरा कौनः–

दूसरा नाटक 'तीसरा कौन' पति–पत्नि सम्बन्धों की पड़ताल करने वाला नाटक है । आधुनिक सन्दर्भो मे सम्बन्धों के बदलते आयामों की परख का कारगर प्रयास 'तीसरा कौन' करता है । नारी की पूर्णता मातृत्व में है या देहतृप्ति में है ? निष्ठा का दायित्व मात्र नारी का है ? पुरूष नारी को मात्र देह मानकर व्यवहार कब तक करेगा ? शक, बिना प्रमाण शक सम्बन्धों को कब तक तार–तार करेगा ? पुरूष की स्वच्छंदता और नारी की झुकी झुकी नत दृष्टि ही सामाजिक सम्बन्धों की कसौटी है ? प्राश्निकता का अधिकार क्या पुरूष का ही है, नारी का नहीं ? जैसे प्रश्न इस नाटक का आधार बने हैं ।

'किराए की काया' तीसरा नाटक है । तीन पात्रों के बीच 'पति–पत्नी और वो' के त्रिकोण में सम्बन्धों के यथार्थ की तलाश इस नाटक का उद्देश्य है । अपनी टाइपिस्ट से पत्नी के रहते प्यार की पीगे बढ़ाते अभियन्ता और पत्नी तथा टाइपिस्ट का मिलकर अभियन्ता महोदय का दिमाग दुरूस्त करने की रोचक, विनोदात्मक किन्तु गम्भीर कोशिश को रूपाकार करता है नाटक – 'किराए की काया' । कोशिश का लक्ष्य है नारी मुक्ति का संघर्ष स्वयं नारी को करना होगा वह भी बिना पुरूष अवलम्ब के । अन्यथा पुरूष तो उसे बहला–फुसलाकर, छल से, बल से अपने स्वार्थों का शिकार बनाता रहेगा । अतः नारी मुक्ति की युक्ति नारी के एक होने और स्वयं रास्ते बनाने में सन्निहित है ।

'पोस्टमार्टम' नामक चौथे लघु नाटक का सम्बन्ध भी कमोबेश नर–नारी सम्बन्धों की गहराई मे झांककर देखने की कोशिश है । केनवास भले ही अस्पताल डॉक्टर और नर्स व नर्स के मित्र के व्यक्तित्व से बना हो किन्तु रंग पूर्वोक्त ही है अर्थात अति सुधे स्नेह के मारग पर चलने वालों के सयाने बांकपने का पर्दाफाश करना । मात्र देह तक सीमित रह गए प्रेम शब्द का पोस्टमार्टम कर जीवन मूल्यों की सार्थकता की तलाश इस नाटक मे खूबसूरत ढंग से की गई है ।

'अप्रेल फूल' भी नर–नारी सम्बन्धों के आधार के रूप में विश्वास को प्रतिष्ठित करने वाला लघु नाटक है । इसमें इस विश्वास की स्थापना शक,

संशय और पुरूष के अहं के साये को गिरा कर की गई है । नाटक का अंत भले ही अंधकार के आगोश में हो किन्तु अन्धकार के बाद प्रकाश की प्रतीक्षा में होता है। यहीं रचनाकार की शिवाकांक्षा रेखांकित की जा सकती है ।

'समापन किस्त' भी सुखान्त नाटक है जो विनोद, चुहलबाजी और उमेश–आरती की अठखेलियों के अन्दाज में विकसित हुआ है । रचनाकार मजाई अन्दाज में दृढ़ तेयर से स्त्री–पुरूष सम्बन्धों की नींव में विश्वास की शिला स्थापित करना चाहता है । इस बहाने आज सम्बन्धों मे गहरे पैठ गए शक उपभोक्तावाद व उपयोगितावाद को उखाड़ने के परोक्ष प्रयास में रत है ।

पुस्तक का आखिरी नाटक 'अन्तःकिरण' पूर्णांकी नाटक है । रेखा जो पुलिस अफसर की बिगड़ैल बेटी है एवं राजन के सम्बन्धों की कहानी से बुना गया है । स्त्री–पुरूष सम्बन्धो मे आधुनिकता की चकाचौंध के बीच भारतीय जीवन मूल्यों की स्थापना का प्रयास इस नाटक में हुआ है रेखा का अन्तस पिता की बातों और नौकर–नौकरानी की चुहलबाजी से परिवर्तित होता है और नाटक बदलाव में स्नेह, समझदारी, समन्वय और परस्पर विश्वास समर्पण को परोटता दृष्टिगत होता है ।

नाट्य शिल्प के स्तर पर नाटक के संवाद महत्वपूर्ण है । छोटे और कसे संवाद विशिष्ट परिस्थितियों के अंकन में सफल हुए हैं । इसी कारण कथा विकास में पूर्ण सक्षम है । एक बानगी देखिए –

रंजना – मुझे सरदारों से तो वैसे ही डर लगता है । नाम सुनते ही किसी सरदार जी के लिए बात हो रही है । इसीलिए भागी आई ।

ओझाजी – सरदार जी की बात नहीं है । यह कोई जरूरी नहीं कि हर सरदार आतंकवादी हो । नहीं –नहीं ऐसा हमें कभी सोचना ही नहीं चाहिए । एक–दो के कारण सारे सिख समुदाय को शक की निगाहो से देखना ओछी मानसिकता है ।

रंजना – तो फिर आपने उसके लिए मना क्यों किया ?

ओझाजी – इसलिए कि सक्सेना जिस बलवन्त सिंह की बात कर रहा था, वो आदमी ठीक नहीं है । मैं उसे जानता हूँ । उस पर कई घोटालों के आरोप लगे हुए हैं ।

(शब्दों का सौदागर)

अथवा

अंबिका – सोच लिया । तभी तो समझने का थोड़ा मौका मिला । इतने दिन मैं यह नहीं सोच पा रही थी कि पुरुष के दो मुखौटे कैसे होते हैं ।

अंबर – मुखौटों का मतलब ?

अंबिका – पुरुष दो–दो औरतें क्यों रखता है ?

अंबर – (चौंकते हुए) दो–दो औरतें ।

अंबिका – हाँ । विशेषकर, आप जैसे गहन–गम्भीर व्यक्ति तो शुरू से ही इस प्रक्रिया के अनुगामी रहे हैं ।

(तीसरा कौन)

नाटक की भाषा चुस्त और प्रभावपूर्ण है । नाटक आधुनिक जीवन की विसंगतियों को रूपायित करने में पूर्ण सफल हुए हैं । नाटक पूर्णतः अभिनेय हैं। निर्देशक के लिए चूँकि गुंजाइश और रंग प्रयोगों की छूट देते हुए नाटक सहज ही आगे बढ़ते हैं । इस क्षेत्र में सम्भावनाएँ भी खूब हैं जिन्हें समर्थ निर्मोही व्यास पूरा कर सकते हैं । भाषा के सर्जनात्मक आयाम एवं व्यंजना के विस्तार क्षम रूप के क्षेत्र भी खुला है । विषय की गम्भीरता के कारण शायद इस ओर न जाकर विषय को सरलीकृत करने में श्री व्यास की प्रतिभा उद्घाटित हुई है। क्रिया लुप्तता, पुनरावृति, प्राश्निक भंगिमा, विराम व मौन व पूर्व दीप्ति भाषा को संप्रेषणीय और प्रेक्षणक्षम बनाते हैं । कथ्य और चरित्रानुकूल है ।

चरित्र भी हमारे इर्द–गिर्द से उठकर नाटकों में आकार लेते हैं । हमसे हमारी ही बात करते नजर आते हैं । चरित्रों का यह परकाया प्रवेश आईना दिखाने में सक्षम हैं । यह नाटककार की सफलता ही कही जाएगी । मध्यवर्गीय जीवन की अभिव्यक्ति करते पात्र चाहे वे मकान मालिक रामदयाल ओझा (शब्दों का सौदागर) हो या 'किराये की काया' की सुकन्या अथवा 'समापन किस्त' की युवती या 'अन्तःकिरण' की रेखा और राजन हमारे परिचित पात्र हैं जो टाइप्ड होते हुए भी हमारी ही मानसिकता की पर्तें खोलते दिखाई देते है।

सारतः कहना चाहूँगा कि 'शब्दों का सौदागर' अभिनय और मंचन की दृष्टि से सहज नाटक है । विचार का द्वन्द है जो हमारे आस–पास उगते परिवेश में बदलती–बढ़ती ह्रासोन्मुखी मूल्य दृष्टि से जन्मा है । यही दृष्टि रचाव का बीज है । निर्मोही व्यास का रंग अनुभव कथा के विस्तार मे फैला हुआ है तथा शिल्प की सहजता संजोने मे लगा है । जीवन में व्यापती सौदागरी से सावधान करती, स्वच्छन्दता के उद्रेक और रिश्तों के व्यावसायीकरण से सचेत करती कृति अपनी नाटकीय स्वाभाविकता के साथ प्रेक्षक रंजनक्षम है तथा पाठकों व दर्शकों को दाय आएगी ऐसा मेरा विश्वास है ।

व्यास जी को रंगमंच के सजग और सतत पथिक बने रहने की मंगल कामना के साथ बधाई ।

डा.उमाकांत

अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
राजकीय डूंगर महाविद्यालय,
बीकानेर (राज.)

1. शब्दों का सौदागर

पात्र परिचय –

	पात्र		परिचय
1.	बाबू रामदयाल ओझा	–	मकान मालिक
2.	रंजना	–	ओझा जी की पत्नी
3.	रोहित	–	ओझा जी का पुत्र
4.	भोमाराम एवं		मकान को किराये पर लेने के इच्छुक
5.	उसके पिताजी		
6.	मालती		
7.	राजेश		
8.	घसीटीलाल		
9.	चौ.गंगाराम		
10.	सन्यासी		
11.	चेला		
12.	युवक		
13.	युवती		
14.	केसरी		
15.	सविता (साथ में एक नन्हा बच्चा)		

(दिन का समय । बाबू रामदयाल ओझा का ड्राइंग रुम । ओझाजी सोफे पर बैठे अखबार देख रहे होते हैं कि एकाएक पत्नी रंजना को आवाज देते हैं।)

ओझाजी – रजना !

रंजना – (अन्दर से) आई जी।

ओझाजी – देखो, अखबार मे आज हमारा विज्ञापन आ गया।

रंजना – (प्रवेश करती हुई) 'किरायेदार चाहिए' वाला !

ओझाजी – हा। अब देखना 'किरायेदारो की यहा कतार लग जायेगी । विज्ञापन के लिए एक दफे पैसे तो जरूर खर्च करने पडे लेकिन अब किरायेदार की प्रतीक्षा तो नही करनी पडेगी।

रंजना – मै तो कभी से कहती रही हू कि विज्ञापन दिये बिना काम नहीं चलेगा। दो महीने हो गये मकान खाली पडे हुए को । कोई मनचाहा किरायेदार आज तक नहीं मिला।

ओझाजी – दो–चार आये भी, मगर उनसे पटरी नही बैठी।

रंजना – आप जो कह रहे हो, उसका मतलब मै कमझ रही हूँ। मगर मै यहा ऐसे परिवार को कभी नहीं आने दूगी , जो मास–मछली खाता हो, शराब पीता हो। आखिर हम ब्राह्मण है । अपने यहाँ मासाहारी को कैसे रहने दे?

ओझाजी – तो कौन कहता है? तुम इस घर की मालकिन हो । तुम जिसे चाहोगी , वहीं इस धर मे किरायेदार बनकर रहेगा । बस, अब तो राजी। (इसी समय बाहर से कालबैल बजती है)

रंजना – (उठती हुई) लगता है, कोई किराये के लिए आया है। (कहकर बाहर का दरवाजा खोलती है)

राजेश – (अन्दर प्रवेश करता हुआ) नमस्ते जी ,

ओझाजी – नमस्ते। (कुर्सी की ओर संकेत करते हुए) बैठिए ।

राजेश – (बैठता हुआ) मै यहा प्रोपर्टी डीलर हू जी । आज अखबार मे विज्ञापन पढा कि आपके मकान का ऊपर वाला हिस्सा किराये के लिए खाली है, सो चला आया जी।

ओझाजी – तो क्या आपको खुद के लिए मकान चाहिए ?

राजेश – नही जी । मै तो दूसरों को मकान किराये दिलवाने में मदद करता हूं जी।

रंजना - मतलब .?

राजेश - आप चाहें तो आपका मकान किसी किरायेदार को दिलवा सकता हू जी ।

रंजना - कैसे?

राजेश - कैसे क्या जी । मेरे पास किराये पर मकान चाहने वालों की एक बहुत लबी लिस्ट है जी ।

ओझाजी - आपका शुभ नाम ।

राजेश - मुझे राजेश कहते है जी ।

ओझाजी - तो आप ही राजेश प्रोपर्टी डीलर के मालिक है ?

राजेश - हा जी ।

ओझाजी - सुना है , आपके तो खुद के भी बहुत से मकान है।

राजेश - आपने ठीक सुना जी । लेकिन उनका किराया दो हजार से कम नहीं है जी।

ओझाजी - दो हजार किराया ही हमारे मकान का है।

राजेश - दो हजार रूपये का किराया आपके ऊपर वाले इस छोटे से फ्लेट का कौन देगा जी?

रंजना - छोटा क्यो है? पच्चींस – बाई – पचास फीट का पूरा फ्लेट है। दो बैडरूम के साथ अटैच्ड बाथरूम भी है।

राजेश - इससे क्या होता है जी? सैपरेट तो नहीं है न ! फिर यहां की लोकेलिटी भी तो अच्छी नही है जी ।

ओझाजी - यह आपको किसने कह दिया कि यहा की लोकेलिटी अच्छी नहीं है जी?

राजेश - कहता कौन? मै स्वय जानता हू जी ।

रजना - तो आप फिर बाहर का रास्ता देखिऐ जी ।

राजेश - वो तो मै पहले से ही देख रहा हू जी ।
(उठता हुआ) अच्छा जी ।

ओझाजी - बहुत अच्छा जी ।

(राजेश का प्रस्थान)

रंजना - मरा , यह कहां से आ गया?

ओझाजी – इसे अपनी रोटी सेकनी थी । लेकिन यहा आया तो चूल्हे पर तवा चढा हुआ ही नजर नहीं आया ।

रोहित – (अन्दर आता हुआ) पापा , मधु की मैडम मिस मालती आई है। उसे मकान चाहिए । अपने ऊपर वाला फ्लेट उसे ही दे देते है।

रंजना – कहा है मैडम ?

रोहित – नुक्कड वाली नीलिमा आंटी से बातें करने बीच में ठहर गई । बस , आने वाली है।

ओझाजी – उसे इतने बड़े फ्लेट की क्या जरूरत है ? फिर , वह अकेली है , क्या इतना किराया दे सकेगी ?

रोहित – ओह पापा ! अपने को तो अच्छा किरायेदार चाहिए । उस अकेली के लिए किराया कुछ कम कर देंगे ।

ओझाजी – नहीं बेटे । किराया किसी मकान का कभी कम नहीं किया जाता , बल्कि हमेशा बढ़ाया ही जाता है। मकान की प्रतिष्ठा बनाये रखने के लिए यह बहुत जरूरी है।

रोहित – हो सकता है यह वांछित किराया भी दे दें ! मगर पापा , मकान हमें उसी को देना है। वह बहुत अच्छी है। दो वर्ष पहले मेरे साथ ही कॉलेज में पढ़ती थी । मै उससे भली भाति परिचित हू। अभी बुला कर लाता हूं उसे। (कहकर फुरती से बाहर निकल जाता है)

रंजना – ना – ना । मैं उस कुवारी मास्टरनी को तो फ्लेट हरगिज नहीं दूगी । और न ही , किसी कुवारे बाबू को ।

ओझाजी – सीधी सी बात है। हम फैमिली वाले को ही फ्लेट देंगे और किसी को नहीं । क्यों ठीक है न ?

रंजना – बिल्कुल सही बात है।

(बाहर से कोई आवाज देता है–बाबू रामदयालजी ओझा का मकान यहीं है ?)

ओझाजी – (ऊची आवाज मे) हा जी , यही है। अन्दर आ जाइये।

रंजना – आप जो कह रहे थे , सही है। आने वालों की अब कतार लग जायेगी।

ओझाजी – वो तो लगनी है।

रंजना – लेकिन कोई अच्छा हो , तब न !

ओझाजी – देखते है , लक्की कौन निकलता है?

रंजना – पर , लक तो हमारे काम आयेंगे ।

ओझाजी – कान चाहे इधर से पकडो , चाहे उधर से । बात तो एक ही है।

(इसी समय भोमाराम और उसके पिताजी , जोकि दमे के मरीज हैं, खासते हुए अन्दर आते हैं)

भोमाराम – नमस्ते जी ।

ओझाजी – नमस्ते ।

भोमाराम – मेरा नाम भोमाराम है। मै यहा वन विभाग में काम करता हू । यह मेरे पिताजी है । फिलहाल बीमार है। आपका मकान किराये के लिए खाली है और हमे जरूरत है मकान की । आप यदि दे सकें तो हमारा अहोभाग्य होगा ।

ओझाजी – वन विभाग मे आप किस पोस्ट पर है ?-

भोमाराम – जी , वहा स्टोर कीपर हू ।

ओझाजी – अभी आप कहां रहते है ?

भोमाराम – अग्रवाल क्वार्टर्स में । इनको दमे का रोग है। इलाज चल रहा है। लेकिन अग्रवाल क्वार्टर्स के दूसरे लोगो को यह पसन्द नहीं कि यह हरदम जोर–जोर से खासते रहे ।

पिताजी – (खांसते हुए) भला , मै कोई जान बूझकर तो खासने से रहा । आदमी का शरीर है। कोई भी रोग लग सकता है। आज मुझे दमा है तो कल किसी और को भी हो सकता है।

भोमाराम – आप धीरे बोलिये ।

ओझाजी – इनके खासने पर भला उन्हें क्यों ऐतराज होने लगा?

भोमाराम – इसलिए कि कभी–कभी इनकी खासी कारखाने की चिमनी की तरह बजती कई देर तक बन्द ही नहीं होती । इससे आस पास के क्वार्टर वालो को डिस्टर्ब होता है।

पिताजी – भला इसमे मेरा क्या दोष ? खासने से मुझे कोई खुशी थोडे ही होती है।

भोमाराम – लेकिन वे दूसरे के दर्द को क्या जाने?

ओझाजी – आपके सिवाय इनकी देखभाल करने वाला और कोई नहीं है ?

भोमाराम – जी , मेरी पत्नी है। वह अभी मायके गई हुई है।

रजना – तो आप इनका इलाज किसी बडे हॉस्पिटल मे क्यों नहीं कराते ?

भोमाराम – इलाज तो बडे हॉस्पिटल का ही चल रहा है। लेकिन अभी विशेष सुधार नहीं हुआ ।

ओझाजी – देखो भैया , आप यदि थोडी देर पहले आ जाते तो मकान हम आपको दे देते । क्योंकि अभी–अभी हमने एक अध्यापिका को यह मकान दे दिया जो अभी शायद बाहर ही खडी है।

(संयोग से इसी समय रोहित अपने साथ मालती मैडम को लेकर अन्दर आ जाता है।)

भोमाराम – अच्छा जी , हम चलते है। **(कहकर अपने पिताजी को साथ लिए बाहर चला जाता है।)**

मालती – नमस्ते ।

रंजना – नमस्ते ।

रोहित – मम्मा , यह है मधु की मैडम मिस मालती । बहुत ही अच्छे स्वभाव की है।

ओझाजी – इनके साथ और कौन है ?

रोहित – मतलब . . ?

रंजना – अकेली है या साथ में कोई और भी है ?

मालती – अभी तो अकेली हू।

रंजना – शादी नहीं की ?

मालती – जी नहीं ।

रोहित – शादी की अभी इतनी जल्दी भी क्या है ?

ओझाजी – यह बात नहीं है बेटे । बडे मकान मे औरत का अकेली रहना आसपास के लोगो मे कानाफुसी का विषय बन जाता है।

रोहित – वैसे , अकेली कहा है ? हम जो साथ है।

रजना – तुम नहीं समझते । (रजना से) यह बताओ बेटी , अभी कहा रह रही हो

मालती – लेडीज होस्टल मे।

रंजना – अब वहा क्यो नहीं रहना चाहती ?

मालती – वहा हरदम हुडदग मचा रहता है । साथ की महिलाएं इतना शोर करती है कि रात को सोना भी दुर्लभ हो जाता है। जबकि मुझे चाहिए शान्ति, एकान्त ।

ओझाजी – सौरी मैडम। हमारा दुर्भाग्य है कि हम यह मकान आपको नहीं दे पा रहे।

यदि आप दो मिनट ही पहले आ जाती तो हम उन्हें नहीं देते , जो अभी-अभी यहा से होकर गये है।

रंजना – उन्हें दो हजार महीने पर देना तय कर दिया ।

मालती – दो हजार !

ओझाजी – छडे आदमी तो इससे भी ज्यादा देने को तैयार है लेकिन हम इसे लड़को का होस्टल बनाना नहीं चाहते ।

रोहित – लेकिन जब मैं , अभी-अभी आपको कह गया था कि मकान हमें इन्हीं देना है तो आपने उन लोगों को दिया ही क्यों ? आपको देना ही नहीं चाहिए था ।

रंजना – मगर बेटे , जब वे पन्द्रह सौ की जगह दो हजार देने को तैयार हो गए तो भला उन्हें ना कैसे कह सकते थे ?

मालती – यह तो जायज बात है। खैर , कोई दूसरा मकान देखेंगे ।

रोहित – एक मकान पीछे वाली गली में शर्माजी के यहा भी खाली है। ठीक हमारे इस मकान के एकदम पीछे । चलो , वहां चलते है । शर्माजी को कहकर वो मकान मै तुम्हे दिलवा देता हू।

ओझाजी – यदि खाली हुआ , तब !

रोहित – क्यो , वो तो परसो तक तो खाली ही था ।

रंजना – हो सकता है , आज-कल मे भर गया हो ।

मालती – चलो , देख लेते है।

रोहित – हां । यहा नहीं, तो वहां सही ।

(दोनों का प्रस्थान)

ओझाजी – अच्छा हुआ , हमने झूठ का सहारा लेकर बात को टाल दी ।

रंजना – वरना् यहा कुछ और ही मजमा लगता ।

ओझाजी – वो तो पूत के पाव पालने मे से अभी ही बाहर आते दिखाई देने लग गये । वह उसके साथ गया फिर किसलिए है ?

रंजना – तभी तो कह रही हूं ।

ओझाजी – अब हमे इस रोहित की ओर भी पूरा ध्यान देना पडेगा ।

रंजना – देना ही पडेगा । नहीं तो , किसी दिन कोई चमत्कार हो जाना है

ओझाजी – यही तो चिन्ता है।

रंजना – पता नहीं , आगे क्या होगा ?

ओझाजी – मकान किराये पर दे तो रहे है , लेकिन ऐसी मुसीबतो से भी बचना है।

रंजना – न जाने , कैसे–कैसे लोगो से पाला पडेगा ?

(तभी बाहर से एक और आवाज आती है –'
पंडितजी घर में हैं ?')

ओझाजी – (ऊंची आवाज में) हा , जी । अन्दर आ जाइये । (स्वगत) पता नहीं , यह पडितजी कहने वाला फिर कौन आ गया ?

रंजना – और कौन होगा ? कोई किराये के लिए ही आया होगा ?

ओझाजी – लगता तो ऐसा ही है।

धसीटीलाल – (अन्दर प्रवेश करता हुआ) नमस्कार पडितजी ।

ओझाजी – नमस्कार । (गौर से देखते हुए) बैठिए।

धसीटीलाल – पडितो के यहा तख्त पर बैठना हमे शोभा नहीं देता । (कहता हुआ नीचे फर्श पर बैठ जाता है)

ओझाजी – अरे–अरे , नीचे कहा बैठ गये ? यहा कुर्सी पर बैठिये ।

धसीटीलाल – ना–ना मै यही ठीक हू। मेरे लडके ने बताया , आपके यहा कोई मकान खाली है ?

ओझाजी – हा , खाली तो है , पर किराया बहुत है ।

धसीटीलाल – किराया तो जो भी होगा , सरकार देगी । मेरा लडका यहा असिस्टेंट इजीनियर है ।

ओझाजी – किस डिपार्टमेंट में ?

धसीटीलाल – पी0 डब्ल्यू0 डी0 मे । दो महीने हुए यहा ट्रासफर होकर आया है। लेकिन अभी तक सरकारी क्वार्टर अलॉट नहीं हुआ ।

ओझाजी – तो अभी कहां रह रहे हो ?

धसीटीलाल – डाक – बगले में ।

ओझाजी – तिनख्वाह कितनी मिलती है ?

धसीटीलाल – नौ हजार पाच सौ । इतने ही पैसे ठेकेदार लोग दे जाते है उसे । आपकी कृपा से अब राम राजी है।

रंजना – जाति क्या है आपकी ?

ओझाजी - (बीच ही में टोकते हुए) अरी भाग्यवान , किसी से ,उसकी जाति नह
पूछी जाती । तुम समझती तो हो नहीं और बीच मे बोल जाती हो ।

धसीटीलाल - कोई बात नहीं । जाति तो जो है , वही रहेगी ।

ओझाजी - इन्सान , इन्सान सब एक है । जैसे हम है , वैसे ही सब है ।

धसीटीलाल - यह तो साहब आपका बडप्पन है कि आपने हमे कुछ समझा तो सही

ओझाजी - क्या नाम है आपका !

घसीटीलाल - घसीटीलाल ।

ओझाजी - देखो धसीटीलालजी , अभी थोडी देर पहले एक बैंक मैनेजर से फोन प
बात हुई थी और हमने उनको यह मकान देने का वायदा कर दिया
कल सुबह आठ बजे तक वह एडवान्स भी दे जाएंगे। यदि नौ बजे तक
वह नहीं आये तो फिर आप आजाइये । मकान हम आपको दे देंगे ।

धसीटीलाल - ठीक है साहब । मै सुबह नौ बजे फिर हाजिर होता हू ।

ओझाजी - क्यो नहीं ? यह तो भाग्य की बात है। वह नहीं आये तो मकान आपको
मिल गया समझो ।

धसीटीलाल - अच्छा जी , नमस्कार ।

ओझाजी - नमस्कार ।

(धसीटीलाल बाहर जाता है कि रंजना दौडकर अन्दर से गीला पंछोता लाकर फर्श साफ करती है , जहा धसीटीलाल बैठा था ।)

ओझाजी - यह तुम क्या कर रही हो ?

रजना - जो आप देख रहे हो ?

ओझाजी - आज के युग मे इतनी छुआछूत रखनी कोई अच्छी बात नहीं है ।

रंजना - दूसरो के लिए नहीं होगी , मै चेहरा देखते ही समझ गई . . . ।

ओझाजी - बस-बस , खुलासा करने की जरूरत नहीं है ।

(इसी समय फोन की घंटी बजती है। रंजना चोगा उठाकर ओझाजी को पकडाती है और स्वंय पंछोता रखने वापस अन्दर चली जाती है।)

ओझाजी - (फोन पर) हेलो कौन .. सजय सक्सेना . . . . हा -
हा बोलो . कैसे याद किया .. हा -हा . .
वो विज्ञापन मैने ही दिया है. . . . किसे . . . . बलवन्तसिंह को

कौन है ये जिला रसद अधिकारी के पी ए (इस बीच रजना अन्दर से आकर हाथ के इशारे से ' ना – ना ' कहने को कहती है) हा – हा लेकिन भैया , मकान तो हमारा आज सुबह ही चढ गया क्या करें सुबह ही सुबह एक सज्जन आये और दो हजार एडवान्स दे गये . हा – हा यह तो ठीक है लेकिन सॉरी माई ब्रदर अच्छा . ओ के । (कहते हुए फोन रख देते है)

रंजना – मुझे सरदारो से तो वैसे ही डर लगता है। नाम सुनते ही मै समझ गई कि किसी सरदार जी के लिए बात हो रही है। इसीलिए भागी आई ।

ओझाजी – सरदार जी की बात नहीं है। यह कोई जरुरी नहीं कि हर सरदार आतकवादी हो । नहीं–नहीं ऐसा हमें कभी सोचना ही नहीं चाहिए । एक – दो के कारण सारे सिख समुदाय को शक की निगाहो से देखना ओछी मानसिकता है।

रजना – तो फिर आपने उसके लिए मना क्यो किया?

ओझाजी – इसलिए कि सक्सेना जिस बलवन्तसिह की बात कर रहा था, वो आदमी ठीक नहीं है। मैं उसे जानता हू। उस पर कई घोटालों के आरोप लगे हुए है।

रंजना – भगवान बचाये ऐसे लोगो से । कल को पुलिस घर की तलाशी लेने यहा आ जाये तो !

ओझाजी – तभी तो ।

रंजना – क्योंकि ऐसे आदमियो के यहा छापा तो एक न एक दिन पडना ही है।

ओझाजी – यही सोचकर तो मैने मना किया ।

रंजना – चलो अच्छा हुआ । बेमतलब , गवाह के कटघरे मे खडे होने से बच गये।

ओझाजी – वैसे भी , मुझे तो तुम्हारी बात का बराबर ख्याल रखना है । जानता हू , तुम किसी सरदार को , दलित को और मुसलमान को जब मकान देने को राजी ही नहीं हो तो मै उनसे माथा लगाऊ ही क्यो ?

रंजना – किराये पर मकान उठाना भी एक बडी भारी मुसीबत है।

ओझाजी – मुसीबत से अधिक तो रिस्क है। पता नहीं , कौन कब बदल जाये? आज जिसे सज्जन समझकर किराये पर देवे, कल वही दुर्जन बनकर मकान का मालिक बन बैठे । फिर वर्षो तक कोर्ट – कचहरी के चक्कर काटते रहो।

रंजना – तब क्या किया जाय? मेरी समझ मे तो ऐसी मुसीबत पालनी ही नहीं चाहिए कि आगे चलकर फिर हमारे लिए कोई नासूर न बन जाये ।

ओझाजी - लेकिन मकान खाली रखना भी तो खलता है। रोहित और मधु की शादी करनी है। पैसे तो चाहिए न ।

(इसी समय बाहर से खादी टोपी पहने चौधरी गंगारामजी आ जाते हैं।)

चौधरी जै माताजी री सा ।

ओझाजी - जय मताजी की ।

चौधरी - सुण्यो है , आपरो मकान खाली है ?

ओझाजी - हा जी । आपको मैंने पहचाना नहीं ।

चौधरी म्हनै आप नीं जाणो ?

ओझाजी नहीं तो ।

चौधरी - तो म्हारे नेताजी नै तो जाणो हो?

ओझाजी - कौन नेताजी?

चौधरी - भूरजी भा नै।

ओझाजी - वही , जो प्रदेश मे सहकारी विभाग के राज्यमत्री है!

चौधरी - हा - हा , वैहीज । वै म्हारै साळैजी रा साळा है। म्है अताळ तई बारै अठै हीज रैवतो ।

ओझाजी - तो अब क्या बात हो गई कि आपको मकान किराये पर लेने की नौबत आ पड़ी ।

चौधरी - अजी , काई बतावा । नेताजी रै सासरै वाळा अबकलै सगळा ही बठै आ धमक्या । इता जणा रै बीच में म्हारो रैवणो ठीक कोनी । उणा सू अळगो रैवण मे ही समझदारी है। क्यू सा , कूड़ तो कोनी ?

ओझाजी - आपका कहना बिल्कुल सही है। अच्छा यह बताइये , आप काम क्या करते है?

चौधरी - नैताजी री धाक जमावण री जुगाड करणी, ओहीज म्हारो काम है।

ओझाजी - मै समझा नहीं ।

चौधरी - अजी , लातां रा भूत , बाता सू नीं मानै तो काई करणो , ओ तो आप जाणो हीज हो । जिको काम दूजा नीं कर सकै वो म्है चुटकी में कर दिखावू।

ओझाजी - फिर तो नेताजी के लिए आप बहुत काम के आदमी हैं।

चौधरी - काम रो आदमी नीं होवतो तो म्हनै राखता ही क्यू । आप भी कदे मौको देयर देखो कै म्है कैडो'क हू?

ओझाजी - मेरे ऐसे भाग्य कहा ? आप यदि एक घंटे पहले आ जाते , तब कोई बात बनती ।

चौधरी - तो अबै कुणसी देर होयगी?

ओझाजी - देर क्या , अब तो बात ही खत्म हो गई । मकान हमने एक अध्यापिका को किराये पर दे दिया ।

रजना - उससे एक महिने का एडवान्स भी ले लिया . .।

ओझाजी - वरना यह मकान हम आप ही को देते ।

रजना - अब तो हम लाचार है।

चौधरी - अजी , अबै कुणसा मुल्ला मरग्या रोजा घटग्या । आप म्हनै वीं मासटरणी रो नाव बतावो । वीं नै जरासी 'क आख दिखाई नीं 'कै छेरा कर्‌या नीं। घडी'क नै आपरो एडवास अठै सू पूठी ले जावती निजर आवैली ।

ओझाजी - यह तो हमे आप पर भरोसा है। मगर करे क्या? वो अध्यापिका इनकी खास सहेली है।

चौधरी - जणै तो भाग उगडग्या । सहेली री साख पैला । खैर , म्हारे लायक कोई काम हुवै तो कैय दीज्यो। कीं नै कोई नोकरी दिरावणी हुवै , कोई नै ठेको लेवणो हुवै या कोई चीज रो परमिट चइजै तो म्हनै बेझिझक होयर बोल दीज्यो। आपरो काम बस , हुयो समझया ।

ओझाजी - क्यों नहीं? जरूरत पडने पर आपके पास नहीं आयेंगे तो और कहा जायेंगे?

चौधरी - आछी बात है। अबै म्हैं चालूं । जै माताजी री ।

ओझाजी - जय माताजी की ।

(चौधरी गंगाराम का प्रस्थान)

रंजना - ऐसे खुंखार आदमी को तो देखते ही डर लगता है।

ओझाजी - तभी तो झूठ का सहारा लेना पडा ।

रोहित - (अन्दर आता हुआ) यह तो पापा , मै उसी समय समझ गया जब आपने मधु की मैडम को टरकाने की चेष्टा की ।

रंजना - अरे तो क्या उस कुआरी मैडम को घर मे रखकर आये दिन लफगो को न्योता देते ! ऊपर से सीधी दिखने वाली अन्दर से कैसी हो , क्या पता?

रोहित - वाह मम्मा ! आप भी खूब है। अच्छी भली महिला पर आप भी अगुली उठाने लगीं ! और वो भी , बिना सोचे - समझे !

रजना – महिलाओ के बारे मे तू क्या जाने । मै तो चेहरा देखते ही जान जाती हू कि कौन कैसी है?

रोहित – ऐसी बात है तो जरा यह बताइये , यह किस खानदान से ताल्लुक रखती है?

रंजना – होगी किसी मास्टर की बेटी ।

रोहित – मास्टर नहीं , एक प्रिंसीपल की बेटी है जो जोधपुर मे रहते है ।

रंजना – मास्टर हो या प्रिंसीपल, है तो एक ही जमात के ।

ओझाजी – (बात को दूसरी ओर मोड देते हुए) खैर , तू तो यह बता , शर्माजी के यहा उसे मकान दिलवाया कि नहीं ?

रोहित – नहीं । शर्माजी अभी धर पर नहीं थे । शाम को पता लगायेगे ।

रंजना – मेरी एक बात समझ मे नहीं आई । मधु ने जब यह नहीं कहा कि उसकी मैडम को मकान देना है तो तुझे उसकी सिफारिश करने की क्या सूझी?

रोहित – मै उसे जानता हूं ,इसलिए । विज्ञापन देखते ही उसने मुझसे पूछा , मैने बता दिया ।

रंजना – क्या बताया?

रोहित – यही कि मकान अपना ही है।

रंजना – बस !

रोहित – और क्या ? जान – पहचान है , इसलिए यहा फौरन ले आया ।

रंजना – कहीं यह जान – पहचान कुछ आगे बढी हुई तो नहीं है?

रोहित – (झुंझलाकर) हा , यही समझ लो ।

ओझाजी – अरे , कुछ तो शर्म कर ।

रोहित – इसमे शर्म की क्या बात है पापा ! मै कोई बात छिपाने मे विश्वास नहीं करता । हकीकत यही है कि मालती मुझे बेहद पसन्द है और वह भी मुझे बहुत चाहती है।

ओझाजी – लेकिन तुझे अभी यह नहीं मालूम कि हकीकत उतनी खूबसूरत कभी नहीं होती , जितनी दिखाई देती है।

रोहित – यह मत आपका हो सकता है, हर किसी का नहीं ।

ओझाजी – इसका मतलब है .. .. .. ।

रंजना – . ..... इसके यह चित्त चढ गई ।

ओझाजी - फिर तो उसे मकान किराये पर देने की क्या जरूरत है ! कोई ऐसी व्यवस्था करे कि उसे डोली मे बिठाकर हमेशा के लिए यहीं ले आवे ।

रोहित - शायद उस दिन का अब ज्यादा इन्तजार न करना पडे ।

रंजना - फिर मधु का नाम बीच में क्यों लाता है कि वो उसकी मैडम है ? साफ ही क्यों नहीं कह देता कि हमारी होने वाली बहू है।

रोहित - यह अंदाज तो आपको स्वय ही लगा लेना चाहिए था ।

ओझाजी - बस - बस रहने दे । अब तू अपने ऑफिस जाने की तैयारी कर ।

रोहित - ऑफिस तो जाना ही है। (कहता हुआ अन्दर चला जाता है)

(अचानक बाहर से एक सन्यासी महोदय अपने चेले के साथ प्रवेश करते है)

सन्यासी - जय शकर की ।

ओझाजी - जय शकर की ।

सन्यासी - हम तपोवन आश्रम के सन्यासी है । यह है हमारा चेला झमेलानन्द ।

ओझाजी - कहिये, कैसे पधारना हुआ?

सन्यासी - जैसे ही हमने सुना कि आपके यहा किराये के लिए मकान खाली है कि हम आश्रम से सीधे यहा चले आये ।

ओझाजी - यह तो हमारे बडे भाग्य है कि इस कुटिया में किसी साधुसत के पग पडे । मगर आप तो सन्यासी है। आपको मकान की क्या जरूरत आ पडी ?

सन्यासी - अरे भई , हमें नहीं ,हमारे इस चेले को चाहिए ।

ओझाजी - क्यों ,यह तो आपके साथ ही रहता होगा ?

सन्यासी - कभी रहता था , अब नहीं ।

ओझाजी - तो अब यह क्या करता है?

सन्यासी - करता तो हमारी सेवा ही है लेकिन . ।

ओझाजी - लेकिन क्या ?

सन्यासी - अब यह एक महिला सन्यासिनी के यहां रहता है ।

ओझाजी - महिला सन्यासिनी के यहा ! मै समझा नहीं ।

सन्यासी - अजी समझदारो के लिए , यह बात समझने की नहीं है । वैसे , हम भी अब तक यह समझ नहीं पाये कि वो सन्यासिनी है या और कोई ।

चेला - देखो बाबा , आपकी यह बात अच्छी नहीं है । मैने जब आपको बता दिया कि मै हरिद्वार से स्वामी हरिहरानन्दजी के कहने पर उनके आश्रम की सन्यासि रंजना - लेकिन बाबाजी , यहां आने में तो आपने बहुत देर कर दी ।

सन्यासी - कैसे?

रंजना - यह मकान तो आज सुबह ही हमने किराये पर उठा दिया ।

ओझाजी - फिर , सामने वाले से हमने एडवान्स भी ले लिये ।

सन्यासी - तो यह बात आपको पहले कहनी चाहिए थी !

ओझाजी - लेकिन आप हमें कुछ कहने का मौका देते , तब न !

रंजना - आप तो आते ही अपने चेले से उलझते ही हुए ।

सन्यासी - चेला जब चालू होने लगता है तो ऐसी नौबत अपने आप आ जाती है। (चेले से) देख लिया ! हमसे जो उलझता है , उसे यह खामियाजा भुगतना पडता है । अब अपनी सुहासिनी के लिए कोई और दडवा देखो।

रंजना - महिला सन्यासिनियो के लिए तो अलग से भी आश्रम बने हुए है।

सन्यासी - वो आश्रम अब सुरक्षित नहीं है।

रंजना - लेकिन आपके इस चेले के साथ उस सन्यासिनी सुहासिनी का अकेले रहना तो वैसे भी उचित नहीं है।

सन्यासी - अरी बहना , आजकल यह सब चलता है।

चेला - अब उठिये भी । कोई और जगह देखें ।

सन्यासी - चलो , हम तो तुम्हारे पीछे है। हरिओम् - हरिओम् । (कहते - कहते उठकर चेले के पीछे बाहर निकल जाते हैं)

ओझाजी - (व्यंग्यात्मक स्वर में) हरिओम् - हरिओम् !

रंजना - कैसे - कैसे सन्यासी है?

ओझाजी - पता नहीं , ऐसे - ऐसे लोगो से , अभी और कितना माथा खपाना पडेगा?

रंजना - सचमुच , भले लोगो का तो अब जमाना ही नहीं रहा ।

ओझाजी - भले लोग अब है कहा ?

रंजना - कैसा कलयुग आया है। सन्यासी भी अब यह कहने लग गये कि आजकल सब कुछ चलता है।

(इसी समय बाहर से एक युवक अपनी महिला मित्र के साथ आता है) ...

युवक – नमस्ते अंकल ।

ओझाजी – नमस्ते ।

युवती – नमस्ते आंटी ।

रंजना – नमस्ते ।

युवक – मेरा नाम चन्द्रचूड़ है और यहां आयकर विभाग में बाबू हूं । यह है मेरी मामी की सगी भानजी चंद्रिका । यहां कॉलेज में अंग्रेजी मे एम ए. कर रही है ।

युवती – हमे मकान की सख्त जरूरत है। वैसे, अभी मैं होस्टल मे रह रही हूं, लेकिन वहा मुझे गाइड करने वाला कोई नहीं है। इन्होने भी एक गन्दी बस्ती मे एक छोटा सा कमरा ले रखा है, लेकिन वो किसी काम का नहीं है।

युवक – यह मेरे साथ रहेगी तो कम से कम खाने की दिक्कत तो नहीं उठानी पड़ेगी और इसे मैं गाइड भी करता रहूंगा ।

रंजना – लेकिन आप दोनों अकेले एक घर में साथ कैसे रह सकेंगे ?

युवती – क्यों नहीं रह सकेंगे ? मकान मे क्या एक ही कमरा है ?

रंजना – नहीं कमरे तो मकान मे दो – तीन है , मगर घर तो एक ही है।

युवती – तो इससे क्या हुआ ?

युवक – हम दोनों अपने अलग – अलग कमरे मे रहेंगे ।

रोहित – (अन्दर से तैयार होकर आता हुआ) क्या बात है?

ओझाजी – ये दोनों मकान देखने आये है ।

रोहित – तो फिर !

रंजना – यह चन्द्रचूड़ है और यह चंद्रिका । इसकी मामी की सगी भानजी । यहा ये दोनो साथ रहना चाहते है ।

रोहित – तो क्या हर्ज है ? अलग – अलग कमरे है । मजे से रहो न !

युवक – यही बात मै अभी इनसे कह रहा था । अलग – अलग कमरे है तो कोई दिक्कत नहीं है । इसके साथ होने से मुझे खाने – पीने की सुविधा हो जायेगी ।

रोहित – बाइ – द – वे , आप करते क्या है ?

ओझाजी – (बीच ही में) यह यहा इन्कमटैक्स मे बाबू है और यह इगलिश में एम ए कर रही है।

रोहित – वैरी गुड । फिर तो पापा , मकान इन्हीं को देना चाहिए । क्यों मम्मा

रजना – तुम्हे ऑफिस की देर हो रही है , तुम जाओ । यह हम देखते रहेंगे।

रोहित – (जाता हुआ) अच्छा पापा , बाइ – बाइ ।

ओझाजी – बाइ – बाइ ।

(रोहित का प्रस्थान)

रंजना – देखो भैया , तुम लोगो के साथ यदि कोई बुजुर्ग रहने को आ जावे , तब तो हम तुम्हे यह मकान दे सकते है ,वरना हम जने – जने के ताने सुनने को तैयार नहीं है ।

युवती – ताने किस बात के ?

रंजना – यही कि जवान लडका – लडकी एक ही घर में कैसे साथ रहते है जबकि जमाना तो आज सगे भाई – बहिन का भी एक साथ रहने का नहीं है।

युवती – आप भी आंटी, इन बेसिरपैर की बातों पर ध्यान देने लग गई ?

रंजना – देना पडता है। कोई एक कहे तो इस कान से सुने , उस कान से निकाल दे । लेकिन जब सभी की अगुलिया एक साथ उठने लगें , तब क्या करे? आखिर रहना तो हमे इसी समाज मे है।

ओझाजी – ढीठ होकर सुनते रहे – सुनते रहे , यह भी अच्छा नहीं । यद्यपि हम जानते है कि आप लोग खानदानी है। ऐसी – वैसी कोई हरकत करने वाले आप नहीं है। लेकिन इस दोमुही दुनिया को कौन समझाये ?

रंजना – इससे तो अच्छा है , आप कोई और मकान देख लेवे ।

युवक – खैर , जैसी आपकी इच्छा ।

युवती – लेकिन हम अब भी कहते है , हम कोई ऐर – गैर नहीं है , दोनों रिश्तेदार है । आप हमे गलत मत समझे ।

ओझाजी – गलत समझने की तो कोई बात ही नहीं है। जब आपने खुद ही बता दिया कि आप भले घर के है तो अविश्वास कैसा ?

रंजना – सवाल तो है लोगो की कानाफुसी से उठते हुए बवडर का । उसका सामना करना हमारे वश का नहीं है।

युवक – वो तो आप जाने । हमने तो जो सच्चाई है , वो आपको बता दी । कुछ छुपाकर नहीं रखा । वैसे तो हम झूठमूठ यह भी कह सकते थे कि हम पति – पत्नी है ।

युवती – लेकिन इसलिए नहीं कहा कि झूठ के पाव ज्यादा दिन नहीं टिकते ।

युवक – खैर कोई बात नहीं । (उठते हुए) अच्छा , नमस्कार ।

ओझाजी – नमस्कार ।

(युवक – युवती का प्रस्थान । ओझाजी और रंजना सिर थामकर रह जाते हैं)

रंजना – देखो , इक्कीसवीं सदी में आगे बढ़ने को दोनों कितने उतावले हो रहे है? लगता है , इन दोनो का तो अभी से ही राम निकल गया ।

ओझाजी – इनको क्यों दोष देती हो ! दोषी है हमारी शिक्षा प्रणाली , जो आज की पीढ़ी को अपनी सस्कृति से दूर रखने की सीख देती है ।

रंजना – तो ऐसी शिक्षा प्रणाली को बदला क्यों नहीं जाता ?

ओझाजी – कौन बदले ! जब बदलने वाले स्वय ही बदले हुए है ।

(इसी समय बाहर से केसरी मय परिवार एकाएक अन्दर चले आते है। परिवार मे उसकी पत्नी सविता और एक छोटा बच्चा है।)

केसरी – (ओझाजी के पैर छूते हुए) पाव लागूं चाचाजी ।

ओझाजी – (अपने पैर पीछे खिसकाते हुए) खुश रहो । कौन हो तुम लोग?

केसरी – जी , मेरा नाम केसरी है , आपकी कृपा से ।

सविता – और मै हू इनकी धर्मपत्नी सविता ।

केसरी – अरे , पहले चाचीजी के पाव तो छू ।

(सविता तत्काल रंजना के पांव छुती है)

रंजना – सौभाग्यवती हो ।

ओझाजी – कैसे आना हुआ?

केसरी – अजी , आपने बुलाया तो आ गये , आपकी कृपा से ।

ओझाजी – हमने बुलाया !

केसरी – जी। अखबार में मकान खाली होने का विज्ञापन देकर, आपकी कृपा से।

ओझाजी – ओह , तो यह कहो न , आपको मकान चाहिए किराये पर !

केसरी – जी । मकान की हमे बहुत जरूरत है , आपकी कृपा से ।

ओझाजी – क्या काम करते हो ।

केसरी – काम करता नहीं हू जी, करवाता हू । आपकी कृपा से ।

ओझाजी – मतलब?

केसरी – हमारे साडियो की दूकान है जी ।

सविता – अपनी खुद की है।

ओझाजी – ओह ।

केसरी – अच्छी चलती है , आपकी कृपा से ।

ओझाजी – दूकान कहा है?

केसरी – गोल मार्केट में घुसते ही बाएं से तीसरी दूकान अपनी ही है। तीन नोकर भी नीचे काम करते है , आपकी कृपा से।

ओझाजी – अभी कहा रहे है?

केसरी – *एक ऐसे सिर खपाऊ मालिक के मकान मे , जो किरायेदारो को तंग करने मे अपनी शान समझता है , आपकी कृपा से।*

सविता – पिछले तीन – चार महीनो से तो उसने एक ही रट लगा रखी है कि मकान खाली करो ।

केसरी – लेकिन मकान तब खाली करे , जब कोई दूसरा मकान मिले , आपकी कृपा से ।

ओझाजी – मगर हमारे मकान का तो किराया बहुत है।

केसरी – कितना है जी, आपकी कृपा से ?

ओझाजी – दो हजार रूपये महीना ।

केसरी – बस । यह तो कोई ज्यादा नहीं है जी , आपकी कृपा से ।

सविता – इनकी दूकान की आय को देखते हुए यह तो कुछ भी नहीं है। इससे ज्यादा तो , अभी जहा रह रहे है , वहीं देना पड जाता है।

रंजना – वहा , अभी क्या दे रहे है ?

सविता – तीन हजार । लेकिन उसमे बिजली – पानी का खर्च शामिल है , यह भले ही समझो ।

रंजना – लेकिन यहां तो बिजली – पानी का बिल आपको अलग से चुकाना पडेगा।

केसरी – चुका देंगे जी । इसकी आप चिन्ता न करे , आपकी कृपा से ।

ओझाजी – आपकी पत्नी भी कहीं .. ..?

केसरी – . पत्नी नहीं जी । धर्मपत्नी , आपकी कृपा से।

ओझाजी – हा – हा धर्मपत्नी । यह भी कहीं कोई काम करती है ?

केसरी – नहीं जी । घर में अपने इस मुन्ने को सभालती है । हा. खाली समय मे कभी – कभी अपना शौक पूरा करने के लिए नाटको मे अभिनय जरूर करती है।

ओझाजी – यह तो कोई बुरी बात नहीं है । आजकल इसे कोई बुरा मानता भी नहीं।

रजना – नाटकों में अभिनय करने का यह शौक कब से है?

ओझाजी – कॉलेज टाइम में लगा होगा? .

सविता – जी ।

केसरी – इनकी एक नाट्य मडली भी है. ।

सविता – जिसके माध्यम से हम रगमच को सदैव सक्रिय बनाये रखते हैं।

ओझाजी – (केसरी से) फिर तो आप भी उस मडली के सदस्य होंगे ?

केसरी – जी , आपकी कृपा से ।

सविता – ये तो हमारे लिए सब कुछ हैं । दर्शकों के दिलों मे उत्सुकता बनाये और गुदगुदी मचाये रखने के लिए नाटक में ऐसे – ऐसे शब्दों का प्रयोग करते हैं कि मत पूछिये ।

ओझाजी – यानि . ।

सविता – ... . आप एक सफल नाटककार है।

ओझाजी – तब तो इनको यदि शब्दों का सौदागर कहे तो अतिशयोक्ति न होगी ।

सविता – अजी , आपने तो मेरे मुह की बात छीन ली ।

रंजना – इसका मतलब है , आपके यहां रहने से नाटक खेलने वालों का आना–जाना तो हरदम बना रहेगा !

केसरी – नहीं–नहीं । शब्दों का सोदा हमेशा नाटक के सवादों में होता है। यहां यहा नहीं ।

रंजना – फिर तो ठीक है । छोटा सा परिवार है। घर – गृहस्थी का सामान भी अधिक नहीं होगा?

केसरी – नहीं जी । अधिक सामान रखकर हमें करना क्या है जी , आपकी कृपा से?

ओझाजी – आपका पूरा नाम क्या है ?

केसरी - केसरीकांत कलकतिया और मेरी इस धर्मपत्नी का नाम है सविता सहाय सटपटिया , आपकी कृपा से ।

ओझाजी - सटपटिया । यह फिर कौन सी जाति है ?

केसरी - जाति तो इसकी सहाय है। सटपटिया तो इसलिए लिखती है कि सटपटिया गांव की है। वहां रहने वाले सब अपने नाम के पीछे सटपटिया लगाते हैं।

सविता - जैसे सुरजीतसिंह बरनाला , प्रकाशसिंह बादल , हुल्लड मुरादाबादी , काका हाथरसी और अल्हड बीकानेरी आदि , आपकी कृपा से ।

रंजना - (सविता से) वैसे तुम भी हो तो इन्हीं की जाति की ।

सविता - जी । कलकतिया और सटपटिया . . ।

रंजना - . सब एक ही है तब तो सही है।

सविता - तो आप क्या समझ रही थी?

रंजना - यही कि कहीं अन्तर्जातीय विवाह तो नहीं किया?

केसरी - अन्तर्जातीय विवाह करना होता तो चाचाजी, मै आज से पांच साल पहले ही कर लेता , आपकी कृपा से ।

रंजना - न किया , तो अच्छा किया । मुझे तो ऐसी शादियों से सख्त नफरत है।

ओझाजी - अरे हां , एक बात तो हम पूछना भूल ही गये। आप लोग मांस - मछली या दारूवारू का सेवन तो नहीं करते?

केसरी - राम - राम ! आपने भी चाचाजी किन चीजों का नाम ले लिया ! भगवान बचाये इनसे । हमे तो इनसे इतनी गंध आती है कि मत पूछो, आपकी कृपा से ।

रंजना - जब इन चीजों से दूर रहते हो तो जुआ खेलना तो बिल्कुल ही पसन्द नहीं होगा ?

केसरी - नहीं जी , आपकी कृपा से ।

रंजना - फिर तो मकान देने में हमें कोई आपत्ति नहीं है । क्यों जी?

ओझाजी - छोटा परिवार है , अच्छा है। इन्हीं को दे देते है । देना तो है हीं । क्यों, कुछ एडवान्स साथ मे लाये है?

केसरी - हां जी । (जेब में से रुपये निकालकर हाथ में थमाते हुए) यह लीजिए चाचाजी । पूरे दो हजार हैं , आप की कृपा से ।

ओझाजी – (रूपये गिनकर जेब में रखते हुए) ठीक है। चाहें तो , अब आप , आज शाम को ही सिफ्ट कर सकते है।

केसरी – आज तो नहीं कल कर लेंगे जी । जरा , इन दो हजार की रसीद मिल जाये तो आपकी कृपा से ।

ओझाजी – क्यों नहीं । (कस्कर एक पन्ने पर रिसीप्ट लिखकर देते हुए) यह लो ।

केसरी – इस पर एक रुपये का रेवेन्यू स्टाम्प भी लगता है जी । खैर , मैं लगाकर क्रॉस कर दूगा , आपकी कृपा से ।

सविता – अच्छा चाचाजी , चलो आप लोगों की मेहरबानी से इन्हें अच्छा मकान मिल गया । (उठती हुई) धन्यवाद ।

केसरी – कल तक हम सिफ्ट कर लेंगे जी , आपकी कृपा से ।

सविता – आज ही कर लो न । कल मुझे शायद मायके जाना पडे । भतीजे का वर्थ डे है।

रंजना – मायका कहा है?

सविता – मायली में ।

केसरी – तो क्या हुआ? चली जाना । कितना तो सामान है। दूकान से दो आदमी भेज दूगा। सारा काम कर जायेंगे , आपकी कृपा से ।

सविता – तब आप जानें ।

केसरी – (उठते हुए) अच्छा जी । कल से हम आपके किरायेदार हो जायेंगे , आपकी कृपा से । (कहकर सविता और बच्चे के साथ बाहर चले जाते है)

रंजना – चलो , अच्छा हुआ । कम से कम , मकान अब खाली तो नहीं रहेगा। और , रूपये भी पाच सौ ज्यादा मिलेंगे ।

ओझाजी – मगर मुझे डर है , कहीं अपने साथ कोई धोखा तो नहीं हो गया?

रंजना – कैसे?

ओझाजी – इनकी कुछ बाते मुझे अटपटी सी लगीं ।

रंजना – आपको तो हर किसी मे कोई न कोई खोट नजर आ ही जाती है।

ओझाजी – खैर , अब आगे की आगे देखेंगे ।(कहते हुए उठकर अन्दर चले [illegible]

रंजना – (स्वगत) बजरंगबली ने मेरी प्रार्थना सुन ली। मैं तो आज [illegible] रूपये का प्रसाद चढाऊंगी । (आंखे मूंदकर [illegible]
पवन तनय संकट हरण , मगल मूरती रूप । राम[illegible]
ह्रदय बसहु सुर भूप ।

(इसी के साथ मच पर प्रकाश की किरणें क्षणिक विलुप्त होती है। फिर थोड़े से अन्तराल के बाद ही ओझाजी और रंजना वहीं आक्रोशी रूप में बैठ हुए दिखाई देते है।)

ओझाजी - मुझे तो उसी रोज शक हो गया था कि हमारे साथ कोई धोखा हुआ है।

रजना - तो आपको फिर पूरी छानबीन करनी चाहिए थी । उसकी बताई हुई दूकान पर जाकर पता लगाते तो सारी बातें सामने आ जाती ।

ओझाजी - यही तो गलती हो गई ।

रोहित - (प्रवेश करते हुए) मै उसके घर होकर आया हू। वह कहता है – मै आ रहा हू।

ओझाजी - तुम जब गये , वह क्या कर रहा था ?

रोहित - अपने सिंगल बैड पर लेटा कोई मैगजिन पढ रहा था ।

रंजना - सिंगल है , तब बैड तो सिंगल होगा ही ।

रोहित - यह तो जिस रोज उसका सामान आया मैने उसके नौकरों से पूछ लिया था कि उस के पास क्या डबल बैड नहीं है?

रंजना - तो वे क्या बोले?

रोहित - बोले – जब उन्हे डबल बैड की जरूरत पडेगी तो वो भी आ जायेगा ।

ओझाजी - देख लो , आ गई न बात सामने । मुझे पहला शक तब हुआ जब सविता ने कहा, चलो आप लोगों की मेहरबानी से इन्हे अच्छा मकान मिल गया।

रोहित - इन्हे क्यों, हमें अच्छा मकान मिल गया उसे यह कहना चाहिए था ।

रंजना - मैने तो कोई इतना ध्यान दिया न।

रोहित - तभी तो मात खा गये ।

ओझाजी - मुझे लगता है , वह आदमी एकदम फर्जी है।

रोहित - केवल शादी के मामले मे । दूकान का तो मैने पता लगा लिया वो उसी की है। मा – बाप का एक ही बेटा है। जब से उन दोनों की एक एक्सीडेंट मे डैथ हुई है , तब से वह थोडा लाइन से भटक गया था। जैसा कि उसके मुनीम ने मुझे बताया।

ओझाजी - करैक्टर का भी मुझे कुछ अच्छा नहीं लगा ।

रोहित - नहीं पापा । मुनीम के कथनानुसार तो इसमे एक ही बुरी लत है कि यह नाटक खेलता है। वो भी केवल अपनी मडली में जहा कुछेक रगकर्मी साथी इकट्ठे होते हैं और तीन – चार घंटे उन्हीं के साथ गुजर जाते है।

रंजना - शराब तो नहीं पीता ।

रोहित - नहीं । और , न ही मास - मछली खाता है।

ओझाजी - लेकिन यह बात तो बिल्कुल मानने वाली नहीं कि इसका करेक्टर बेदाग है। वरना् यह किसी को बीवी बनाकर, उसे यहा लाने की हिम्मत नहीं करता।

रोहित - अब इसका तो क्या पता? वह आयेगा तब पूछेगे । क्योकि मेरी उससे अभी इस तरह की कोई बात नहीं हुई ।

रजना - (आहट सुनकर) लगता है, आ रहा है।

केसरी - (प्रवेश करते हुए) नमस्ते चाचाजी । कैसे याद किया , आपकी कृपा से।

ओझाजी - आओ, बैठो।

केसरी - (बैठते हुए) यह लीजिए , बैठ गया , आपकी कृपा से।

रोहित - हमने आपको इसलिए बुलाया है कि हम पूछना चाहते है कि आपने हमारे साथ धोखा क्यो किया?

केसरी - धोखा ! यह आप क्या कह रहे है? अजी , धोखा मैने क्या किया , जरा बताइये । पता तो लगे । मैने आपके साथ एक भी झूठा सवाद बोला हो या शब्दो का सौदा किया हो तो आपकी जूती , मेरा सिर । बोलिये - बोलिये , आपकी कृपा से ।

रंजना - आप ने यह नहीं कहा था कि सविता आपकी पत्नी है ।

केसरी - गलत । चाचाजी ने जब उसके लिए पत्नी शब्द का उपयोग किया तो मैंने उसी समय टोक दिया था। क्यो चाचाजी, टोका था या नहीं? आपकी कृपा से।

ओझाजी - टोकना तो क्या था, यह कहा कि 'पत्नी' नहीं मेरी धर्मपत्नी कहिये।

रोहित - इससे क्या होता है ! 'पत्नी' और धर्म पत्नी मे क्या फर्क है?

केसरी - अजी , बहुत फर्क है। जैसे भाई और धर्मभाई में होता है अथवा बहन और धर्मबहन मे होता है।

रोहित - मतलब !

केसरी - जहां भाई - बहन सगे होते है , वहा धर्म के भाई - बहन कोई भी हो सकते है यानि कि कितने ही धर्म भाई - बहन बनाये जा सकते हैं । उसमें किसी को आपत्ति भी नहीं होती , आपकी कृपा से ।

रोहित - आपका यह तर्क सहज ही मे गले उतरने वाला नहीं है ।

केसरी – कौन कहता है कि गले उतारो । यह तो एक ऐसा कटु सत्य है जिस पर झूठ का आवरण कभी चढ ही नहीं सकता आपकी कृपा से ।

रोहित – इसका मतलब है कि किसी भी महिला को धर्मपत्नी बनाया जा सकता है।

केसरी – यदि धर्म का निर्वाह होता हो । धर्म कभी अनैतिक कार्यो की अनुमति नहीं देता , आपकी कृपा से ।

ओझाजी – यह केवल आपकी थोथी थ्योरी है। हमारे पडित इतने मूर्ख नहीं थे जिन्होने इस 'धर्मपत्नी' शब्द की उत्पति की ।

केसरी – मूर्ख नहीं बहुत समझदार थे । तभी तो नारी के शोषण में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही । धर्म के नाम पर उन्होने नारी को सदा ठगने की ही प्रेरणा दी , आपकी कृपा से ।

ओझाजी – आपके कहने का आखिर आशय क्या है?

केसरी – अजी चाचाजी , इतना तो आप ही सोचिये पुरुष अपनी पत्नी को तो धर्मपत्नी कह सकता है , लेकिन हमारे पडितो ने किसी महिला को यह इजाजत नहीं दी कि वह अपने पति को धर्मपति कहकर किसी से उसका परिचय कराये , आपकी कृपा से ।

रोहित – इस तर्क मे तो वाकई कुछ दम है।

ओझाजी – तर्क चाहे कुछ भी दो , लेकिन हमारी भारतीय सस्कृति मे ऐसी कोई परम्परा नहीं है ।

केसरी – चाचाजी , परम्पराए तो बनाने से बनती है , आपकी कृपा से ।

रजना – खैर , आप यह बताओ , आपके साथ , वो जो सविता आई थी , कौन थी?

केसरी – दरअसल , वो हमारे साथ नाट्य मडली में ही काम करती है। मैने उसे अपनी धर्मपत्नी का रोल अदा करने को कहा तो वो तैयार हो गई और अपने खुद के बेटे को यहा साथ ले आई , आपकी कृपा से ।

रजना – तो क्या वो शादीशुदा है?

केसरी – क्यों विवाहित औरतें क्या नाटक में काम नहीं करतीं , आपकी कृपा से?

ओझाजी – करती क्यो नहीं ! करती है लेकिन केवल रगमच पर। सार्वजनिक जीवन में ऐसी भूमिका कोई अदा नहीं करतीं ।

१८। – इसलिए कि ऐसे मौके प्राय. आते नहीं है, आपकी कृपा से ।

ओझाजी – फिर उसमें कोई झिझक भी नहीं थी । जबकि सामान्यतया . . . ।

केसरी – अजी झिझक किस बात की होती ? मन एकदम साफ था, आपकी कृपा से ।

रंजना – लेकिन आप में तो कुछ झिझक होनी चाहिए थी ?

केसरी – मै यदि उस समय झिझक दिखलाने लगता तो आप परदे के पीछे का राज तुरन्त समझ जातीं । फिर यह मकान मुझे कौन किराये पर देता, आपकी कृपा से?

ओझाजी – तो गोया , आपने मकान किराये लेने के लिए यह सारा नाटक रचा था?

केसरी – नहीं रचता तो मकान के लिए फिर से दर – दर की ठोकरें ही खाता रहता । कुआरे को आज कौन देता है मकान किराये पर? आप ही बताइये, आपकी कृपा से ।

रोहित – अनजाने में ही सही , यह तो आप ही मानते हो कि हमारे साथ धोखा हुआ है ! क्योंकि हमें यह मकान किसी परिवार वाले को ही देना था।

केसरी – धोखा नहीं , गलतफहमी हुई है। फिर , इसके लिए मै नहीं , मेरे पर थोपी गई सामाजिक विवशता उत्तरदायी है , आपकी कृपा से ।

ओझाजी – थोपी गई विवशता कैसे ?

केसरी – सामाजिक व्यवस्था हमारी कुछ ऐसी ही बन गई है जो अविवाहितों को सदा अविश्वास के घेरे में ही घेरे रखती है। इससे विवाहितों का नजरिया भी फिर उसी अनुरुप बन गया । उनका यही नजरिया अविवाहितों पर एक ऐसी अनचाही और अनकही विवशता को थोपती है , जिसे वे स्वयं अप्रिय मानते है आपकी कृपा से ।

रंजना – अच्छा , अब जो हुआ , सो हुआ । आप तो यह बताओ , अपना विवाह कब कर रहे हो ?

ओझाजी – तुम्हारा घर बसे तो, हम निश्चिंत हो ।

केसरी – ऐसा कीजिए, लडकी आप ढूंढ दें, शादी मै कर लूगा , आपकी कृपा से।

ओझाजी – मान गये भई ! इस बार हमें ऐसा कोई किरायेदार तो मिला जो अपनी उलझी प्रवृत्तियों को दूसरों से सुलझाने का मादा रखता है।

रंजना – और वो है हमारे ये केसरी किरायेदार ।

ओझाजी – 'शब्दों के सौदागर'।

रोहित - चित भी इनकी, पुट भी इनकी ।

ओझाजी - क्यो भैया !

केसरी - आपकी कृपा से । *(इसी के साथ सब जनें 'स्थिर' होकर रा जाते है कि मंच अंधेरे में घिरने लगता है)*

❖❖❖❖❖❖❖

❖❖❖❖❖

❖❖❖

❖

2. तीसरा कौन

पात्र परिचय –

1.	अंबर	–	पति
2.	अंबिका	–	पत्नी
3.	भोला	–	नौकर
4.	मनसुख	–	आगन्तुक

एक

(अंबर का ड्राइंग रूम । सुबह का समय । अंबिका सोफे पर बैठी अखबार पढ़ रही है कि अन्दर से भोला हेंगर में लटकी साड़ी लिए हुए आता है ।)

भोला – बीवीजी , आज आप यही साडी पहनेगी न ।

अंबिका – हा । इसके साथ ।

भोला – . मैच करने वाले सभी कपडे ड्रेसिग टेबल के पास रख देता हू ।

अंबिका – वैरी गुड । साहब कहा है?

भोला – नहाकर बस आने ही वाले है ।

अंबिका – उनके कपडे तो . . ।

भोला – . . पहले से ही तैयार रखे हुए है ।

अंबिका – बहुत अच्छा । नाश्ते मे आज क्या बनाया है?

भोला – आलू के पराठे ।

अंबिका – साथ में दही तो है न?

भोला – जी । उसके बिना तो पराठे अच्छे ही नहीं लगते ।

अंबर – (नहाकर आते हुए) क्या बात है? तुम तैयार नहीं हुई !

अंबिका – मुझे तैयार होने में कौनसी देर लगती है?

अंबर – वाह ! कह तो ऐसे रही हो , जैसे हमेशा पाच मिनट में ही तैयार हो जाती हो !

अंबिका – पांच तो नहीं , पन्द्रह मिनट से अधिक नहीं लगते ।

अंबर – क्यों झूठ बोलती हो ! परसो तो तुमने पूरा एक घटा लगाया था । मै बाहर स्कूटर के पास खडा – खडा बोर होता रहा ।

अंबिका – उस रोज तो नई साडी पहनी थी । उसे सैट करने मे थोडा एक्स्ट्रा टाइम तो लगना ही था ।

अंबर – अरे , यह कहो कि औरत को सजने – सवरने में सवा घटा कम से कम लगता है ।

अंबिका - हां , यही समझलो । आप तो तैयार हो गये न?

अंबर - यह पूछकर तुम्हें क्या कुछ शर्मिन्दगी महसूस नहीं होती?

अंबिका - क्यों , किसी पराये से पूछ रही हूं?

अंबर - फिर ऐसी बात ही क्यों करती हो ! देख नहीं रही हो , यह भोला किस कदर तुम्हारी बात पर हंस रहा है !

अंबिका - क्यों रे ! तुम मेरी बात पर हंस क्यों रहे हो?

भोला - आपकी बात पर नहीं । आप दोनों की इस मधुर- मीठी नोंक झोंक पर मुझे अनायास ही हंसी आ गई ।

अंबिका - ओह ! मधुर - मीठी अनायास .तुमने पढाई कहां तक की है रे?

भोला - बीबीजी , जिसकी परवरिश ही गैरों के बीच हुई हो , वो कितना पढा-लिखा होगा , यह आप खुद ही सोच लीजिए । (प्रस्थान)

अंबिका - बडा अजीब लडका है । बात तो ऐसी करता है जैसे सचमुच ही काफी सुलझा हुआ हो ।

अंबर - दुनिया मे सब तरह के इंसान होते है ।

अंबिका - वैसे , कोई बुरा नहीं है।

अंबर - यह तो है। तीन साल से अपने यहां है। ऐसा - वैसा होता तो पूत के पांव पालने से बाहर निकलते हुए कभी नजर आ जाते ।

अंबिका - धीरे बोलो । वो अन्दर डाइनिंग टेबल पर नाश्ता रख रहा है।

अंबर - नाश्ते मे आज क्या - क्या बना है?

अंबिका - आओ , चलकर पहले यही देखते है । (दोनों का प्रस्थान)

दो

(वहीं स्थान । शाम का समय । भोला सोफे के पास फर्श पर बैठा कोई पुस्तक पढ़ रहा है कि कालबैल बजती है। पुस्तक सोफे के नीचे की ओर खिसकाकर भोला उठकर दरवाजा खोलता है।)

अंबर - (प्रवेश करते हुए) अंबिका नहीं आयी?

भोला - जी , अभी तक तो नहीं आई।

अंबर – किसी का कोई फोन तो नहीं आया?

भोला – नहीं । (मेज के नीचे से डाक उठाकर देते हुए) बस , यह मैग्जिन आई है और एक यह पत्र ।

अंबर – यह तो अविका के नाम है। (कहकर पत्र वापस मेज पर रखकर मैग्जिन के पन्ने पलटने लगता है)

भोला – बैठिये । मै चाय बनाकर लाता हूं।

अंबर – (सोफे पर बैठते हुए) थोडी देर ठहरो । अविका को आ जाने दो ।

भोला – हा , उनके आने का भी समय हो गया ।

अंबर – तभी तो ।

(भोला अन्दर से पानी की गिलास रखकर चला जाता है)

अंबर – (पानी पीकर आवाज देते हुए) भोला !

भोला – (अन्दर से ही) आया साहब । (प्रवेश करके) जी !

अंबर – (मैग्जिन खोलकर दिखलाते हुए) देखो , इसमें एक विज्ञापन छपा है। यहां की एक कोचिंग स्कूल बिना मिडिल पास किये किसी को भी सेकेण्डरी परीक्षा पास करवाने का जिम्मा लेती है। कहो तो तुम्हे भी वहां एडमिशन दिला दें? दोपहर को एक दो घटे हो आना ।

भोला – साहब , पढाई करने की मेरी अब कोई उम्र है?

अंबर – क्यों , अभी कौनसे तुम अधेड हो गये ? फिर , पढाई के लिए कोई उम्र नहीं देखी जाती !

भोला – लेकिन साहब , पढने की कुछ इच्छा भी तो होनी चाहिए ।

अंबर – पढने की इच्छा भला कभी किसी को हुई है ? किन्तु भविष्य बनाने के लिए सभी को पढना पडता है ।

भोला – यह तो ठीक है .. .. ।

अंबर – . ...सोच लो । अच्छे भविष्य की कामना हो तो... .. .।

भोला – .... .अच्छे भविष्य की कामना तो किसे नहीं होती? लेकिन.. ... . ।

अंबर – .. . .लेकिन क्या ?

भोला – मेरी आगे बढने की डगर अभी निश्चित नहीं है ।

अंबर – इतनी समझदारी की बातें तुमने कहां से सीख ली?

भोला – समझदार हमेशा दूसरे की कही बातों मे समझदारी ही ढूढ़ते है।

अंबर – ऐसी बात नहीं है।

भोला – तो फिर जाने दीजिए ।

(बाहर से कार का हॉर्न सुनाई पडता है)

अंबर – लगता है , अंबिका आ गई ।

(भोला आगे बढकर दरवाजा खोलता है। अंबिका का प्रवेश)

अंबर – देर कर दी ।

अंबिका – गाडी मे पेट्रोल डलवाना था । डिपो पर पहुंची तो आठ – दस कारों की लाईन लगी थीं ।

अंबर – फिर तो देर होनी ही थीं ।

भोला – चाय बना लाऊ ?

अंबिका – इसमें पूछने की क्या बात है? (अंबर से) आपने पी या नहीं?

अंबर – नहीं । सोचा , रोज की तरह तुम्हारे साथ ही पीऊंगा ।

अंबिका – मेरे भरोसे मत रहा करो । देर – सबेर हो ही जाती है। आप पी लिया करो ।

अंबर – (भोला से) तुम अब जल्दी बना लाओ ।

(भोला का प्रस्थान)

अंबिका – कोई डाक – वाक !

अंबर – (पत्र उठाकर पकड़ाते हुए) हा यह लो , एक लैटर आया है तुम्हारे नाम।

अंबिका – (पत्र लेकर) खोलकर पढा नहीं?

अंबर – नहीं तो ।

अंबिका – खैर , वैसे किसी दूसरे का पत्र पढना भी नहीं चाहिए ।

अंबर – इसीलिए तो खोला नहीं ।

अंबिका – अच्छा किया । किसी दूसरे को किसी तीसरे का पत्र पढना शोभा भी नहीं देता ।

अंबर - लेकिन यह तीसरा है कौन?

अंबिका - (थोडी हंसती हुई) है कोई । आपको शक का कोई मच्छर तो नहीं खा रहा?

अंबर - खा भी रहा हो तो तुम्हे क्या फर्क पडता है?

अंबिका - क्या ऽऽ !!

अंबर - कुछ नहीं । पहले तुम अपना यह पत्र पढो । कहा से आया है?

अंबिका - एड्रैस तो मम्मी के हाथ का लिखा हुआ है।

अंबर - तो पत्र भी उन्हीं का होगा ।

अंबिका - (खोलकर देखती हुई) हा , उन्हीं का है।

अंबर - पढो, क्या लिखा है?

अंबिका - लिखा है , प्यारी अबे , कई दिनों से तुम्हारा कोई पत्र नहीं आ रहा , क्या बात है? खुश - खबरी सुनने को कब से तरस रही हू । कुछ उम्मीद बनी हो तो तुरन्त लिखना ।

अंबर - बस - बस , आगे पढने की जरूरत नहीं है । तुम्हारी मम्मी का वही रोना है , जो अम्माजी का है। दोनों ही तीसरी पीढी का मुह देखने को लालायित रहती है ।

अंबिका - क्या करे । कोई तो हो अपना , जिसको अपनत्व बाट सके ।

अंबर - यह कहो न , उनका सोच परम्पराओं से जकडा हुआ है ।

अंबिका - यही सोच लो । लेकिन आप इस तरह बिल्कुल ही निष्ठुर कैसे होते जा रहे है ?

अंबर - अब तुम चाहे निष्ठुर कहो , चाहे और कुछ । मै किलकारियों के कीचड में नहीं धसना चाहता ।

अंबिका - केवल अपनी ही मत सोचो । कभी दूसरो की भावनाओं की भी कुछ कद्र करनी-सीखो ।

अंबर - तो क्या तुम भी , पढी - लिखी होकर , उन दोनों की ऐसी बचकानी बातों को सहलाने की कोशिश कर रही हो ?

अंबिका - आपका मतलब, वे अनपढ है?

अंबर - मगर सोच तो उनका अनपढो जैसा ही है ।

अंबिका – मुझे जरा यह बताओ , क्या कमी है उनके सोच में ? क्या उनके अरमानो में आपको हमारे किसी अहित का अहसास होता है?

अंबर – हा । इसलिए कि वे केवल अपने की हित की सोचती है । वे चाहती है कि उनके मनोरजन के लिए धुटनो के बल चलने वाला कोई खिलौना मिल जाये ।

अंबिका – तो इसमे बुरा क्या है ? सूना आगन कोई अच्छा लगता है घर में ?

अंबर – मतलब , तुमने भी बच्चे की चाह मे उलझना शुरु कर दिया ?

अंबिका – तो क्या आप यह चाहते है कि एक अधूरी औरत बनी रहूं मै ?

अंबर – अधूरी औरत !

अंबिका – और क्या ! बिना मां बने हर औरत अधूरी होती है।

अंबर – तुम भी खूब हो ! यह जानते हुए भी कि बच्चे को पालना कोई आसान काम नहीं है , तुम एक मा बनने की इच्छा पाल रही हो ?

अंबिका – इसलिए कि मातृत्व सुख से बडा औरत के लिए कोई सुख नहीं है।

अंबर – लेकिन एक सुख के पीछे ढेर सारे दु खो का दर्द सहना कहा की बुद्धिमानी है ?

अंबिका – सुख के लिए दु:ख तो सहने ही पडते है ।

अंबर – मै ऐसा नहीं समझता । जब बिना दुख सहे , सुख का आनन्द लिया जा सकता है तो फिर क्या जरूरत है यह कहने की , आ बैल मुझे मार।

अंबिका – यह केवल आपकी थोथी थ्योरी है ।

अंबर – अबिका , यह कहकर असलियत पर परदा मत डालो । जानती हो , बच्चे के आगमन पर क्या – क्या दिक्कते झेलनी पडती है ?

अंबिका – हम कोई अलबेले नहीं है। दिक्कते कौन नहीं झेलता ?

अंबर – झेलते है तो उनकी जरा दर्द – ए – दास्ता भी सुनो ।

अंबिका – सब सुन रखी है।

अंबर – तुमने कुछ नहीं सुना ।

अंबिका – बस , रहने दो ।

(भोला चाय की ट्रे लेकर आता है)

अंबर – अबिका , तुम समझती क्यों नहीं ? हम दोनों नोकरी वाले है।

अंबिका – तो क्या हुआ ? पीछे इस घर को यह भोला सूना नहीं रहने देता ।

अंबर – हम काम पर जायेंगे तो क्या यह बच्चो को सम्भाल लेगा ?

भोला – क्यो नहीं ? उनकी चिन्ता आप न करें । पहले वो खुशी की घडी आने तो दीजिए ।

अंबर – तो तुम भी आखे बिछाये बैठी हो कि घर में कोई नया मेहमान आये ?

भोला – नया मेहमान देखने को कौन उत्सुक नहीं होगा ?

अंबर – रहने दे । बच्चे की गदगी से अभी पाला पडा नहीं , इसलिए कह रही हो?

भोला – परीक्षा लेकर देख लीजिए ।

अंबर – अच्छा यह बता , बडे होने पर किसी अच्छे स्कूल मे दाखिला भी क्या तुम्हीं जाकर करा आओगी?

भोला – क्यों नहीं ! यह कौनसा मुश्किल काम है ?

अंबिका – अब बोलिये ।

अंबर – अरे इसने कह दिया और तुमने सुन लिया । जानती हो , एडमिशन की समस्या भी आज एक विकराल रूप धारण कर चुकी है ?

अंबिका – यह समस्या उनके लिए है जो परिस्थितियों को नकार कर पैसों को जेब से बाहर नहीं निकालने के हठ पर अडे रहते हैं । हमारे लिए यह कोई समस्या नहीं है ।

अंबर – मान ली तुम्हारी बात । हम दोनों अर्निंग मेम्बर है , इसलिए यह दिक्कत अधिक मुह नहीं फाडेगी । लेकिन . .. .।

अंबिका – . .. . .लेकिन क्या ?

अंबर – स्कूलों में बच्चे , जो आजकल गलत रास्ते चल पडते है , उसे क्या रोक पाओगी ?

अंबिका – आगे कहिये ।

अंबर – अगर बच्चे ने सयोग से अच्छी शिक्षा प्राप्त भी कर ली तो क्या गारंटी है कि उसे कोई अच्छी जॉब मिल जायेगी ?

भोला – इसकी गारटी तो कोई नहीं दे सकता साहब ।

अंबर – मान लो , यदि घर की जमापुजी का जुआ खेलकर उसे कहीं कोई अच्छे व्यवसाय में डाल भी दिया तो क्या आगे चलकर यह हमारे बुढापे का सहारा बनेगा , इसका कोई भरोसा है ?

अंबिका - और कुछ कहना है ?

अंबर - कहने को तो बहुत कुछ है लेकिन

भोला - , पहले चाय पीजिए ।

अंबर - (चाय का कप मुंह से लगाकर) हुह !

अंबिका - क्या बात है ? अच्छी नहीं बनी ?

अंबर - तुम पीकर देखो ।

अंबिका - (चाय का एक घूंट पीकर) ठंडी हो गई ।

अंबर - जरा गर्म करके लाओ ।

अंबिका - नहीं - नहीं । दुबारा नई बनाकर लाओ ।

भोला - अभी लाया । (ट्रे में कप रखकर वापस अन्दर चला जाता है)

अंबिका - हा , कुछ और कह रहे थे न !

अंबर - अरे , कहने को तो बहुत कुछ है। मगर सबसे बडी समस्या, जो आज केवल हमारे सामने ही नहीं , पूरे देश के सामने है और वो है दिन - प्रतिदिन आबादी के बढते हुए आंकडे । हमें इस ओर भी ध्यान देना है। यू ही आखे मूदकर नहीं बैठ जाना ।

अंबिका - बस , घर - गृहस्थी आगे नहीं बढाने के पीछे आपके केवल ये ही तर्क है या कुछ और भी हैं? और हों तो बता दीजिए ।

अंबर - देखो अंबिका , बात को हवा में उछालने की कोशिश न करो । गहराई से सोचो कुछ ।

अंबिका - सोच लिया । तभी तो समझने का थोडा मौका मिला । इतने दिन मै यह नहीं सोच पा रही थी कि पुरुष के दो -दो मुखौटे कैसे होते हैं?

अंबर - मुखौटो का मतलब ?

अंबिका - पुरुष दो - दो औरतें क्यों रखता है ?

अंबर - (चौंकते हुए) दो - दो औरते !

अंबिका - हा । विशेषकर , आप जैसे गहन - गम्भीर व्यक्ति तो शुरू से ही इस प्रक्रिया के अनुगामी रहे है।

अंबर - वो कैसे ?

अंबिका - दुनियादारी निभाने के लिए एक ऐसी विवाहित पत्नी घर में रखते है जो बच्चे पैदा करे और उन्हें पाले ।

अंबर – दूसरी !

अंबिका – दूसरी , एक ऐसी वैल एज्यूकेटेड एक्स्ट्रा पत्नी , जो केवल बैंक बैलेन्स बढाये और बच्चे पैदा करने की गलती न करे ।

अंबर – तुम्हारा मतलब है , मैंने भी लुके – छिपे इसी प्रक्रिया को अपना रखा है

अंबिका – यह आप जाने । लेकिन कमाऊ औरत से शादी करने का मतलब अ यही रह गया है।

(भोला दुबारा चाय बनाकर लाता है)

अंबर – कुछ समझा भोला ?

भोला – हा , कुछ – कुछ ।

अंबर – फिर तो कमाऊ बीवी भी इसी तरह की कोई तरकीब काम मे लेती होगी

अंबिका – इसके लिए सर्वे करना पडेगा । जहां तक पुरूषों का सवाल है , मेरे पास इसके कई उदाहरण है।

अंबर – (चाय पीते हुए) जैसे. ।

अंबिका – .... . . (चाय का कप उठाकर) दूर क्यों जायें ! कमला बहिन जी को तो सब जानते है।

भोला – वो , जो यहा सामने वाली रो में रहती है ?

अंबिका – हा , वही । किशोर बाबू की वो दूसरी पत्नी है। उनकी पहली पत्नी उनके गाव में है , जिसके पांच बच्चे है।

भोला – लेकिन कमला बहिन जी के तो एक भी बच्चा नहीं है।

अंबिका – उनके इस दुख को किशोर बाबू क्या जानें?

अंबर – ऐसा करो , तुम भी कोई साहसिक कदम उठाओ कि पुरूष का , दो पत्नियां रखने का , अहकार टूट जाये ।

अंबिका – आप कहना क्या चाहते है ?

अंबर – यदि ऐसी कोई पहल करो तो तुम्हें भी पूरी छूट है। मै कोई अडचन नहीं डालूगा ।

अंबिका – अन्तर्मन से कह रहे हो न ?

अंबर – मेरे कहे का , तुम्हे क्या विश्वास नहीं है ?

अंबिका – यह मेरे सोचने की बात है। लेकिन आप जानते हुए भी अनजान बन रहे है ,इसका अफसोस है।

अंबर - क्या ऽऽ ?

अंबिका - दो के बीच तीसरे के आगमन ने हमेशा कटुता की कसक ही पैदा की है। इसलिए अच्छी तरह सोच लो ।

अंबर - सोच लिया । तुम , मै और वो । देखता हू , आपस में कैसे नहीं पटेगी?

अंबिका - तो फिर ठीक है। आप भी अपनी ' वो ' रखने को स्वतन्त्र है और मैं भी ।

अंबर - मन में कोई हिचकिचाहट मत रखना । 'वो' जो भी होगा , उसके बच्चे के बाप के नाम का कभी कोई झंझट खडा नहीं होने दूगा । समझ लो , वो बच्चा मेरा ही कहलायेगा ।

अंबिका - बस - बस । आगे कहने की कोई आवश्यकता नहीं है।

भोला - कहीं आप दोनों का यह फैसला कोई नया गुल न खिला दे !

अंबिका - यही तो देखना है।

अंबर - तुम साक्षी रहोगे ?

भोला - किसका ?

अंबिका - मेरा , और किसका ?

अंबर - तुम्हारा कैसे ?

अंबिका - यह अब आप सोचिये । (उठती हुई) मै अब अन्दर जाकर फ्रेश होती हू।

(प्रस्थान)

भोला - और , मै अपनी रसोई देखता हू । (कप उठाकर ले जाता है)

अंबर - अब रहा मै । सिर थामकर बैठ जाता हू । (कहकर गहरे सोच में डूब जाता है)

तीन

भोला - (ड्राइंग रूम की सफाई करता हुआ स्वगत) साहब भी कैसे निराले है ? पहले तो ऑफिस जाने के बाद , बीच मे कभी घर की तरफ मुडकर भी नहीं देखते थे । अब पता नहीं , क्या बात है ? इन दिनों मे बीबीजी के प्रति प्यार कुछ ज्यादा ही उमड आया है। ऑफिस पहुचते ही फोन करना शुरू करते है जो फिर बन्द ही नहीं होता । फिर , बीच मे कभी एकाध बार यहा भी चले आते है। पूछते है (मुंह बनाते हुए) अंबिका इधर आई तो नहीं ?

(इसी समय फोन की घंटी बज उठती है) लीजिए , पहुंचे नहीं कि फोन का सिलसिला चालू हो गया । (फोन उठाकर) हे लो . . जी .जी साहब . . . यहां तो नहीं आई .. ....जी जी . आयेगी तो आपको बता दूगा . ..जी ।(कहकर फोन रखता है) अजीब है। काम करू या फोन अटैण्ड करता रहू ! यह बेमतलब की मुसीबत गले लग गई ! (कहता हुआ) सोफे पर बैठकर किसी अंग्रेजी पत्रिका के पन्ने पलटने लगता है)

(इसी समय बाहर दरवाजे पर कोई धीरे से दस्तक देता है खट्-खट्-खट् ।)

भोला - (चेहरे पर लाल गुलाल बिखेरता हुआ) जिसका इन्तजार था , आखिर वो आ ही गई । (कहकर दरवाजा खोलने जाता है)

(मनसुख का प्रवेश)

भोला - अजी ....आप !

मनसुखा - हा । मैने सोचा , तुम्हारे साहब से मिलता चलू ।

भोला - वे तो अभी ऑफिस गये हुए है।

मनसुखा - ओह ! वैसे अन्नू कहती है कि कुछ दिनों से साहब दोपहर को एक दफे घर का चक्कर जरूर लगाते है।

भोला - कहना तो उसका सही है। एक दफे आ तो जाते हैं , लेकिन उनका कोई फिक्स टाइम नहीं है।

मनसुखा - उनसे मिले बिना तो तुम लोगों की बात आगे बढ ही नहीं सकती ।

भोला - हां , यह तो है। साहब से मिलना तो आपके लिए बहुत जरूरी है।

मनसुखा - तो फिर , ऐसा करता हूं , थोडी देर के लिए मैं उधर पब्लिक पार्क में घूम आता हूं।

भोला - वो तो ठीक है , लेकिन वे कब आयें , यह कहा नहीं जा सकता!

मनसुखा - कोई बात नहीं । घंटे -- दो घंटे पार्क में बैठा इन्तजार कर लूगा । हो सके तो फोन करके पता लगा लेना कि वे यहां कब आ रहे है ?

भोला - यह आपने ठीक कहा ।

मनसुखा - अभी मैं चलता हू ।

भोला - अजी , थोडी देर तो बैठिये । मैं आपके लिए कुछ लाता हूं । (कहकर अन्दर जाता है)

मनसुखा – अरे , क्यों तकलीफ उठाते हो ?

भोला – (पानी की गिलास लेकर आता हुआ) इसमें भला तकलीफ किस बात की?

मनसुखा – (पानी पीकर) अरे भई , अपना घर हो तो कोई बात भी है।

भोला – अजी . ऐसा आप कुछ मत सोचिये । मै अभी चाय लेकर आता हू।

(प्रस्थान)

मनसुखा – तुम भी बहुत जिद्दी हो । (स्वगत) अन्नू को यह यहा कहां रखेगा ? यहां तो मेरी समझ में एक ही परिवार रह सकता है। खैर , यह जाने और वो जाने । (कुछ ही देर में भोला चाय ले आता है।)

मनसुखा – (चाय पीते – पीते) अन्नू भी कभी – कभी यहां आ जाती होगी ?

भोला – कभी – कभी । जब कॉफी पीने की इच्छा होती है।

मनसुखा – न जाने , कॉफी का उसे क्या शौक लगा है !

भोला – आजकल यह एक फैशन सा बन गया है ।

मनसुखा – बना रे बना । (उठते हुए) साहब आये तो बता देना । (प्रस्थान)

(भोला दरवाजा बन्द करता है और चाय के कप उठाकर अन्दर ले जाता है)

भोला – (वापस आता हुआ स्वगत) लंच का समय अभी दूर है। जिसे पहले यहा आना चाहिए वो तो अभी तक आई नहीं और दूसरे बीच में ही आकर टपक रहे है। लगता है , आज का दिन शुभ नहीं है। उधर साहब के आने का डर है , इधर अन्नू के पिताजी का । इनके बीच में कहीं मेरी चोरी नहीं पकडी जाय ?

(इसी समय फोन की घंटी बजती है)

भोला – (फोन उठाकर) हेलो......... .जी... ......जी......... अभी तक उनका आना नहीं हुआ....... .....अच्छा जी. ....। (फोन रखकर) पता नहीं , बीबीजी के पीछे साहब आज क्यों बावले हो रहे हैं ! दो दफे तो पूछ चुके । फिर मैं ऐसा करता हू। उसे फोन कर देता हूं कि आज वह नहीं आये ।(कहकर फोन करता है) हेलो ..... मै भोला ...... हा . ..हां .. .. ..तुम अभी तक नहीं आई ....क्या . ... .साहब यहां नहीं है ......फिर तो तुम आ भी कैसे सकती हो...........हां....हा मेरे ख्याल से अब तुम्हारा यहा आना अच्छा भी नहीं है। ....अब कल ही आना ठीक है........(कहकर फोन वापस रखता है)

भोला – (स्वगत) इस तरह उसका यहा आना अच्छा भी नहीं है । लेकिन , साहब आज ऑफिस कैसे नहीं पहुचे । फिर उन्होने फोन कहा से किया? खैर मुझे क्या ! उनकी माया वे जाने ।

(कालबैल बजती है तो दरवाजा खोलने जाता है)

अंबर – (अन्दर आते हुए) अंबिका अपने ऑफिस में तो नहीं है।

भोला – जी , इस बारे में तो क्या कहा जा सकता है?

अंबर – (सोफे पर बैठते हुए) वहा भी नहीं, यहा भी नहीं तो आखिर वह गई कहा?

भोला – . .. . । (कोई जवाब नहीं दे पाता)

अंबर – बोलते क्यों नहीं ?

भोला – जी , मै क्या बताऊं?

अंबर – तुम सोचते होगे , अभी तो मैने फोन किया था और इतनी देर मे यहां कैसे ?

भोला – ....। (निरूत्तर)

अंबर – मैने अभी पब्लिक पार्क के गेट के पास से फोन किया था ।

भोला – फिर तो आप ऑफिस तो जा ही नहीं पाये होंगे !

अंबर – कहां ? खैर , यह बताओ , बिजली का बिल भर आये ?

भोला – नहीं तो । क्यों , आज ही भरना था क्या ?

अंबर – आज का क्या मतलब ? भरना है तो बस , भरना है।

भोला – तो मै अभी भर आता हू ।

अंबर – बिल के पैसे हैं ?

भोला – हा , बीबीजी ने दे रखे हैं।

अंबर – तब फिर , आज ही भर आओ ।

भोला – जाता हू। (अन्दर से बिल और पैसे लेकर बाहर चला जाता है)

अंबर – (स्वगत) मुझे यदि यह पता होता कि यह उल्लू का पट्ठा ऐसा छुपा रुस्तम निकलेगा तो मै पहले ही सचेत हो जाता । देखने में तो ऊपर से कितना सीधा और विनय की मूर्ति सा लगता है लेकिन अन्दर से इतना हरामी कि जिस थाली में खाता है , उसी में छेद करने लगता है।

अच्छा हुआ, अभी इसे बिजली का बिल भरवाने भेज दिया । अब देखता हू . वो कैसे उससे छिप - छिपाकर मिलने आती है। (विराम) समझ तो मै उसी दिन गया , जब इस मेज के नीचे की ओर कॉफी के झूठे प्याले पड़े देखे । मैने इससे पूछा तो बात को कैसी सफाई से टाल गया। बोला , कोई दोस्त मिलने आ गया था । उसे कॉफी बनाकर पिलानी थी । स्साला झूठा कहीं का । (विराम) अब मै किसी के इस तरह से विभाजित व्यक्तित्व को सहन नहीं कर सकता । वह भी रोज - रोज बहाने बनाने से नहीं चूकती । कभी कहती है , आडिट करवाने के लिए सी ए के पास गई थी । कभी कहती है , बॉस की मैडम के साथ मार्केटिंग करने चली गई । कभी कुछ , कभी कुछ । मतलब , जब भी फोन करो , सीट से गायब । आज उसे पता लगेगा कि झूठ के कभी पाव नहीं होते। (उठकर इधर - उधर चक्कर लगाते हुए) अब मैने अच्छी तरह सोच लिया है कि शान्त रहकर अपने अस्तित्व को कभी बौना नहीं बनने दूगा । (विराम) कहीं ऐसा तो नहीं कि बाहर जाकर इसने उसे फोन से बता दिया हो कि मैं यहां आया हुआ हूं ! इसका कोई भरोसा नहीं है। यह जितना ऊपर है , उतना ही नीचे है। स्साले की आखों में रोमास की पुतलिया इन दिनों कुछ ज्यादा ही नाचने लगी है। क्यों नहीं नाचे? नचाने वाली जो मिल गई । मैं भी देखता हूं यह आख मिचौनी कब तक खेली जाती रहेगी । (इसी समय काल - बैल बजती है) आ गई अपने दिलदार की दीवानी । अब मजा आयेगा । (उठकर दरवाजा खोलते है)

मनसुख – क्या मैं अन्दर आ सकता हू ?

अंबर – आपको किस से मिलना है ?

मनसुख – आपसे । अबर साहब आप ही हैं ?

अंबर – हां , मै ही हू । आइये ।

मनसुख – धन्यवाद ।

अंबर – बैठिये । आपका परिचय !

मनसुख – जी , मेरा नाम मनसुख है। मै अन्नू का पिता हू ।

अंबर – कौन , अन्नू ?

मनसुख – क्या , आप अन्नू को नहीं जानते ?

अंबर – नहीं तो ।

मनसुखा – यह आप क्या कह रहे है ? यो तो अक्सर यहा आती रहती है।

अंबर – (आश्चर्य) यहा आती है ?

मनसुखा – जी । आपके भोलाराम से मिलने । आपको इसका पता ही नहीं ?

अंबर – नहीं तो ।

मनसुखा – अभी कुछ अरसे से तो यो इधर ज्यादा ही आने लगी है।

अंबर – मै समझा नहीं ।

मनसुखा – हमारी अन्नू आपके भोलाराम की होने वाली बहू है।

अंबर – इसके पहले कि मै कुछ कहू , आप यह बताइये कि भोलाराम के बारे में आप कुछ जानते भी है या नहीं ?

मनसुखा – अजी , भोलाराम को भला , मै कैसे नहीं जानूगा ? जिस अनाथालय में मै वर्षों चौकीदार रहा , वहीं तो उसका बचपन बीता । वहीं वो पला, पढा और बडा हुआ ।

अंबर – ओह ! तो इसका मतलब है , इसके आगे – पीछे कोई नहीं है।

मनसुखा – तभी तो उसे अनाथालय का मुह देखना पडा ।

अंबर – अनाथालय के बाद !

मनसुखा – अनाथालय से निकलने के बाद जब तक सेवा आश्रम में जगह नहीं मिली, तब तक उसे बहुत कष्ट उठाने पडे । मैने अपने यहा रखना चाहा तो रहा नहीं ।

अंबर – आप अपने यहा केवल इसे ही क्यों रखना चाह रहे थे? इसके अलावा और भी तो लडके उस समय अनाथालय से निकलें होंगे ?

मनसुखा – वो इसलिए कि यह लडका मुझे दूसरों की अपेक्षा अधिक सुशील , समझदार और हितेषी लगा । यही नहीं , अपने सब साथियों मे यह सबसे अधिक होनहार और आज्ञाकारी गिना जाता था ।

अंबर – फिर ?

मनसुखा – सेवा आश्रम में जब जगह मिल गई तो वहा से इसका फिर नया जीवन शुरू हुआ ।

अंबर – वो कैसे ?

मनसुखा – दिन भर सेवा आश्रम में काम करता और रात को अपनी पढाई में लग जाता ।

अंबर - पढाई में।

मनसुखा - जी पढाई में यह हमेशा सबसे आगे रहा।

अंबर - फिर इसने दसवीं पास क्यों नहीं की?

मनसुखा - दसवीं पास!

अंबर - हा! दसवीं पास कर लेता तो कहीं नौकरी लग जाती।

मनसुखा - यह आप क्या कह रहे है? अजी, दसवीं पास करने के बाद ही तो इसने अनाथालय छोडा था। अब तो यह एम कॉम भी कर चुका।

अंबर - क्या SS !! यह एम कॉम है?

मनसुखा - जी। यही नहीं, पिछले दिनों एम बी ए की परीक्षा में भी यह अव्वल रहा था।

अंबर - इतना पढा - लिखा है तो अब तक इसने कहीं नौकरी क्यों नहीं की?

मनसुखा - अजी साहब, गरीबों को नौकरी भला कहा मिलती है? दिन भर आपके यहा चाकरी करता है और रात को सेवा आश्रम की चौकीदारी।

अंबर - यह तो आज मैने नई बात सुनी।

मनसुखा - साहब, भोलाराम जैसे कई लाल ऐसे है जो अभी तक गुदडी में छिपे हुए है।

अंबर - लेकिन यह बताओ, आपकी बेटी अन्नू से इसका क्या तालमेल?

मनसुखा - तालमेल है तभी तो मुझे आपके यहा आना पडा।

अंबर - क्या मतलब?

मनसुखा - दोनों एक - दूसरे को बचपन से ही जानते है। बीच में, सेवा आश्रम मे, जब वह इसके पास पढने जाती थी तो दोनों में अपनत्व के अकुर खिलने लगे। आज वे ही अकुर प्रणय के रूप में फलने - फूलने लग गए। और, अब दोनों विवाह - सूत्र मे बधना चाह रहे है।

अंबर - यह तो फिर खुशी की बात है। लेकिन जब तक इसकी नौकरी न लगे . . ... !

मनसुखा - . .. . . . इसी के लिए तो अब तक प्रतीक्षा करते रहे। अब, जब प्रतीक्षा की धडिया पूरी हो गई, तब देर नहीं करनी चाहिए।

अंबर - प्रतीक्षा की धडिया पूरी कैसे हो गई?

मनसुखा - इसकी नोकरी के आदेश जो हो गये!

अंबर – क्या कह रहे है ?

मनसुखा – वही कह रहा हू , जो सही है। सौभाग्य से इसकी नौकरी वहीं लगने जा रही है , जहा मेरी बेटी अन्नू काम करती है ?

अंबर – अन्नू कहा काम करती है ?

मनसुखा – नाहटा उद्योग समूह मे ।

अंबर – नहीं - नहीं , कोई और उद्योग समूह होगा ।

मनसुखा – सिघानिया सर्किल के पास जो बडी सी बिल्डिंग है , उसमे और कौन से उद्योग समूह का ऑफिस है?

अंबर – ऑफिस तो वहा नाहटा उद्योग समूह का ही है । लेकिन वहा न तो अन्नू नाम की कोई लडकी काम करती है और न ही वहा किसी कर्मचारी का अपायमैंट होने जा रहा है।

मनसुखा – यह कैसे हो सकता है? चार महीने पहले मेरी अन्नू की वहीं नौकरी लगी है।

अंबर – चार महीने पहले ।

मनसुखा – जी । वहा उसे टाइपिस्ट के काम पर लगाया गया है।

अंबर – तो कहीं उसका नाम अनीता तो नहीं है ?

मनसुखा – हा , असली नाम तो उसका अनीता ही है।

अंबर – तो यह कहिये न । आप अनीता के फादर है ।

मनसुखा – जी ।

अंबर – तो फिर अच्छी तरह बैठिये न !

मनसुखा – अच्छी तरह ही बैठा हू ।

अंबर – अनीता तो बहुत अच्छी टाइपिस्ट है।

मनसुखा – अब तो आप यह भी जान गये होंगे कि भोलाराम की नौकरी भी वहीं लग रही है ।

अंबर – इसके बारे मे तो अभी कुछ नहीं कह सकता । असिस्टेंट मैनेजर के रूप में कोई बी.आर. वर्मा के ऑर्डर तो जरूर हुए है लेकिन भोलाराम के कोई ऑर्डर नहीं है ।

मनसुखा – अजी साहब , भोलाराम भी अपने नाम के पीछे वर्मा ही लिखता है ।

अंबर – तो कहीं बी.आर. वर्मा ही भोलाराम तो नहीं है ?

मनसुखा - इसके लिए तो मैं क्या कह सकता हूं।

अंबर - समझ गया । भोलाराम अंग्रजी में अपने को बी आर. लिखता होगा। इसका मतलब है , हमारा भोलाराम . .. .. , ।

(इसी समय भोलाराम का प्रवेश)

मनसुखा - लीजिए यह आ गया ।

अंबर - बहुत बडी उम्र है तुम्हारी । बिजली का बिल भर आये !

भोला - जी ।

अंबर - इन्हे जानते हो ?

भोला - जी। (कहता हुआ अन्दर जाने लगता है)

अंबर - ठहरो ।

भोला - (रूककर संकोच के साथ) जी ऽऽ !

अंबर - इनकी शिकायत है कि तुम इनकी लडकी के साथ कोई चक्कर चला रहे हो!

भोला - नहीं तो।

अंबर - झूठ मत बोलो। मुझे सब पता है।

भोला - यह तो अच्छी बात है। लेकिन साहब , उसके साथ चक्कर - वक्कर की ऐसी कोई बात नहीं है।

अंबर - तो फिर क्या बात है? तुम तो कहते हो , दोपहर को कभी-कभी तुम्हारा कोई दोस्त आ जाता है , जो प्रायः कॉफी पीता है।

मनसुखा - कॉफी की शौकीन तो मेरी अन्नू ही है।

अंबर - बोलो , चुप क्यों हो गये?

भोला - बेशर्म होकर यह कहने से , कि अन्नू मुझसे मिलने आती है , तो अच्छा है , चुप ही रहना ।

अंबर - अरे तो भलेमानस बतलाने में क्या हर्ज था ! फिर , उस दिन मैंने तुमसे पढने के बारे में जिक्र किया तो तुमने यह क्यो नहीं बताया कि एम कॉम करने के बाद तुम एम बी ए भी कर चुके हो ?

भोला - अपने पढे - लिखे होने का ढिंढोरा पीटना मुझे कुछ अच्छा नहीं लगता। फिर मुझे यह भी डर था कि शिक्षित समझकर आप कहीं मुझसे काम करवाना बन्द न कर देवें ।

अंबर - तो अब तुम्हारा क्या विचार है? नाहटा उद्योग समूह मे कल तुम्हे डयूटी ज्याइन करनी है । उसके बाद .. ?

भोला - मुझे यहीं रहना है। आपको छोडकर मुझे कहीं नहीं जाना। आप मेरे अग्रज है और बीवीजी मेरी भाभी मा।

अंबर - अरे पगले , अपने सोच को अब केवल अपने तक ही सीमित मत रख। जीवन में कुछ करना है तो भविष्य की पगडडी की तरफ भी ध्यान देना होगा।

मनसुखा - साहब , आप कुछ भी कहे , यह किसी के अहसानों को अनदेखा नहीं कर सकता ।

अंबर - इसका मतलब है , यह तो शादी के बाद भी हम लोगों को नहीं छोडेगा?

भोला - साहब , मै एक भारतीय हू । यहा शादी के बाद कोई अपनो से अलग नहीं होता।

अंबर - यह तो ठीक है , लेकिन मेरा यह घर इतना बडा नहीं है कि यहां दो परिवारों का गुजारा हो सके ।

भोला - यह तो तब न , जब दो परिवार अलग – अलग हों । हा , यदि आप हमे अपने से जुदा करना चाहें तो यह दूसरी बात है । फिर भी , जब तक हम अपना नया घर नहीं बना लेंगे , तब तक हम यहा से कहीं नहीं जायेंगे ।

मनसुखा - यह तो अब आप दोनों का आपसी मामला है। हा , यह बताइये , मेरे लिए अब क्या हुकम है ! अन्नू ने कहा , मै आपसे एक दफे मिल आऊ सो यहा मिलने चला आया। इन दोनों के . . . ।

अंबर - . विवाह के लिए यदि मेरी सहमति चाहो , तो मुझे मजूर है।

मनसुखा - बस , मैं यही चाहता था । अब इनके एक होने में कोई अडचन नहीं है। अच्छा , मै चलता हूं । (प्रस्थान)

भोला - मै बाजार से जरा दूध लेकर आता हू । (कहता हुआ अन्दर से बरणी लेकर बाहर चला जाता है)

अंबर - (स्वगत) इस नये किस्से ने मेरी हर तरह से आखे खोल दी है । शक में सुबकती धारणाओं को एकदम धराशायी कर दिया । आज मुझे अहसास हुआ कि आस्था के मूलाधार हैं एक – दूजे की पवित्र भावनाए और सवेदनाए । भोला को ,इसके भीतर की जिजीविषा ही , अब तक इसे अपने कार्य के प्रति ईमानदार और निष्ठावान बनाये हुए है। नई पीढी की उभरती प्रतिभाए इससे बहुत कुछ सीख सकती है। मैंने तो इस पर ख्वामख्वाह ही सन्देह किया । बेमतलब ही अन्धेरे में हाथ मारता रहा। (कहते हुए विचारों के मंथन में उलझ जाते हैं।

(इसी समय बाहर से अंबिका का प्रवेश)

अंबर – ... गये? एक औरत ही है जो अपने पति की दूसरी ...जवूरियों के धेरे मे घिरकर सहन कर लेती है । लेकिन ...ो पत्नी के किसी सहपति होने की भनक मात्र से ही ...ता है ।

... ठीक कहती हो । मुझे अब अहसास हो गया कि कोई भी ... अलावा किसी दूसरे को यह छूट कभी नहीं दे सकता कि ... पत्नी पर एक उडती नजर डालने का भी दुस्साहस करे ।

... भी समझ गई थी जब आपके मन की आशंकाओं के नागफन ...गे थे ।

... अब इससे इन्कार नहीं कर सकता ।

... *का मतलब है , मैने परीक्षा – पत्र में जो प्रश्न अंकित किये , वे सही ...हले ।*

... कदम सही । पुरूष का सबसे बडा अहकार है , पत्नी पर उसका ...एकाधिकार ।

... यह सही नहीं है। पति का पत्नी पर अपना पूर्ण अधिकार , कोई गलत प्रकिया नहीं है बल्कि वो तो उसके अखंड प्रेम का प्रतिमान है ।

... तुम भी खूब हो । बेचैनी के इस तूफानी समुद मे पहले तुम्हीं ने मुझे धकेला और अब तुम्हीं मुझे हाथ पकडकर उसमे से बाहर निकाल रहीं हो।

... – यह तो मेरा स्त्रीयोचित कर्त्तव्य है । खैर , अभी क्या सोच रहे थे ?

... – यही कि जब तक यहां भोला है , तब तक तो ठीक है । लेकिन उसके बाद . . . .. ?

– .. .. .. .उसके बाद क्या !

... – क्या यह धर तीसरे के अभाव में कुछ अटपटा सा नहीं लगेगा ?

...का – तीसरा कौन?

...र – जिसकी चाहत तुम्हारे भीतर बहुत अरसे से उलाचे भर रही है ।

...बिका – यह आप कह रहे है ।

...ंबर – हा । मुझे अपनी गलतियो ने अब तक बहुत कुछ सीखा दिया है ।

अंबिका – वो कैसे ?

अंबिका – अरे . इस समय आप यहां कैसे ?

अंबर – वैसे ही चला आया ।

अंबिका – भोला कहा है ?

अंबर – दूध लेने गया है।

अंबिका – (सोफे पर बैठती हुई) पहले तो आपने कभी दोपहर को इधर की तरफ मुह ही नहीं किया ।

अंबर – तो क्या हुआ? आज आ गया ।

अंबिका – यह तो ठीक है , लेकिन लगता है आपके इस तरह अचानक आने के पीछे जरूर कोई खास वजह है। अन्यथा आपके चेहरे पर किसी मानसिक द्वन्द्व की परछाई इस तरह उतरकर नहीं आती ।

अंबर – तुम कह क्या रही हो , मेरी तो कुछ भी समझ में नहीं आ रहा ।

अंबिका – रहने दीजिए । कहीं कॉफी के प्याले का रहस्य जानने को तो नहीं आ गये ।

अंबर – कॉफी के प्याले का !

अंबिका – झिझकिये मत । उस रोज लगभग इसी समय आपने यहां आकर रसोई में कॉफी के झूठे प्याले क्या देख लिये , किसी पर आपके शक की सुई कुछ ज्यादा ही नुकीली हो चली।

अंबर – क्या मतलब ?

अंबिका – मतलब को अब परदे के पीछे ही रहने दे तो अच्छा होगा । यह बताइये, अब दिल का बोझ तो कुछ हल्का हो गया न !

अंबर – अंबिका !

अंबिका – उस रोज हमारी बातों का कथित शीतयुद्ध एक छोटी सी दरार से प्रारम्भ हुआ था जो शायद एक चौड़ी खाई की शक्ल मे बदलने लगा ।

अंबर – नहीं , यह तुम्हारा भ्रम है ।

अंबिका – भ्रम नहीं , हकीकत है। इसीलिए मैने उसी दिन आपकी परीक्षा लेने की ठान ली थी , जब आपने दो पत्नियों के जबाब में दो पतियों की बात को मेरे आगे परोसते देर नहीं लगाई ।

अंबर – . .. .। (निरुत्तर)

अंबिका – अब चुप क्यो हो गये? एक औरत ही है जो अपने पति की दूसरी सहपत्नी है को मजबूरियों के घेरे मे घिरकर सहन कर लेती है । लेकिन पुरुष तो अपनी पत्नी के किसी सहपति होने की भनक मात्र से ही तिलमिला उठता है ।

अंबर – वाकई , तुम ठीक कहती हो । मुझे अब अहसास हो गया कि कोई भी पुरुष अपने अलावा किसी दूसरे को यह छूट कभी नहीं दे सकता कि वह उसकी पत्नी पर एक उडती नजर डालने का भी दुस्साहस करे ।

अंबिका – मै तो तभी समझ गई थी जब आपके मन की आशकाओ के नागफन उठने लगे थे ।

अंबर – मै भी अब इससे इन्कार नहीं कर सकता ।

अंबिका – इसका मतलब है , मैने परीक्षा – पत्र में जो प्रश्न अकित किये , वे सही निकले ।

अंबर – एकदम सही । पुरुष का सबसे बडा अहंकार है , पत्नी पर उसका एकाधिकार ।

अंबिका – यह सही नहीं है। पति का पत्नी पर अपना पूर्ण अधिकार , कोई गलत प्रकिया नहीं है बल्कि वो तो उसके अखड प्रेम का प्रतिमान है ।

अंबर – तुम भी खूब हो । बेचैनी के इस तूफानी समुद मे पहले तुम्हीं ने मुझे धकेला और अब तुम्हीं मुझे हाथ पकड़कर उसमें से बाहर निकाल रही हो।

अंबिका – यह तो मेरा स्त्रीयोचित कर्त्तव्य है । खैर , अभी क्या सोच रहे थे ?

अंबर – यही कि जब तक यहा भोला है , तब तक तो ठीक है । लेकिन उसके बाद . ...?

अंबिका – . . . .उसके बाद क्या !

अंबर – क्या यह घर तीसरे के अभाव में कुछ अटपटा सा नहीं लगेगा ?

अंबिका – तीसरा कौन?

अंबर – जिसकी चाहत तुम्हारे भीतर बहुत अरसे से उलाचे भर रही है ।

अंबिका – यह आप कह रहे है !

अंबर – हा । मुझे अपनी गलतियों ने अब तक बहुत कुछ सीखा दिया है ।

अंबिका – वो कैसे ?

अंबर - अभी तो हम कभी – कभी भोला के साथ हंसी – मजाक करके घर के माहौल मे किंचित उल्लास का अनुभव कर लेते है। लेकिन . .. !

अंबिका - लेकिन क्या ? भोला के बाद उसकी जगह हम किसी और तीसरे को ले आएंगे ।

अंबर - और किसी को क्यों ? क्या ऐसा नहीं हो सकता कि वो तीसरा कोई अपना हो ?

अंबिका - अपने से मतलब ?

अंबर - जो अपनी किलकारियों से हमारे भविष्य में खुशियों के फूल बिखेर सके।

अंबिका - सच!

अंबर - हां अंबिका । हमें अपने तीसरे का अभाव अब सचमुच खटकने लगा है। ईश्वर ने चाहा तो वो तीसरा जल्दी ही तुम्हारी गोद में होगा ।

अंबिका - आप भी वो है ! (कहती हुई लज्जा-मिश्रित हंसी होठों पर फैल जाती है और अंबर यह देखकर मुस्करा उठता है।)

3. किराये की काया

पात्र परिचय –

1. मल्होत्रा जी – एक सहायक अभियन्ता
2. सुकन्या – मल्होत्रा जी की पत्नी
3. आयशा – एक टाइपिस्ट

एक

(दिन का समय । मल्होत्राजी का सामान्य ड्राइंग रूम । सुकन्या सोफे पर उदास बैठी पत्रिका के पन्ने पलटने का बेमन से प्रयास कर रही है कि बाहर से आयशा का प्रवेश ।)

आयशा – नमस्ते आंटी ।

सुकन्या – नमस्ते । आयशा जीनत !

आयशा – जी ।

सुकन्या – बैठो । तुम सोच रही होंगी कि मैं तुम्हें कैसे जानती हूं?

आयशा – है तो यह आश्चर्य की बात । इससे भी बडी हैरानी की बात यह कि आपने मुझे फोन पर यहा आने का सीधा आदेश ही दे डाला ।

सुकन्या – इसके बावजूद भी तुमने कोई ख्याल नहीं किया , बल्कि यह भी नहीं सोचा कि मै कौन हूं , क्या हूं ? केवल मेरे कहने मात्र से ही यहा चली आई , यह तो बहुत ही अचम्भे की बात है। बल्कि मैं तो इसे एक अजूबा कहूंगी।

आयशा – बात तो आपकी सही है । पता नहीं , आपकी आवाज में मैने ऐसा क्या अपनत्व देखा कि कुछ और सोचने का मौका ही नहीं लिया और चुपचाप यहां चली आई ।

सुकन्या – खैर , यह तो तुम्हारा बडप्पन है कि तुमने मुझे गलत नहीं समझा । वरना् कोई और होती तो बिना पूछताछ किये इस तरह यहां स्वयं चलकर नहीं आती।

आयशा – मैं तो आपको यह भी पूछने का साहस न कर सकी कि आप मुझे किसलिए बुला रही है ?

सुकन्या – देखो बेटी , मै एक अध्यापिका हूं । मेरे पति तुम्हारे यहा सहायक अभियन्ता हैं ।

आयशा – हमारे यहां सहायक अभियन्ता है । कौन मल्होत्राजी?

सुकन्या – हा । और , मैं समझती हूं कि तुम उनकी कमजोरियों से अब तक पूरी तरह वाकिफ हो चुकी होंगी ।

आयशा – (हंसती हुई) आप क्या कहना चाहती है , मैं समझ गई । हम वहां आठ–दस महिला कर्मचारी हैं और उन सब मे, मैं सबसे जूनियर हूं और हिन्दी टाइपिस्ट का काम करती हूं ।

सुकन्या – मुझे पता है । शंकर , जो आपके ऑफिस में चपरासी है , वह मेरे ही गांव का लडका है । उसके माध्यम से मुझे उनकी प्राय: सारी हलचलें मालूम होती रहती हैं ।

सुकन्या – हा , जब शराफत ही नहीं, तो फिर शर्म कैसी?

आयशा – बडी मुश्किल से यह कहकर उनसे पिंड छुडवाया कि आपके साथ फिर कभी चाय पिऊंगी । तो झट बोल उठे – वादा रहा न ! मैने जब यह कहा – झूठ नहीं , सच कह रही हू । तब जाकर उनसे छुटकारा मिला।

सुकन्या – फिर तो थोडी देर के लिए उनके चेहरे पर मुस्कराहट के कुछ फूल भी खिले होगे ?

आयशा – बिल्कुल यही बात थी आटी । आज भी मुझे देखकर होठो पर मुस्कराहट ही मुस्कराहट बिखेरने लगे । बल्कि एक बार तो सुबह ही सुबह बेझिझक होकर मुझे मेरा वादा याद दिलाने के बहाने मेरी सीट के पास ही चले आये।

सुकन्या – देखो आयशा , हमारे घर के स्वाभिमान पर कोई गहरा कलक लगे या कोई तमाचा मारे , इससे पहले मै कोई ऐसा कारगर कदम उठाना चाहती हू जो उन्हे इन जलील हरकतों से रोक सके । इसमें मैं तुम्हारी थोडी मदद लेना चाहती हू।

आयशा – आटी , आप इस नेक काम के लिए मुझसे जो भी मदद चाहेगीं , मै देने को हरदम तैयार हू ।

सुकन्या – देखो , मैने तुम्हारे नाम से एक पत्र का प्रारूप तैयार किया है । (एक कागज हाथ में पकडाती हुई) इसे पढलो । यदि उचित समझो तो टाइप करके उन्हें ऑफिस के पते पर ही डाक से भेज दो ।

आयशा – (एक ही सांस में पढकर) यह आपने ठीक किया । मिलने की जगह भी सही चुनी । लिबास भी आपने ऐसा बताया कि उन्हें कोई शक भी न हो।

सुकन्या – तो तुम्हें यह पत्र भेजने में कोई आपत्ति तो नहीं है?

आयशा – नहीं है। बल्कि मै इसे अंजाम देने को पूरी तरह तैयार हूं ।

सुकन्या – अब देखना , कल जब उन्हें यह पत्र मिलेगा तो तुमसे मिलने की खुशी में वह ऑफिस से जल्दी ही घर चले आयेंगे और फिर अपने को हर तरह से संवारने में जुट जायेंगे ।

आयशा – वैसे भी , कांच और कघा तो वह हर समय अपने साथ रखते हैं। जब भी हम लडकियो को देखते हैं तो अपने बालों में कंघी करना कभी नहीं भूलते।

सुकन्या – मुझसे उनकी रंगीनिया कुछ भी छिपी नहीं है। मै तो उनकी रग – रग पहचानती हूं ।

आयशा – इसके बावजूद भी आपने हिम्मत नहीं छोडी और अब तक सब कुछ सहन करती जा रही है ,

सुकन्या – इस आशा मे , एक – न – एक दिन उन्हें स्वत- ही समझ और सीख आ जायेगी । लेकिन जब यह देखा कि मेरी आशाओं पर तुषारापात होता जा रहा है तो मुझे अब यह नयी तरकीब सोचनी पडी ।

आयशा – ओह ! तो उसी ने आपको मेरे बारे में बताया होगा?

सुकन्या – हा । तभी तो तुम्हें यहा बुलाया है। जब भी किसी नई महिला को देखते है तो ये उसे अपनी ओर आकर्षित करने की पूरी कुचेष्टा करते हैं।

आयशा – बस , यहीं एक कमजोरी उनके व्यक्तित्व को दागदार और बौना बना रही है।

सुकन्या – और यही बात मेरे कलेजे को छलनी करने पर तुली हुई है ।

आयशा – लेकिन किया क्या जाय? उनकी इस आदत को रोक पाना मुश्किल है। अपनी महिला साथियो से इस बारे मे अनेकों किस्से सुन चुकी हू। आप बुरा न मानिये , वे हमारे ऑफिस में इस कदर बदनाम हो चुके है कि कोई भी महिला उनके पास से गुजरना तक मुनासिब नहीं समझती ।

सुकन्या – मै जानती हूं । यह भी जानती हूं , उनकी यह निर्लज्जता एक ऐसे नासूर के रूप में बढती जा रही है , जो केवल उनके ही लिए घातक नहीं , हमारे खानदान को भी अंधकार में धकेल सकती है। सोचती हूं , इस नासूर को रोकने का क्या उपचार किया जाय?

आयशा – यह गंदी आदत उनको कहां से लगी?

सुकन्या – इसके लिए तो वे ही जानें । मुझे तो तब पता चला , जब मैं अध्यापिका बनीं और मेरी सहकर्मी सहेलियां मेरे घर आने – जाने लगीं । उनसे जब वे भद्दी मजाकें करने लगे , तब मै सतर्क हो गई। बाद में मुझे मालूम हुआ कि उन्हें आशिकी का बुखार तो यदा – कदा चढता ही रहता है। कभी–कभी तो बुखार इतना तेज हो जाता है कि बहकने से लगते हैं।

आयशा – उनका यही बुखार हमारे ऑफिस मे भी उन्हें कभी–कभास विचलित करने लगता है । कल की ही बात सुनाती हूं । मै उनके कमरे के आगे से होती प्याऊ की तरफ गई तो पीछे – पीछे वे भी मेरे पास चले आये। शालीनता की हद को लाघते हुए कहने लगे – आयशा , मेरी इच्छा है, आज तुम और मैं दोनों केन्टीन में चलकर एक साथ चाय पीयें । जबकि मैने हमेशा उनसे अपनी दूरी को कभी सिमटने नहीं दिया ।

सुकन्या – लेकिन उन्हें यह सब कुछ कहते हुए जरा भी झिझक नहीं आई होगी?

आयशा – झिझक तो मुझे आ रही थी , उनके पास खडे रहने मे । शर्म से पानी–पानी हो रही थी , सो अलग । आखिर मुझे कहना पडा– अंकल, चाय तो लंच में प्राय. मै अपनी सहेलियो के साथ ही पीती हूं ।

सुकन्या – तो क्या बोले?

आयशा – बोले – अरे , हमारे साथ जब चाय पियोगी तो सहेलियों के साथ फिर चाय पीना ही भूल जाओगी ।

सुकन्या – अरे राम ! ऐसा कहते हुए उन्हें शर्म भी नहीं आई?

आयशा – शर्म तो हमेशा शराफत के साथ होती है आंटी ।

सुकन्या – हां , जब शराफत ही नहीं, तो फिर शर्म कैसी?

आयशा – बडी मुश्किल से यह कहकर उनसे पिंड छुडवाया कि आपके साथ फिर कभी चाय पिऊगी । तो झट बोल उठे – वादा रहा न । मैने जब यह कहा – झूठ नहीं , सच कह रही हू । तब जाकर उनसे छुटकारा मिला।

सुकन्या – फिर तो थोडी देर के लिए उनके चेहरे पर मुस्कराहट के कुछ फूल भी खिले होंगे ?

आयशा – बिल्कुल यही बात थी आटी । आज भी मुझे देखकर होठों पर मुस्कराहट ही मुस्कराहट बिखेरने लगे । बल्कि एक बार तो सुबह ही सुबह बेझिझक होकर मुझे मेरा वादा याद दिलाने के बहाने मेरी सीट के पास ही चले आये।

सुकन्या – देखो आयशा , हमारे घर के स्वाभिमान पर कोई गहरा कलक लगे या कोई तमाचा मारे , इससे पहले मै कोई ऐसा कारगर कदम उठाना चाहती हू जो उन्हे इन जलील हरकतों से रोक सके । इसमे मै तुम्हारी थोडी मदद लेना चाहती हूं।

आयशा – आंटी , आप इस नेक काम के लिए मुझसे जो भी मदद चाहेगी , मै देने को हरदम तैयार हू ।

सुकन्या – देखो , मैने तुम्हारे नाम से एक पत्र का प्रारूप तैयार किया है । (एक कागज हाथ मे पकडाती हुई) इसे पढलो । यदि उचित समझो तो टाइप करके उन्हे ऑफिस के पते पर ही डाक से भेज दो ।

आयशा – (एक ही सांस में पढकर) यह आपने ठीक किया । मिलने की जगह भी सही चुनी । लिबास भी आपने ऐसा बताया कि उन्हें कोई शक भी न हो।

सुकन्या – तो तुम्हें यह पत्र भेजने में कोई आपत्ति तो नहीं है?

आयशा – नहीं है। बल्कि मै इसे अजाम देने को पूरी तरह तैयार हू ।

सुकन्या – अब देखना , कल जब उन्हें यह पत्र मिलेगा तो तुमसे मिलने की खुशी में वह ऑफिस से जल्दी ही घर चले आयेंगे और फिर अपने को हर तरह से संवारने में जुट जायेगे ।

आयशा – वैसे भी , काच और कंधा तो वह हर समय अपने साथ रखते है। जब भी हम लडकियो को देखते हैं तो अपने बालो में कघी करना कभी नहीं भूलते।

सुकन्या – मुझसे उनकी रंगीनियां कुछ भी छिपी नहीं है। मै तो उनकी रग – रग पहचानती हूं ।

आयशा – इसके बावजूद भी आपने हिम्मत नहीं छोडी और अब तक सब कुछ सहन करती जा रही है ,

सुकन्या – इस आशा मे , एक – न – एक दिन उन्हें स्वत ही समझ और सीख आ जायेगी । लेकिन जब यह देखा कि मेरी आशाओं पर तुषारापात होता जा रहा है तो मुझे अब यह नयी तरकीब सोचनी पडी ।

आयशा – ओह ! तो उसी ने आपको मेरे बारे में बताया होगा?

सुकन्या – हा । तभी तो तुम्हे यहा बुलाया है। जब भी किसी नई महिला को देखते है तो वे उसे अपनी ओर आकर्षित करने की पूरी कुचेष्टा करते है।

आयशा – बस , यही एक कमजोरी उनके व्यक्तित्व को दागदार और बौना बना रही है।

सुकन्या – और यही बात मेरे कलेजे को छलनी करने पर तुली हुई है ।

आयशा – लेकिन किया क्या जाय? उनकी इस आदत को रोक पाना मुश्किल है। अपनी महिला साथियो से इस बारे मे अनेकों किस्से सुन चुकी हू। आप बुरा न मानिये , वे हमारे ऑफिस में इस कदर बदनाम हो चुके है कि कोई भी महिला उनके पास से गुजरना तक मुनासिब नहीं समझती ।

सुकन्या – मै जानती हू । यह भी जानती हू , उनकी यह निर्लज्जता एक ऐसे नासूर के रूप में बढती जा रही है , जो केवल उनके ही लिए घातक नहीं , हमारे खानदान को भी अंधकार मे धकेल सकती है। सोचती हू , इस नासूर को रोकने का क्या उपचार किया जाय?

आयशा – यह गंदी आदत उनको कहा से लगी?

सुकन्या – इसके लिए तो वे ही जानें । मुझे तो तब पता चला , जब मै अध्यापिका बनी और मेरी सहकर्मी सहेलियां मेरे घर आने – जाने लगीं । उनसे जब वे भद्दी मजाके करने लगे , तब मै सतर्क हो गई। बाद मे मुझे मालूम हुआ कि उन्हे आशिकी का बुखार तो यदा – कदा चढ़ता ही रहता है। कभी–कभी तो बुखार इतना तेज हो जाता है कि बहकने से लगते है।

आयशा – उनका यही बुखार हमारे ऑफिस मे भी उन्हें कभी–कभार विचलित करने लगता है । कल की ही बात सुनाती हू । मैं उनके कमरे के आगे से होती प्याऊ की तरफ गई तो पीछे – पीछे वे भी मेरे पास चले आये। शालीनता की हद को लांघते हुए कहने लगे – आयशा , मेरी इच्छा है, आज तुम और मै दोनो केन्टीन में चलकर एक साथ चाय पीयें । जबकि मैंने हमेशा उनसे अपनी दूरी को कभी सिमटने नहीं दिया ।

सुकन्या – लेकिन उन्हें यह सब कुछ कहते हुए जरा भी झिझक नहीं आई होंगी?

आयशा – झिझक तो मुझे आ रही थी , उनके पास खडे रहने में । शर्म से पानी–पानी हो रही थी , सो अलग । आखिर मुझे कहना पडा– अंकल, चाय तो लच में प्राय मै अपनी सहेलियों के साथ ही पीती हू ।

सुकन्या – तो क्या बोले?

आयशा – बोले – अरे , हमारे साथ जब चाय पियोगी तो सहेलियों के साथ फिर चाय पीना ही भूल जाओगी ।

सुकन्या – अरे राम ! ऐसा कहते हुए उन्हें शर्म भी नहीं आई?

आयशा – शर्म तो हमेशा शराफत के साथ होती है आंटी ।

सुकन्या – हा , जब शराफत ही नहीं, तो फिर शर्म कैसी?

आयशा – बडी मुश्किल से यह कहकर उनसे पिंड छुडवाया कि आपके साथ फिर कभी चाय पिऊंगी । तो झट बोल उठे – वादा रहा न ! मैने जब यह कहा – झूठ नहीं , सच कह रही हू । तब जाकर उनसे छुटकारा मिला।

सुकन्या – फिर तो थोडी देर के लिए उनके चेहरे पर मुस्कराहट के कुछ फूल भी खिले होंगे ?

आयशा – बिल्कुल यही बात थी आंटी । आज भी मुझे देखकर होठो पर मुस्कराहट ही मुस्कराहट बिखेरने लगे । बल्कि एक बार तो सुबह ही सुबह बेझिझक होकर मुझे मेरा वादा याद दिलाने के बहाने मेरी सीट के पास ही चले आये।

सुकन्या – देखो आयशा , हमारे घर के स्वाभिमान पर कोई गहरा कलक लगे या कोई तमाचा मारे , इससे पहले मै कोई ऐसा कारगर कदम उठाना चाहती हू जो उन्हे इन जलील हरकतों से रोक सके । इसमें मै तुम्हारी थोडी मदद लेना चाहती हूं।

आयशा – आंटी , आप इस नेक काम के लिए मुझसे जो भी मदद चाहेगी , मै देने को हरदम तैयार हू ।

सुकन्या – देखो , मैने तुम्हारे नाम से एक पत्र का प्रारूप तैयार किया है । (एक कागज हाथ में पकडाती हुई) इसे पढलो । यदि उचित समझो तो टाइप करके उन्हें ऑफिस के पते पर ही डाक से भेज दो ।

आयशा – (एक ही सांस में पढकर) यह आपने ठीक किया । मिलने की जगह भी सही चुनी । लिबास भी आपने ऐसा बताया कि उन्हें कोई शक भी न हो।

सुकन्या – तो तुम्हें यह पत्र भेजने में कोई आपत्ति तो नहीं है?

आयशा – नहीं है। बल्कि मै इसे अजाम देने को पूरी तरह तैयार हू ।

सुकन्या – अब देखना , कल जब उन्हें यह पत्र मिलेगा तो तुमसे मिलने की खुशी में वह ऑफिस से जल्दी ही घर चले आयेंगे और फिर अपने को हर तरह से सवारने में जुट जायेंगे ।

आयशा – वैसे भी , कांच और कंघा तो वह हर समय अपने साथ रखते हैं। जब भी हम लडकियों को देखते है तो अपने बालों में कंघी करना कभी नहीं भूलते।

सुकन्या – मुझसे उनकी रंगीनियां कुछ भी छिपी नहीं है। मै तो उनकी रग – रग पहचानती हूं ।

आयशा – इसके बावजूद भी आपने हिम्मत नहीं छोडी और अब तक सब कुछ सहन करती जा रही हैं ,

सुकन्या – इस आशा में , एक – न – एक दिन उन्हें स्वतः ही समझ और सीख आ जायेगी । लेकिन जब यह देखा कि मेरी आशाओ पर तुषारापात होता जा रहा है तो मुझे अब यह नयी तरकीब सोचनी पड़ी ।

आयशा – खुदा ने चाहा तो आपकी यह तरकीब जरूर कामयाब होगी । मै इसके लिए खुदा से दुआ मागती हू कि वह हमारे अकल को सद्‌बुद्धि दे और इस घर में अमन – चेन ।

सुकन्या – मुझे तुमसे यही उम्मीद थी कि तुम मुझे अपना सहयोग देने में कतई निराश नहीं करोगी ।

आयशा – ऐसी बात तो , आटी , आप सोचिये ही मत।

सुकन्या – अरे , बातो – बातों मे , चाय के लिए तो तुम्हें पूछना ही भूल गई ।

आयशा – चाय तो आटी , मै उस रोज पिऊगी जब आप कामयाबी का जश्न मनायेगी । अभी चलती हू ।

सुकन्या – भगवान तुम्हे सदैव खुश रखे और तुम्हे तरक्की दे । बीच में कोई बात पूछनी हो तो फोन कर देना ।

आयशा – क्यो नहीं ! अच्छा, नमस्ते ।

सुकन्या – नमस्ते ।

(आयशा का प्रस्थान)

सुकन्या – (स्वगत) अब देखना है पत्र मिलने पर उनकी क्या प्रतिक्रिया होती है? (कहती हुई पत्रिका के पन्ने झटाझट पलटने लगती है कि मच पर अंधेरा फैलना शुरू हो जाता है।)

दो

(शाम का समय । पब्लिक पार्क में एक खाली बैंच पर मल्होत्राजी बैठे हुए बार – बार हाथघड़ी की ओर देख रहे हैं । बीच – बीच में कभी बालों पर कंघी करते हैं तो कभी कपड़ों पर इत्तर छिड़कते हैं। कभी उठकर टहलने लगते हैं तो कभी रूमाल से चश्मा साफ करके ठीक तरह से आंखों पर लगाने का उपक्रम करते हैं।अचानक दूर से किन्हीं दो जनानियों को आती हुई देखकर सम्भलकर बैठने की चतुराई दिखाने लगते हैं ।)

आयशा – (अपनी अम्मीजान के साथ आती हुई) स्योरी अकल । सच हमे कुछ देर हो गई । इसलिए माफी चाहती हू ।

मल्होत्रा – देरी की तो कोई बात नहीं । लेकिन यह बार – बार अंकल कहना जरा अच्छा नहीं लगता । ऑफिस में जब सभी लोग मुझे मल्होत्राजी कहते है तो तुम भी इसी नाम से पुकारा करो। (कहते हुए उठ जाते है)

आयशा – कोई बात नहीं । आगे से मल्होत्राजी कह दिया करूगी ।

मल्होत्रा – हां , यह हुई न बात । वैरी गुड गर्ल । अच्छा यह बताओ , यह साथ

मल्होत्रा – देखो आयशा , इश्क एक ऐसी इकाई है जिसे भय और आतक कभी तोड नहीं सकते । तुमने जब अपने पत्र में यह साफ लिख दिया कि मै आपके साथ रहकर अपने को खुशनसीब समझूगी तो फिर इन छोटी–मोटी बातो से क्या डरना ।

(अम्मीजान आयशा के कानो मे फिर कुछ कहने लगती है)

आयशा – अम्मीजान कहती है कि आपकी असली काया पर आपकी पत्नी का कब्जा है । अभी जो आपके पास है, वो तो किराये की काया है। इस तरह किराये की काया से कैसे काम चलेगा?

मल्होत्रा – मानता हूं , आज मेरे पास किराये की काया है। लेकिन जब हम दोनों साथ रहने का निश्चय कर लेंगे तो किराये की जगह मेरी असली काया मेरे साथ होगी । जिस पर केवल तुम्हारा ही अधिकार होगा ।

आयशा – क्या आप उनसे पुराना कब्जा छुडवा सकेगे?

मल्होत्रा – क्यों नहीं? काया मेरी है । वह कौन होती है उस पर कब्जा रखने वाली? अभी तो मैंने अपनी स्वेच्छा से उसे कब्जा दे रखा है और किराये की काया साथ में लिये घूमता हू । जब तुम और हम साथ रहने लगेंगे तो फिर मुझे किराये की काया की क्या जरूरत पडेगी?

(अम्मीजान फिर से आयशा के कानों में कुछ बातें और उडेलती है)

आयशा – अम्मीजान कहती है कि क्या मुझसे निकाह करने से पहले आप अपनी पत्नी और बच्चों को अपने से अलग कर सकोगे?

मल्होत्रा – अरे , यह भी कोई पूछने की बात है? तुम चाहो तो कल ही मै अपनी पत्नी को तलाक का नोटिस भिजवा देता हूं।

आयशा – लेकिन उनसे आपकी ऐसी क्या नाराजगी है या उन्होंने आपका ऐसा क्या बिगाडा है कि आप उनसे इस तरह मुक्त हो जाना चाहते है ?

मल्होत्रा – अरे , मुझसे यदि यह न पूछो तो अच्छा है। देखो आयशा, मर्द हमेशा अपनी पत्नी के प्यार का भूखा होता है। और मेरी विडम्बना यह कि मैं प्यार के लिए वर्षों से तरस रहा हूं । पत्नी ने मुझे एक कमाऊ पति के सिवाय और कुछ नहीं समझा ।

आयशा – लेकिन मैने तो सूना है , यह स्वय भी कमाती है। किसी स्कूल में अध्यापिका है।

मल्होत्रा – तभी तो अपनी तन्ख्वाह वैक में जमा कराती है और मेरी तिनख्वाह से गुलछर्रे उडाती है। दो लडके है। दोनों को वोर्डिंग में डाल रखा है। स्कूल से आकर अपनी सहेलियों के यहा किट्टी पार्टियां अटैड करने के सिवाय वह और करती ही क्या है? मेरी तरफ तो उसका कभी ध्यान ही नहीं जाता । अव तुम्हीं बताओं मर्द के लिए ऐसा जीना, कोई जीना है?

(अम्मीजान आयशा के कानो में फिर से कुछ फुसफुसाती है)

आयशा – *अम्मीजान कहती है कि एक दिन आपका चपरासी शकर मिला था ।* वह कह रहा था कि साहव की वेरुखी के कारण उनकी मैडम बहुत दुखी है और कई – कई दिन तक रोती रहती है। वह तो यह भी कह रहा था कि स्कूल से आने के बाद मैडम तो घर से कहीं वाहर ही नहीं जाती । और, आप तो आधी रात से पहले घर में घुसते ही नहीं । इसलिए बात कुछ समझ में नहीं आई ।

मल्होत्रा – शकर उसकी इसलिए तारीफ करता है कि वह उसके पीहर का रहने वाला है। जबकि मेरी पत्नी एक नवर की झूठी है। बल्कि मै तो यह भी कहूगा कि उसने शंकर को अपने जाल में फसा रखा है। तभी तो वह उसके कहे अनुसार झूठी अफवाहें फैलाता है।

आयशा – (अम्मीजान के बतलाने पर) शंकर तो आपकी पत्नी को अपनी भुआ की तरह पूज्य मानता है।

मल्होत्रा – यह सब दिखावा है , ढोंग है। असलियत मुझसे छिपी हुई नहीं है। वरना मुझे क्या किसी पागल कुत्ते ने काटा था कि जो अपनी सुयोग्य और सुघड पत्नी को छोडकर किसी और से प्यार की पींगे बढाता । अपनी अम्मीजान को कहो कि वह शकर की बातो मे न आये ।

आयशा – तो क्या वाकई आपकी पत्नी को अब आपकी जरूरत नहीं रही ?

मल्होत्रा – उसे क्यों नहीं जरूरत? मुझ जैसा और भौदू उसे कहा मिलेगा ? जरूरत तो मुझे नहीं है , अब उसकी , जिसके दिल मे मेरे लिए कोई स्थान नहीं है।

आयशा – फिर ठीक है।(अम्मीजान से) क्यो अम्मीजान ! आपको तो हमारे इस रिश्ते से कोई ऐतराज नहीं है ?

(अम्मीजान सिर हिलाकर 'नां' कहती है।)

मल्होत्रा – फिर कोई बात हीं नहीं । तुम्हारे लिए मै यह एक अगूठी लाया हू । तुम्हें पहना देता हू ताकि आगे से साथ – साथ जीने – मरने की बात पक्की। (अम्मीजान से) क्यो अम्मीजान ठीक है न ।

(अम्मीजान सिर हिलाकर 'ना' कहती हुई आयशा को कुछ निर्देश देती है)

आयशा – अम्मीजान का कहना है , यह अगूठी तो हमारे यहा यदि सगाई की रस्म पूरी होने के समय पहनाते तो अच्छा लगता ।

मल्होत्रा – तो कोई बात नहीं । उस समय पहना देंगे । तब तक हम अपनी पत्नी से तलाक लेने की कार्यवाही पूरी कर लेते है।

आयशा – हा , यह और भी अच्छी बात है। ताकि आगे फिर कोई बखेडा न हो।

मल्होत्रा – लेकिन आज कोई न कोई सगुन का काम तो हो ही जाना चाहिए । (जेब से रूपये निकाल कर देते हुए) यह लो हमारी तरफ से एक छोटा सा उपहार – एक हजार एक रूपये नगद ।

आयशा – हा , यह मजूर है। (कहती हुई मल्होत्रा जी से रूपये लेकर अम्मीजान को दे देती है। अम्मीजान तब फिर उसके कानों में कुछ कहती है) अरे हा, अम्मीजान का यह कहना सही है कि निकाह के बाद हम लोग रहेंगे कहा? क्या आपकी पत्नी आपका घर खाली कर देगी? आपकी काया पर से क्या अपना हक छोड देगी?

मल्होत्रा – क्यों नहीं? घर उसका नहीं है और नही उसके बाप का । मै चाहूं तो आज ही उसे धक्के देकर बाहर निकाल दू । जिस रोज हम दोनो अन्दर घुसेंगे, उस समय वह तो क्या , उसकी छाया भी वहा नजर नहीं आयेगी।

आयशा – और काया?

मल्होत्रा – वो तो मेरी अपनी है। उसे तो मैने उसको सौप रखा था , वापस ले लूगा । ले लूगा क्या , ले लिया समझो । जब मै उसके पास रहूंगा ही नहीं, तो काया पर उसके कब्जे का तो फिर सवाल ही नहीं ।

आयशा – सच कह रहे हैं न ।

मल्होत्रा – अरे , तो मैं झूठ क्यों बोलूगा । मर्द हूं और हमेशा मर्द वाली ही बात कहता हू। अम्मीजान आप मुझ पर भरोसा कीजिए , आपकी बेटी आयशा मेरे यहा राज करेगी , राज । आप निश्चिंत रहिये ।

आयशा – अम्मीजान कहे तो क्या आप मेरे लिए अपना धर्म परिवर्तन भी कर सकते है ।

मल्होत्रा – क्यो नहीं? इश्क मे जाति , धर्म और आयु का कोई महत्व नहीं है।

आयशा – हा , अब मुझे यकीन हो गया कि हमारे बीच अब कोई गिलाशिकवा नहीं है। बस , अब आप अम्मीजान के पैर छूइये और इनसे आशीर्वाद लीजिए।

मल्होत्रा – क्यों नहीं । यह काम तो सबसे पहले ।

(मल्होत्राजी उठकर अम्मीजान के पैर छूने लगते हैं कि वह अचानक अपने पैर पीछे खिसका लेतीं हैं । जब बुरका उठाकर अम्मीजान अपना मुंह दिखलातीं है तो मल्होत्राजी के पैरों तले से जमीन खिसकने सी लगतीं हैं। अम्मीजान और कोई नहीं , स्वयं सुकन्या थी। मल्होत्राजी का मुंह फटा का फटा रह जाता है और आयशा के होठों पर हंसी के फव्वारे छुटने लगते हैं तो सुकन्या अपने पति की आत्मग्लानि पर अपनी कामयाबी की हल्की सी मुस्कराहट बिखेर देती है। इसी के साथ तीनों पात्र तब तक 'स्थिर' होकर रह जाते है जब तक मंच को अंधकार अपने आगोश में समेट नहीं ले लेता ।)
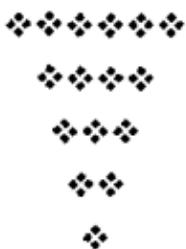
4. पोस्टमार्टम

पात्र परिचय –

1.	सुनीता	–	अस्पताल की एक नर्स
2.	डा.वर्मा	–	अस्पताल का ड्यूटी डाक्टर
3.	सरदार जी	–	एक मानसिक रोगी
4.	वहीदा	–	सुनीता की सहेली

(समयः सुबह के दस बजे । स्थानः किसी अस्पताल के एक वार्ड का अग्रभाग । स्ट्रेक्चर पर सफेद चद्दर से ढकी एक लाश रखी हुई है। मेज पर पास पड़ी कुर्सी पर बैठी सुनीता सिस्टर फोन पर अपनी सहेली वहीदा से वार्ता करने में निमग्न है। जबकि पार्श्व में कहीं एक ओर वहीदा भी अपने फोन को कान से चिपकाये प्रकाशपुंज में दिखाई दे रही है।)

सुनीता - अरी , तुम्हारी आवाज मुझे साफ सुनाई नहीं दे रही है। जरा जोर से बोलो ।

वहीदा - (जोर से बोलती हुई) मै धीरे कहा बोल रही हू?

सुनीता - हा – हा , अब तुम्हारे बोल सुनाई दे रहे है ।

वहीदा - अभी क्या ड्यूटी पर हो?

सुनीता - हा । एक घटे से ड्यूटी ही तो दे रही हू। वैसे , सही पूछो तो मै अभी यहा नहीं, कहीं और ही हू।

वहीदा - वो कैसे?

सुनीता - कैसे क्या ! दिल को तो तुम जानती हो , वो तुम्हारे भाईजान के पास *गिरवी रखा हुआ है। अब तुम्हीं बताओ , बिना दिल के, मै यहा कैसे* हो सकती हू?

वहीदा - रहने दे । यह बात मुझे नहीं , भाईजान को बताना ।

सुनीता - उन्हीं को बताने के लिए ही तो फोन किया है।

वहीदा - लेकिन वह तो कल शाम से घर पर ही नहीं है।

सुनीता - नहीं है! कहा गये?

वहीदा - अपने बॉस के साथ कहीं गये थे , वापस लौटकर नहीं आये ।

सुनीता - उनका बॉस तो सबसे बडा इश्कबाज है ।

वहीदा - यह मै क्या जानूं ! तुम्हे पता होगा । अच्छा यह बताओ , अभी सुबह-सुबह फोन कैसे किया?

सुनीता - तुम्हें कहा फोन किया? फोन तो उनको किया, जिनको मेरी कोई चिन्ता नहीं है।

वहीदा - यह मत कहो सुनीता । भाईजान तो तुम्हारे पीछे दिन पर दिन पागल हुए जा रहे है। पता नही , तुमने उन पर क्या जादू कर रखा है !

सुनीता – अरी वहीदा, क्यों अपने भाईजान की आशिकी की तारीफ कर रही है। मै क्या उन्हें जानती नहीं? रोज मिलते है हम। उनकी रग – रग से मै परिचित हू। दरअसल, उन्हे केवल दीवानों की सी बातें बघेरनी ही ज्यादा आती है। बस, इसके सिवाय और कुछ नहीं।

वहीदा – यह तो मै मानती हू कि मुझसे ज्यादा अब तुम उन्हें अधिक जानने लगी हो। लेकिन उनकी दीवानगी की गहराई तक शायद अभी तुम नहीं पहुची हो।

सुनीता – खैर, अभी तुम्हें कुछ पता हो तो बताओ इस समय वह कहा हो सकते है?

वहीदा – ऑफिस में किसी खाली टेबल पर या फिर किसी अनजान जगह पर गहरी नींद में सोते हुए तुम्हारी याद में सुनहरे सपने ले रहे होंगे।

सुनीता – मजाक न करो। दस बज चुके, अभी क्या वह कहीं सोते ही रहेंगे?

वहीदा – तो हो सकता है, वहीं से वह डायरेक्ट ऑफिस चले गये हों या ऑफिस मे रात को रहे हों तो वहीं बैठ गये हों।

सुनीता – ओह ! मै तो उन्हें अभी यहा बुलाने की सोच रही थी।

वहीदा – वो भला, किसलिए?

सुनीता – आज सुबह यहा एक ऐसे मजनू की लाश आई है जिसने अपनी लैला की खुशी के लिए खुदकशी करके अपनी प्यारी सी जान को जन्नत के हवाले कर दी।

वहीदा – ऐसा अभागा आशिक इस शहर में फिर कहा से आ गया?

सुनीता – अरी मूर्ख, तुम इसे अभागा कह रही हो। किसी आशिक के लिए ऐसे कडवे बोल मत बोलो। अरी, तुम इसे शहीद कहो, शहीद।

वहीदा – (झुंझलाती हुई) शहीद – शहीद – शहीद ! मुझे इस शब्द से नफरत हो चुकी है। भाईजान भी अक्सर इसी शब्द का इस्तैमाल इन दिनो कुछ ज्यादा ही करने लगे है।

सुनीता – अरी नासमझ। तुम इसे क्या जानो? कभी किसी से इश्क किया हो तो पता लगे।

वहीदा – रहने दो – रहने दो। मुझे किसी से ऐसी दीवानगी नहीं चाहिए। इसी दीवानगी के पीछे तो भाईजान अपनी सुध-बुध खोते जा रहे है। क्या कहते है, मालूम है?

सुनीता – क्या कहते है !

वहीदा – कहते है, सुनीता की खुशी के लिए वह जान देने में भी सकोच नहीं करेंगे।

सुनीता – नहीं – नहीं। इस साल मेरे लिए, उन्हे कुछ भी करने की जरूरत नहीं है। अगले साल देखेगे, जब हमारा प्यार पूरे परवान पर चढ जायेगा।

(इसी समय बाहर से डा.वर्मा का प्रवेश। इधर सुनीता फोन रखती है, उधर वहीदा पर से भी प्रकाशपुंज सिमटकर रह जाता है।)

सुनीता - गुड मार्निंग सर ।

वर्मा - गुड मार्निंग । (स्टैक्चर पर पडी लाश की ओर सकेत करते हुए) यह कौन है।

सुनीता - कौन नहीं सर , कौन था?

वर्मा - वाट यू मीन?

सुनीता - यह शहीद हो चुका है सर ।

वर्मा - मतलब ।

सुनीता - अपनी माशूका की खुशी के लिए इसने सर, अपने प्राणों की आहूति देकर वहादुरी की एक ऐसी मिसाल कायम की है जो आज के कागजी मजनुओं के दाढी से ढके गालों पर एक गहरा तमाचा है ।

वर्मा - बात को इस तरह घुमा – फिरा कर कहने से क्या मतलब? साफ क्यों नहीं कह देती कि इस व्यक्ति ने सुस्साइड किसा है।

सुनीता - नहीं सर ! सुस्साइड तो हमेशा डरपोक और कायर आदमी करते है। इसने तो सचमुच , बहादुरी के साथ मौत को अपने गले लगाया है।

वर्मा - (बोर होते हुए) ठीक है , ठीक है।

सुनीता - ठीक नहीं है सर ।

वर्मा - क्या मतलब?

सुनीता - (मेज पर से एक फाइल उठाकर दिखलाती हुई) यह पुलिस रिपोर्ट पढ़ लीजिए सर ।

वर्मा - क्या लिखा है इसमें?

सुनीता - आप पढ़ लेंगे या मै पढकर सुनाऊं सर?

वर्मा - (कुर्सी पर बैठते हुए) तुम्ही पढकर सुना दो ।

सुनीता - तो सुनिये सर । (फाइल देखकर) इसमे लिखा है सर , यह डैड बॉडी लाला लखपतराय की दूसरी रखैल बेगम सायरावानो के पहले शोहर हाजीं गुलाम मोहम्मद के आठवें बेटे मिया एन. डी. की है। यहां एन. डी. का पूरा नाम नहीं लिखा ।

वर्मा - हा – हां , आगे पढो । यह वारदात कैसे हुई और कहा हुई, यह बताओ।

सुनीता - इसके लिए लिखा है सर , यह मियां जो कभी शायरी के भी बडे शौकीन रहे है , शहर के सबसे बडे रईस स्वर्गीय सेठ सुशीलकुमारजी की किसी पूर्व अन्तरगी महिला मित्र की वैघ सन्तान , ब्रेकेट में लडकी लिखा हुआ है , के इश्क में पिछले कई अरसे से कैद थे ।

वर्मा – उस लडकी का नाम नहीं लिखा?

सुनीता – नहीं सर ।

वर्मा – वो बात पढ़कर सुनाओ कि इसके सुस्साइड करने की वजह क्या थी?

सुनीता – यही तो अब बता रही हू सर । उस लडकी ने इस मरदूद मिया से यह कहा था नहीं, नहीं । इसे सर मै जरा बाद में सुनाऊगी । पहले मेरी एक जिज्ञासा है।

वर्मा – वो फिर क्या है?

सुनीता – पहले सर , आपसे एक रिक्वेस्ट है। इसे कहीं अदरवाइज न लीजिए ।

वर्मा – अरे , बोलो तो सही ।

सुनीता – सर , आपने कभी किसी से प्यार किया है?

वर्मा – (बेमन से मुस्कराते हुए) किया है ।

सुनीता – तब तो सर , ।

वर्मा – . क्या?

सुनीता – बुरा न माने , आपकी वो माशुका भाग्यशाली नहीं है। रियली , शी इज अनलक्की ।

वर्मा – वो कैसे?

सुनीता – आप नहीं तो सर , उसे तो कम से कम आपकी बेहद खुशियों के लिए ऐसा ही कोई न कोई स्टैप उठाना चाहिए था ।

वर्मा – क्या बकती हो ! तुम्हारा दिमाग तो ठीक है?

सुनीता – कहा सर । आप दूसरो का इलाज तो करते है , लेकिन मेरी तरफ आपका कभी ध्यान ही नहीं जाता ।

वर्मा – तुम्हें इस तरह की बातो की कैंची चलाना बहुत आता है। तुम्हे यही पता नहीं रहता कि किस समय क्या बोलना चाहिए ।

सुनीता – सॉरी सर ।

वर्मा – (नकल उतारते हुए) सॉरी सर ! जानती हो , मेरी माशुका कौन है?

सुनीता – कौन है !

वर्मा – मेरी धर्मपत्नी हेमलता ।

सुनीता – तब तो और भी ज्यादा सॉरी सर ।

वर्मा – बस – बस । यह जबान की कतरनी तो करो बन्द और यह बताओ, उस लडकी ने इससे क्या कहा था?

सुनीता – उसने .. . .उसने कहा था सर . . जो प्राय हर प्रेमिका अपने प्रेमी की परीक्षा लेने के लिए कहा करती है ।

वर्मा – कहती होगी ! हमें उनसे क्या लेना ! उसने क्या कहा , यह पढकर सुनाओ।

सुनीता – उसने सर , एक गलती की ।

वर्मा – क्या?

सुनीता – उसने अपने प्रेमी को यह चुनौती दे डाली कि जो अपनी प्रेमिका को अधिक से अधिक खुश रखने के लिए दिन मे तारे लाने का साहस न जुटा सके , उसे प्रेमी कहलाने का ही नहीं , आदमी कहलाने का भी हक नहीं है।

वर्मा – तो इसका मतलब है , यह उसकी चुनौती स्वीकर करने मे टोटली फेल्योर रहा ।

सुनीता – फेल्योर नहीं सर , यह कहिये कि यह बडा लक्की रहा ।

वर्मा – लक्की कैसे?

सुनीता – सर , दिन में जब इसे कहीं तारे निकले दिखाई नहीं दिये तो अपना 'दी एण्ड' करके इसने इतिहास के उन युग पुरुषो की श्रेणी मे अपना नाम दर्ज करा लिया , जहा पहले से ही लैलामजनू , शीरीं – फरहाद, हीर – राझा , रामू – चनणा और ढोला – मारू जैसे प्रेमी दिग्गजो के नाम स्वर्णाक्षरों मे अंकित है ।

वर्मा – उन सबके साथ तो उनकी प्रेमिकाओं का भी समर्पण रहा ।

सुनीता – इस शहीद की माशूका भी इसकी जरूर सहगामिनी बनेगी । आप देख लेना । अभी उसे इसकी इत्तला नहीं मिली । वरना वह भी इस समय इसके साथ ही लेटी हुई दिखाई देती । (रूककर) सर , आप मेरी बात समझ रहे है न !

वर्मा – समझ रहा हू । अभी तो लोगों से आखें बचाकर केवल इसी ने कूच किया है , बाद में इसकी माशूका को भी , एक दिन , इसी रूप में यहा लाया जायेगा ।

सुनीता – ऐसे मामलो में प्राय. यही होता है , सर ।

वर्मा – लेकिन इसने सुस्साइड किया कैसे , इस बात का रिपोर्ट में कोई जिक्र है या नहीं?

सुनीता – जिक्र है सर । अभी बताती हूं । अरे हां , याद आया । इसके सुस्साइड करने का तरीका तो बडा ही दिलचस्प है। आप सुनेगे तो खुशी से झूम उठेंगे ।

वर्मा – (व्यंग्य में मुस्कराते हुए) अच्छा !

सुनीता – जी , सर । प्रेमिकाओ को शायद यह तरीका पसन्द न आये , लेकिन प्रेमियों के लिए तो यह वाकई प्रेरणादायक रहेगा । हो सके तो सर , इस पर आप भी गौर फरमाइयेगा ।

वर्मा – क्या SSS !!!

सुनीता – (अपनी बात को हिचकिचाहट के साथ सुधारती हुई) जी . . जी मेरे कहने का मतलब है कि ऐसे मामलो मे प्रेमियो के मस्तिष्क का बारीकी से रिसर्च किया जा सकता है ।

(अचानक बाहर से एक सरदारजी का प्रवेश जो मानसिक रोगी है)

सरदरजी – फिर तो डाक्टर साहब , आप पहले मेरे पर ही रिसर्च कीजिए ।

वर्मा – आप श्रीमानजी कौन है?

सुनीता – जी , लगता है यह मानसिक रोगी है जो शायद अपने वार्ड की सिस्टर को चकमा देकर बाहर निकल गया और इधर चला आया ।

सरदारजी – सिस्टर तो साहब , मेरी उसी दिन मर गई जब मैने अपनी हीर से इश्क की शुरूआत की और जिसको वह बर्दाश्त नहीं कर सकी ।

वर्मा – क्या नाम है तुम्हारा ?

सरदारजी – राझा।

वर्मा – (चौंकते हुए) राझा !

सरदारजी – जी । हीर के इश्क मे नीचे से ऊपर तक खालिस दीवाना हू ।

वर्मा – ओह ! तो तुम्हीं हो हेमलता को फोन करने वाले ?

सरदारजी – हेमलता नहीं साहब , हीर कहिये । हेमलता तो वह अपने हस्बैड के लिए होगी , मेरे लिए तो वह मेरी हीर है , हीर ।

सुनीता – तुम जानते हो , हेमलता मैडम के हस्बैड कौन है ?

सरदारजी – मुझे क्या जरूरत है उन्हें जानने की । जब मैने अपनी हीर को ही नहीं देखा तो भला उसके हस्बैड को जानने या देखने से क्या मतलब?

सुनीता – यानि कि तुमने कभी हीर को देखने की चेष्टा ही नहीं की?

सरदारजी – मिलने की चेष्टा तो वह करे जिसके मन में कोई खोट हो । मेरा प्रेम तो एकदम प्योर है। साहब , मै पेट का पापी नहीं हू जिसे हीर को अपवित्र करने की भूख हो । मै हीर के तिरस्कार को भी प्रेम का प्रतीक समझने वाला राझा हू ।

वर्मा – क्या अब भी अपनी हीर को फोन करते हो?

सरदारजी - कहा साहब ! उसका तो फोन ही काट दिया गया । तभी तो अपने दिल का यह कबूतर आकाश मे उड जाने को हर वक्त फडफडाता रहता है!

सुनीता - ठीक है। अब अपने को और कहीं जाकर गुटरगू करने की छूट दो और यहा से चलते बनो ।

सरदारजी - अच्छा जी । सत्श्री अकाल ।

(प्रस्थान)

सुनीता - देखा सर । यह भी किसी दिन रिसर्च के काम जरूर आयेगा ।

वर्मा - आता रहेगा । पहले तुम इसके सुस्साइड करने के तरीके को , जो दिलचस्प बता रही थी , उसके बारे मे बताओ ।

सुनीता - लीजिए सर । रिपोर्ट के अनुसार यह महाशय कल रात को कब्रिस्तान में किसी एक सुरक्षित जगह पर अपनी प्रेमिका को याद करते हुए और उसकी चुनौतियो को दुहराते - दुहराते ऐसी तल्लीनता के साथ सोये कि फिर उठने का कभी नाम ही नहीं लिया ।

वर्मा - तब जरूर कोई न कोई प्राणघातक टैबलेट लेकर सोया होगा !

सुनीता - यह तो सर , तब पता लगेगा , जब पोस्टमार्टम होगा !

वर्मा - इसलिए अब तुम सबसे पहले यह काम करो कि डाक्टर माथुर को कहकर इस लाश का पोस्टमार्टम कराओ ।

सुनीता - पोस्टमार्टम रूम में सर , पहले उन शवों को निपटाना है जो डॉ कोठारी के वार्ड से भेजे गए हैं। इस बारे में डा माथुर से मै पहले ही पूछ चुकी हूं।

वर्मा - यह कोई बात नहीं हुई। वार्ड से भेजे गये शवों का पोस्टमार्टम तो बाद में भी हो सकता है। पहले हमारे इस शव का पोस्टमार्टम होना चाहिए। यह सुस्साइड का केस है और पुलिस बाहर बैठी हुई है। उसे कौन जवाब देगा?

सुनीता - आप कहते है तो सर , डा माथुर को फोन से फिर पूछ लेती हू।

वर्मा - उन्हें मेरी तरफ से जोर देकर कहो कि पहले हमारा पोस्टमार्टम होना चाहिए।

सुनीता - (फोन उठाकर हाथ में रखे हुए ही) लेकिन सर , मै और आप तो अभी अलाइव है।

वर्मा - क्या SSS !!!

सुनीता - (फोन वापस रखती हुई) सॉरी सर ! (कहती हुई स्वयं ही स्टेक्चर को बाहर ले जाने के लिए खिसकाने लगती है)

वर्मा - ठहरो । पहले हमें इस डैड बॉडी का चेहरा तो देखने दो । वरना् पुलिस द्वारा खींची गई इसकी फोटोग्राफ्स की तस्दीक कैसे करेगे ?

सुनीता - हां , यह तो सर बहुत जरूरी है। मै तो भूल ही गई । अभी देख लेते है। (कहकर फुर्ती से कफन उठाती है कि शव का चेहरा देखकर यकायक आखें पथराकर फटी की फटी रह जाती है)

वर्मा - अरे - अरे , क्या हुआ?

सुनीता - । (कुछ प्रत्युत्तर न देकर एकदम गुमसुम सी हो जाती है)

वर्मा - कौन है यह? (आगे बढकर चेहरा देखने के बाद) अरे , यह तो तुम्हारा नसरूद्दीन है जो प्राय यहा आता रहता था।

सुनीता - (कुछ खोयी - खोयी सी) हा , जरूर आता होगा । लेकिन अब नहीं आयेगा ।

वर्मा - सिस्टर सुनीता ।

सुनीता - जी ।

वर्मा - कुछ होश मे हो?

सुनीता - जी । तभी तो इसे पोस्टमार्टम के लिए ले जा रही हू ।

वर्मा - तुम रहने दो । किसी और को कहकर इसको वहा भिजवा देते है ।

सुनीता - नहीं सर । मेरे कारण ही तो इसने आशिक - ए - शहीदो मे अपना नाम जोडा है। मै तो बहुत भाग्यशाली हू कि मेरे पीछे कोई शहीद तो हुआ।

वर्मा - इसका मतलब है , हम तुमसे भी अब हाथ धो बैठेगे !

सुनीता - । (मौन रहकर डा. वर्मा की ओर देखने लगती है)

वर्मा - क्यो , आशिक का शहीद होना तो तभी सार्थक होता है जब उसकी माशूका उसकी अनुगामिनी बने । लेकिन , मेरा इस मामले मे अपना कुछ अलग सोच है। मेरा कहना है , जब तक इसका पोस्टमार्टम न हो जाय , तब तक तुम्हें धैर्य रखना चाहिए । पास्टमार्टम मे आत्महत्या की जगह यदि कहीं हत्या किये जाने का केस सामने आ गया तो तुम्हारा इसे आशिक -ए - शहीद कहने का नारा फिस्स हो जायेगा और तुम बच जाओगी।

सुनीता - हा , यह आपने ठीक कहा । इतना तो मैने सोचा ही नहीं!

वर्मा - भावुकता कभी - कभी काले अध्याय मे बदल जाती है।

सुनीता - अच्छा किया , आपने मुझे सतर्क कर दिया ।

वर्मा - इसलिए पहले इसका पोस्टमार्टम हो । (सुनीता से व्यंग्य वाणी में पूछते हुए) क्या हो . ?

सुनीता - ..... पोस्टमार्टम । (कहती स्टैक्चर धकेलती बाहर निकल जाती है और डा वर्मा मुस्कराकर रह जाते है)

❁❁❁❁

❁❁❁

❁❁

5. अप्रेल फूल

पात्र परिचय –

1.	सुनील	–	एक प्रोफेसर
2.	सुनीता	–	सुनील की पत्नी
3.	अनिल	–	सुनील का पुत्र
4.	मोनिका	–	अनिल की प्रेयसी
5.	ममता	–	मोनिका की मम्मी

एक

(सुनील का घर । अपने कमरे में टेबल लैम्प के प्रकाश में सुनील कॉलेज की कापियां जांच रहा है। अन्दर का फाटक खुला है। सुनीता चौखट पर आकर दस्तक देती है ।)

सुनील - दस्तक सुन ली । गिलास रख जाओ ।

(सुनीता अन्दर से आकर मेज पर दूध की गिलास रख जाती है। सुनील उठकर पहले ट्रांजिस्टर ऑन करता है , फिर गिलास लेकर दूध पीने लगता है। इस बीच ट्रांजिस्टर से ' जहर मांगा था जुदाई तो नहीं मांगी' गीत बजता रहता है।)

सुनील - (ट्रांजिस्टर ऑफ करके आवाज देता है) अनिल ।

अनिल - (अन्दर से ही) आया पापा । (प्रवेश करते हुए) कहिए ।

सुनील - यह गिलास ले जाओ । अपनी मम्मी से कहो , आज सहकारी बाजार जाये तो केवल अपने ही कपड़े खरीदे , मेरे लिए नहीं । जैसा कि यह किसी को फोन पर बतला रही थी । मुझे न पेंट चाहिए , न बुशर्ट ।

अनिल - अच्छा जी । (प्रस्थान)

सुनील - (स्वगत) मेरे लिए यदि कुछ खरीदकर लायेगी तो सब जगह इस तरह ढिंढोरा पीटती रहेगी कि जैसे मुझे तो मारकेटिंग करना आता ही नहीं। वैसे भी , यह सब ऊपरी दिखावा है। बिडला बैंक के उस आर.के. की बर्थ डे होगी , जिसके लिए कोई तोहफा लाना होगा । इसलिए जेंट्स सूट खरीदने का कोई बहाना तो चाहिए । मै सब जानता हूं । वह सोचती है कि छात्रों के साथ रोज माथा खपाने वाले के भेजे में सिवाय पढने-पढाने के , और कोई बात उठती ही नहीं है। मगर यह उसका भ्रम है। असली चोर थानेदार के आगे कोई भी सही बात कहने से झिझकता है। यही हालत सुनीता की है। तीन महीने हो गये मुझे तन्हाइयों में काटते, उसने एक दिन भी पास आकर यह नहीं पूछा की आप मुझसे किस बात पर खफा है ! बल्कि वह तो खुश है। मेरे पास रोज रोज आने से छुटकारा जो मिला । मैने तो केवल बतलाना ही छोडा हैं उसने तो मेरे सामने आना ही छोडा दिया । यही अपने आप में एक सबूत है कि दाल मे कहीं काला है , जो समय आने पर स्वतः ही सामने आ जायेगा। (कहते हुए पुनः कापियां जांचने मे लीन होता है कि मंचीय प्रकाश धीरे- धीरे विलुप्त होने लगता है।)

दो

(वहीं कमरा । सुनील दर्पण के आगे गले की टाई ठीक कर रहा है कि बाहर से अनिल मुंह से सीटी बजाता हुआ आता है। पीछे पीछे मोनिका ।)

सुनील – (टाई ठीक करते – करते) कहां से आ रहे हो अनिल ?

अनिल – ट्यूशन सेंटर से।

सुनील – (मुडते हुए) घर मे घुसने का यह बेहुदा तरीका कहां से सीखा? क्या ट्यूशन सेंटर पर यह भी सिखाया जाता है ?

अनिल – (कान पकडते हुए) सॉरी पापा ।

सुनील – (मोनिका के लिए) यह कौन है ?

अनिल – मोनिका ।

सुनील – तुम्हारे साथ यहा कैसे ?

अनिल – यह भी मेरे साथ ट्यूशन पढने जाती है।

सुनील – और .. . .?

अनिल – .. . . . यह बहुत ही सीधी और सुशील है ।

सुनील – ठीक तुम्हारी तरह ?

अनिल – नहीं , मुझसे भी अच्छी ।

सुनील – फिर तो बहुत ही खुशी की बात है।

अनिल – (झिझकते हुए) पापा , एक बात कहू ? बुरा तो नहीं मानेंगे ?

सुनील – मुझे पता है तुम क्या कहना चाहते हो ? सावन आते ही जब घटाये उमडने लगती है तो वे किसी से छिपी नहीं रहती।

अनिल – तव तो आप सब कुछ जान गये होगे ?

सुनील – क्यों नहीं ?

अनिल – आप कहें तो .. .. ।

सुनील – ....मै कहने वाला कौन होता हूं? जो कुछ कहना है , अपनी मम्मी से कहो । वही इस घर की महारानी है।

अनिल – लेकिन मम्मी तो अभी यहां है नहीं !

सुनील – तो मै क्या करु ? वो आये , तब तक ठहरो । मै उसके काम में को
दखल नहीं देना चाहता ।

अनिल – जी .. . ।

सुनील – . ..फिर?

अनिल – और तो कुछ नहीं यह बार – बार यहा आ नहीं सकती। क्योंकि य
शहर के उस पार रहती है।

सुनील – फिर तो अपनी मम्मी से तुम इसे आज ही मिलवा दो । वह अभी सब्ज
लेने गई है। बस लौटने ही वाली है । मुझे तो अभी कॉलेज जाना है

अनिल – कुछ तो आप भी सुन लेते ।

सुनील – नहीं । (प्रस्थान)

अनिल – मम्मी तो तुम्हें देखते ही प्रश्नों की झडी लगा देगी ।

मानिका – तो क्या हुआ? हमारे पास हर बात का जवाब है। फिर , हम कोई चोरी
तो कर नहीं रहे ।

अनिल – चोरी – चोरी मिलना भी तो चोरी है ।

मोनिका – ऐसी बात है तो तुम्हारे पापाजी ने हमें टोका क्यों नहीं?

अनिल – इसलिए कि ये जवान दिलो की धडकनो से परिचित है ।

मोनिका – कैसे ?

अनिल – मनोविज्ञान के प्रोफेसर जो ठहरे । फिर , इस घर की सुप्रीमो मेरी मम्मी
है जो अपने किस्म की एक ही है। हठ करने मे उनका कोई मुकाबला
नहीं।

मोनिका – क्या हठ किया उन्होंने ?

अनिल – दो – तीन महीने हुए पापा से किसी बात पर खटपट हुई होगी । बस,
उसने किनारा कर रखा है इनसे ।

मोनिका – आपस में कुछ बतियाते तो होंगे ?

अनिल – कहा न , छत्तीस का आकडा मम्मी ने ऐसा फिट किया है कि पापा उनसे
बात करने से ही कतराते हैं।

मोनिका – जबकि रहते दोनों एक ही छत के नीचे है !

अनिल – यहीं तो अजूबा है ।

मोनिका - नौंक झौंक तो मेरे मम्मी - पापा में भी खूब होती है । मगर ऐसा नहीं कि पीठ करके ही बैठ जायें।

अनिल - तो समझो , ये बहुत महान है ।

मोनिका - (बाहर से किसी के अन्दर आने की आहट सुनकर) लगता है , तुम्हारी मम्मीजी आ गई ।

अनिल - (ध्यान से आहट सुनते हुए) शायद वही हों ।

सुनीता - (अन्दर प्रवेश करके) अनिल , तुम कब आ गये ?

अनिल - अभी थोडी देर पहले ही । पापा तब कॉलेज जाने को ही थे ।

सुनीता - यह कौन है ?

अनिल - मेरी ट्यूशन की सहपाठी ।

सुनीता - क्या नाम है ?

मोनिका - मोनिका ।

सुनीता - कहां रहती है ?

मोनिका - जी , लक्ष्मीनगर में ।

सुनीता - वो तो यहां से बहुत दूर है ।

मोनिका - जी ।

अनिल - इसके पिताजी बिडला बैंक में काम करते है ।

सुनीता - बिडला बैंक में !

मोनिका - जी !

सुनीता - क्या नाम है उनका ?

मोनिका - श्री राम किशोर शर्मा ।

सुनीता - वहा एक आर.के साहब भी तो काम करते है ।

मोनिका - उनका तो मुझे पता नहीं ।

सुनीता - क्या नाम बताया अपना ?

मोनिका - मोनिका । अनिल और जाते हैं।

सुनीता - यह तो अच्छी बात है ।

अनिल – मम्मी मै इसको आपसे मिलवाने लाया हू ।

सुनीता – क्यों ! कोई खास बात है ?

अनिल – यहीं समझ लो । हम दोनों के विचार एक – दूसरे से बहुत मिलते है । स्वभाव भी इसका मेरे जैसा ही है ।

सुनीता – तब तो अच्छा संयोग है ।

अनिल – इससे मेरा रोज मिलना होता है ।

सुनीता – ट्यूशन सेंटर पर ही न ! या कहीं और भी ?

अनिल – पहले तो ट्यूशन सेटर पर ही मिलना हो जाता था । अब तो हम बातें करते–करते कभी पब्लिक पार्क का भी चक्कर लगा आते है ।

सुनीता – *हु ऽऽ ! मतलब तुम दोनों एक – दूसरे के काफी नजदीक आ रहे हो !*

अनिल – बात तो यही है ।

सुनीता – कुछ मोनिका को भी तो बोलने दो ।

मोनिका – आटी , अनिल जो कह रहा है , सही है ।

सुनीता – तो क्या एक ही मजिल के राही बनने का इरादा कर लिया?

अनिल – अब कुछ भी समझो मम्मी । हम दोनों ने साथ – साथ जीने – मरने का संकल्प लिया है ।

सुनीता – इतने आगे मत जाओ । अभी तुम दोनों की उम्र ऐसी नहीं है कि अपना फैसला खुद कर सको ।

मोनिका – आटी ठीक कह रही है । घर बातों से नहीं बसता । नींव में ठोस पत्थर लगाने पड़ते है ।

सुनीता – लगता है , बहुत समझदार हो ।

मोनिका – अपनी मम्मी से जो सीखा , वो बता रही हू ।

सुनीता – खैर , अभी तुम नजदीकियो के घेरे से जितना दूर रहोगे , उतना ही अच्छा है । सीमा कोई भी हो , उसका अतिक्रमण करना शोभा नहीं देता।

मोनिका – वैसे भी , सामाजिक मर्यादाओं को तोडने का हमें साहस भी नहीं है ।

सुनीता – फिर कभी दुस्साहस भी मत करना । अच्छा बैठो, मै चाय बनाती हू ।

मोनिका – नहीं आंटी, अब मुझे घर जाना है । चाय फिर कभी आकर पी लूगीं ।

सुनीता – जैसी तुम्हारी इच्छा ।

मोनिका – अच्छा , चलती हू । नमस्कार ।

सुनीता – नमस्कार ।

(मोनिका के प्रस्थान करने के साथ मंच अधेरे में घिरना शुरु हो जाता है ।)

तीन

***(सुनील का वही घर । मोनिका की मम्मी ममता* सोफे पर बैठी है । सुनील किसी को फोन कर रहा है।)**

सुनील – (फोन पर) कौन प्रोफेसर वर्मा हा मै सुनील बोल रहा हू घर मे कोई मेहमान आये हुए है कॉलेज जरा देर से आऊगा . नहीं नहीं आऊगा जरूर. . . . .हा , हा, आप कोई ख्याल न करे बस इसीलिए फोन किया था .. धन्यवाद । (फोन रखकर ममता से) अच्छा तो मोनिका आपकी इकलौती लडकी है ।

ममता – जी । इसीलिए मै उसकी खुशिया बटोरने में कोई कमी नहीं रखना चाहती।

सुनील – हर मां का यही फर्ज होना चाहिए ।

ममता – शुरु – शुरु मे तो मैने उसकी बात पर अधिक ध्यान नहीं दिया। लेकिन अब जब अनिल को जॉब मिल गई है तो फिर बात को अधिक लबी खींचना ठीक नहीं समझा । यही सोचकर मै आपके पास आई हू ।

सुनील – मोनिका के पापा साथ में नहीं आये ?

ममता – साथ तो वे भी आ रहे थे , लेकिन अचानक कोई काम आ पडा । इसलिए फिर रुक गये ।

सुनील – वे काम कहा करते है ?

ममता – बिडला बैक में ।

सुनील – वहां तो आर के साहब भी है ।

ममता – हा–हा , है न । आप उन्हें कैसे जानते हैं?

सुनील – जानता तो नहीं हूं , लेकिन उनका नाम बहुत सुना है । कौन हैं ये ?

ममता – कौन है वे .   सुनकर हैरान मत होइयेगा ।

सुनील – नहीं – नहीं   ।

ममता –   वे मेरी मोनिका के पापा है ।

सुनील – सच !

ममता – जी । मुझे तो यह भी पता है कि आप उनके नाम से कैसे परिचित है?

सुनील – आपको कैसे पता ?

ममता – यह भी बताती हू , बस आप सुनते रहिये ।

सुनील – सुनाइये ।

ममता – दरअसल आर के साहब कुछ फन्नी टाइप के है । किसी के साथ भी, मजाक करने से बाज नहीं आते । इसी कारण मै उनको अपने साथ ले जाने मे हिचकती हू ।

सुनील – ऐसी क्या बात है ?

ममता – अजी , आप नहीं जानते उन्हें । कभी – कभी तो वे हसी ठिठोली करते करते हद ही लाघ जाते है ।

सुनील – तब तो बहुत दिलचस्प आदमी है ।

ममता – लेकिन मुझे तो उनके कारण कहीं – कहीं नीचे देखना पड जाता है न! अजी, साथ न आये तो अच्छा ही हुआ। एक दिन उन्होंने सुनीता जी को भी नहीं बक्शा था ।

सुनील – वो कैसे ?

ममता – (हंसी बिखेरती सी) अब क्या बताऊं भाईसाहब ? कहने जैसी बात नहीं है ।

सुनील – फिर भी . ...।

ममता – . . . . . . .बात यह है कि सुनीता जी बैक के काम से प्राय उनके पास आती जाती थीं । वे ठहरे मजाकिया । उन्हें सुनीता जी की गम्भीर मुखाकृति बहुत अखरती थी ।

सुनील – हां , वह कुछ है भी इसी तरह की ।

ममता – पीछे एक अप्रेल को उन्होंने सुनीता जी को ' अप्रेल – फूल ' बनाने की नीयत से एक लंबा – चौडा प्रेम–पत्र लिख भेजा । सुनीताजी के पास जब वो पहुंचा तो पढकर उन्हें बहुत हंसी आई ।

सुनीता – जैसी तुम्हारी इच्छा ।

मोनिका – अच्छा , चलती हू । नमस्कार ।

सुनीता – नमस्कार ।

(मोनिका के प्रस्थान करने के साथ मंच अंधेरे मे घिरना शुरु हो जाता है ।)

तीन

(सुनील का वही घर । मोनिका की मम्मी ममता सोफे पर बैठी है । सुनील किसी को फोन कर रहा है।)

सुनील – (फोन पर) कौन प्रोफेसर वर्मा .हा मै सुनील बोल रहा हू . घर में कोई मेहमान आये हुए है . . कॉलेज जरा देर से आऊगा . . नहीं नहीं आऊगा जरूर ... ...हां , हां, आप कोई ख्याल न करे . . बस इसीलिए फोन किया था . धन्यवाद । (फोन रखकर ममता से) अच्छा तो मोनिका आपकी इकलौती लडकी है ।

ममता – जी । इसीलिए मै उसकी खुशिया बटोरने मे कोई कमी नहीं रखना चाहती।

सुनील – हर मा का यही फर्ज होना चाहिए ।

ममता – शुरु – शुरु में तो मैने उसकी बात पर अधिक ध्यान नहीं दिया। लेकिन अब जब अनिल को जॉब मिल गई है तो फिर बात को अधिक लबी खींचना ठीक नहीं समझा । यही सोचकर मै आपके पास आई हू ।

सुनील – मोनिका के पापा साथ में नहीं आये ?

ममता – साथ तो वे भी आ रहे थे , लेकिन अचानक कोई काम आ पडा । इसलिए फिर रुक गये ।

सुनील – वे काम कहा करते है ?

ममता – बिडला बैक मे ।

सुनील – वहा तो आर के. साहब भी है ।

ममता – हा-हा , है न । आप उन्हें कैसे जानते है?

सुनील – जानता तो नहीं हू , लेकिन उनका नाम बहुत सुना है । कौन है वे ?

ममता – कौन है वे सुनकर हैरान मत होइयेगा ।

सुनील – नहीं – नहीं ।

ममता – वे मेरी मोनिका के पापा है ।

सुनील – सच ।

ममता – जी । मुझे तो यह भी पता है कि आप उनके नाम से कैसे परिचित है?

सुनील – आपको कैसे पता ?

ममता – यह भी बताती हू , बस आप सुनते रहिये ।

सुनील – सुनाइये ।

ममता – दरअसल आर के साहब कुछ फन्नी टाइप के है । किसी के साथ भी, मजाक करने से बाज नहीं आते । इसी कारण मै उनको अपने साथ ले जाने में हिचकती हूं ।

सुनील – ऐसी क्या बात है ?

ममता – अजी , आप नहीं जानते उन्हें । कभी – कभी तो वे हसी ठिठौली करते करते हद ही लाघ जाते है ।

सुनील – तब तो बहुत दिलचस्प आदमी है ।

ममता – लेकिन मुझे तो उनके कारण कहीं – कहीं नीचे देखना पड जाता है न। अजी, साथ न आये तो अच्छा ही हुआ। एक दिन उन्होंने सुनीता जी को भी नहीं बक्शा था ।

सुनील – वो कैसे ?

ममता – (हंसी बिखेरती सी) अब क्या बताऊं भाईसाहब ? कहने जैसी बात नहीं है ।

सुनील – फिर भी. .. . .।

ममता – . .. . बात यह है कि सुनीता जी बैक के काम से प्राय· उनके पास आती जाती थी । वे ठहरे मजाकिया । उन्हें सुनीता जी की गम्भीर मुखाकृति बहुत अखरती थी ।

सुनील – हा , वह कुछ है भी इसी तरह की ।

ममता – पीछे एक अप्रेल को उन्होंने सुनीता जी को ' अप्रेल – फूल ' बनाने की नीयत से एक लंबा – चौडा प्रेम-पत्र लिख भेजा । सुनीताजी के पास जब वो पहुचा तो पढकर उन्हें बहुत हंसी आई ।

सुनील - वो समझ गई कि आर के साहब ने उसे अप्रेल फूल बनाया है ।

ममता - और उसी प्रेम-पत्र के जरिये सुनीता जी ने आगे किसी और को अप्रेल-फूल बना डाला ।

सुनील - क्या ऽऽ !!

ममता - हा जी । मगर , आप क्यो चौक रहे है ?

सुनील - नहीं तो वैसे ही . ।

ममता - खैर जाने दीजिए । हा. .. (सोचती हुई) क्या बात चल रही थी .।

सुनील - . . आर के साहब . . ..।

ममता - हा , उनको फिर कभी साथ लाऊंगी । आज तो मैं अकेली ही अपनी बेटी के लिए हाथ फैलाने आ गई हूं । अनिल जैसा दामाद मिल जाये तो हमारी बेटी का भाग्य सवर जाये ।

सुनील - देखिये , रिश्ते के बारे में मै बिल्कुल अनाडी हू । इसके लिए सुनीता ही सक्षम है । आप अपनी बात उसके सामने रखिये । मै समझता हूं, वह कभी ना नहीं करेगी ।

ममता - उनसे तो मुझे मिलना ही है । किन्तु आप भी तो हमारी बात को कुछ बल दीजिए ।

सुनील - मेरी तरफ से आप निश्चिंत रहिये । वैसे सुनीता को जब यह पता लगेगा कि आर.के साहब के यहा उसके लडके के रिश्ते की बात उठी है तो स्वयं फूली नहीं समायेगी ।

ममता - ऐसी बात है तो मै निहाल हो जाऊंगी । बस , अब तो यह बता दीजिए कि सुनीता जी यहां कब मिलेगी ?

सुनील - अभी तो वह किसी काम से अपनी सहेली के यहा गई है । वहां से बैंक जायेगी। शाम को मिल जायेगी ।

ममता - फिर ठीक है , अभी मैं चलती हू । नमस्ते ।

सुनील - नमस्ते ।

(ममता का प्रस्थान)

सुनील - (स्वगत) मै तो अनजाने में ही सुनीता को शक के घेरे में घिरी हुई देखता रहा। अच्छा हुआ , मोनिका की मम्मी ने मेरी गलत धारणाओं को बातों ही बातों में उलट दिया । वरना मै तो अभी तक यही समझता रहा कि आर के. के साथ सुनीता का कोई लफडा है । बेमतलब ही मै

अपने को सन्देह के साये में उलझाता रहा । मगर एक बात बहुत हैरानी की है । सुनीता ने मुझसे यह कहानी इतने दिनों तक छिपायी क्यों ? कहीं ऐसा तो नहीं है कि वह मेरी परीक्षा ले रही हो ? ममताजी ने एक बात यह भी तो कही थी कि उस कथित प्रेम-पत्र के माध्यम से सुनीता ने किसी और को अप्रेल-फूल बना डाला । कहीं वो मै तो नहीं हू ? अब तो , वैसे मै भी मानता हू कि उस प्रेम-पत्र को पढकर मुझे सुनीता पर शक नहीं करना चाहिए था । उसके बारे में यदि मै कुछ कुरेदकर पूछता तो वह स्वयं ही सही बात बता देती । लेकिन मुझ पर तो भ्रम का भूत ऐसा सवार हुआ कि सुनीता की हर बात मुझे अपने विपरीत लगने लगी।

खैर , अब आगे क्या किया जाय ? पश्चाताप करने का कोई उचित बहाना तो ढूंढना ही पडेगा । गलती मेरी और दोष उसे देता रहा, इससे बडी त्रासदी और क्या हो सकती है ?

अब तो एक ही रास्ता है , इस भ्रमित कथा का जब सच सामने आ गया तो फिर 'कल' को भूलकर 'आज' को आल्हादित करने का उपक्रम किया जाय ।

(इसी समय बाहर से सुनीता आकर मेज पर अपना पर्स पटकती है)

सुनील – अचानक वापस कैसे ?

सुनीता – वैसे ही ।

सुनील – मोनिका की मम्मी आई थी ।

सुनीता – रास्ते में मिल गई ।

सुनील – क्या बात है , तबियत तो ठीक है ?

सुनीता – नहीं , सिर मे थोडा दर्द है ।

सुनील – कहो तो बाम लगा दूं ?

सुनीता – नहीं मै लगा लूगी ।

सुनील – मेरी समझ मे ऑक्सालजिन की एक टेबलैट भी ले लो । जल्दी ही ठीक हो जाओगी । मै अन्दर से लाकर देता हूं ।(कहकर अन्दर जाता है)

सुनीता – (थोड़ी मुस्कराती हुई) आज अचानक यह प्रेम कहा से उमड आया? लगता है , ममताजी ने परदे को परे हटा दिया होगा।

सुनील – (टैबलैट लाकर देता हुआ) यह लो । पानी के साथ ले लो । (पानी की गिलास भी लाकर हाथ में पकड़ाता है)

सुनीता – क्या यह टैबलैट लेनी जरूरी है ?

सुनील – हा । ले-लो – ले-लो । थोडी ही देर में आराम आ जायेगा ।

सुनीता – (आश्चर्य मिश्रित हंसी के साथ) आज आपको यह क्या हो गया है ?

सुनील – तनाव के तिनकों को बुहारने की एकाएक सनक चढ गई ।

सुनीता – मै समझी नहीं ।

सुनील – जानते हुए भी अनजान बनने के इस नाटक को आज समाप्त करना है।

सुनीता – मतलब ।

सुनील – मोनिका की मम्मी की बातो से ' अप्रेल फूल ' बनाने का सारा किस्सा सामने आ गया ।

सुनीता – ओह । तो यह बात है ।

सुनील – तुम्हें तुम्हारे सयम की दाद देता हूँ ।

सुनीता – फिर तो.. . . . .!

सुनील – एक चाय का दौर हो जाये ।

सुनील – सच ।

सुनील – हा ।

सुनीता – चाय बनेगी तब तक कॉलेज जाने में देर नहीं हो जायेगी ।

सुनील – यह बाद की बात है । पहले ....। (हाथ आगे बढाता है)

सुनीता – . . ..(हाथ में हाथ लेकर) यह लो ।

(इसी के साथ मच पर अंधेरा फैलने लगता है ।)

❖❖❖❖❖❖
❖❖❖❖
❖❖❖
❖

6. समापन किस्त

पात्र परिचय –

1.	उमेश	–	एक प्रेमी
2.	युवती	–	उमेश की प्रेमिका

(दिन का समय । उमेश अपने ड्रांइग रूम में सोफे पर लेटा कोई मैग्जिन पढ़ रहा है कि बाहर दरवाजे पर कोई दस्तक देता है)

उमेश – (लेटे–लेटे ही) कौन ! दरवाजा खुला है । अन्दर आ जाइये ।

(बुरका पहने एक युवती अन्दर प्रवेश करती है)

युवती – नमस्ते जी ।

उमेश – (उठकर संभलते हुए) नमस्ते । अरे , तुम आज फिर आ गई ।

युवती – जी ।

उमेश – लेकिन कल मैने मना किया था न कि मेरे पास वक्त नहीं है तुम्हारी बहन को पढाने के लिए ।

युवती – (लापरवाही से) जी ।

उमेश – कल कहा था या नही ?

युवती – जी ।

उमेश – यह जी – जी क्या लगा रखी है ! मुंह से बोला नहीं जाता ?

युवती – ....। (कोई जबाब नहीं देती)

उमेश – तो , जाओ यहां से । आईन्दा यहा आने की फिर कोशिश मत करना।

युवती – .. ..। (कोई प्रत्युतर न देकर मुंह नीचे किए वहीं खड़ी रहती है)

उमेश – (कड़कते हुए) कुछ सुना तुमने ! मैं क्या कह रहा हू ?

युवती – जनाबे अली , जरा धीरे बोलिये । (कानों पर हाथ रखती हुई) आप जब भी ऊंची आवाज में बोलते है तो परदे फट जाने के डर से मै अपने कान बन्द कर लेती हूं । इसीलिए तो कल आपने क्या कहा , वो मै सुन ही नहीं पाई।

उमेश – क्या ऽऽ !!

युवती – जी , तेज बोलना और तेज आवाज सुनना मेरे वश की बात नहीं है ।

उमेश – जरा , मेरी तरफ देखना ।

युवती – (शर्माती हुई) सर , यह आप क्या कह रहें है । आपके सामने आख मिलाकर बात करु, क्या यह कोई शोभा देगा ?

उमेश – ओह ! लेकिन देखने के लिए तो कोई मना नहीं है?

युवती – जी , आपको देखते हुए मुझे शर्म आती है ।

उमेश – क्या ऽऽ !! फिर से कहना ।

युवती – सर , मेरा मतलब है आपको देखते ही मै पानी – पानी हो जाती हू ।

उमेश – अच्छा। फिर तो यहा आते समय तुम्हारे दिल की धडकन भी बढ जाती होगी?

युवती – बिल्कुल यही बात है । हाथ कंगन को आरसी क्या । जरा सा पास आइये सर । धक्–धक् की आवाज कितनी तेज है, सहज ही में सुन लीजिए ।

उमेश – बडी बेशर्म हो ।

युवती – ऐसा मत कहिये सर । यदि सचमुच ही बेशर्म होती तो इस समय मेरे हाथ आपके सिर के बालों में अठखेलिया करने शुरु कर देते । क्यों झूठ तो नहीं कह रही ?

उमेश – आ गई न अन्दर की बातें होठों पर । मैं पहले ही जान गया कि तुम अपनी बहन को मेरे यहा ट्यूशन पढवाने नहीं, बल्कि उसके बहाने रोमास की अपनी हसरतें पूरी करने के लिए आना चाहती हो ।

युवती – (तुनक कर) देखिये सर , आप मुझे गलत समझ रहे हैं । मै कोई ऐसी – वैसी नहीं हूं कि हर किसी पर डोरे डालती फिरु । हा ऽऽ !!

उमेश – बातें तो तुम ऐसी ही करती हो । अब सही क्या है , तुम्हीं बता दो ।

युवती – यह सब बताने से पहले , आप हुक्म करें तो मैं अपने दिल से उठता हुआ एक प्रश्न आपसे पूछना चाहती हूं ।

उमेश – दिल से उठता हुआ. .... !

युवती – .. .. जी ।

उमेश – फिर कोई ऐसा – वैसा तो प्रश्न नहीं है ?

युवती – नहीं जी ।

उमेश – अच्छा , तो पूछो ।

युवती – क्या किसी से मोहब्बत करना कोई गुनाह है ?

उमेश – नहीं । बशर्ते उसके पीछे शुद्ध भावना हो और किसी स्वार्थ की बू न आती हो ।

युवती – सर , स्वार्थ तो हर काम मे निहित होता है ।

उमेश – रहा बात चल रही मोहब्बत की प्रेम की जो अक्सर आकर्षण के वशीभूत होकर ही किया जाता है ।उसके पीछे कोई सात्विक भावना नहीं होती ।

युवती – आपका मतलब है प्रेम पाक होना चाहिये ।

उमेश – बिल्कुल । असल में तो प्रेम किया ही नहीं जाता । वो तो स्वत हीं उपजता है ।

युवती – मै आपकी बात का समर्थन करती हू प्रेम करने की चेष्टा करना एक तरह का पाप है , धोखा है ।

उमेश – ओह ! तो तुम्हारे सोच मे इतनी गहराई भी है ।

युवती – जी । जो सच्चे दिल से प्रेम करता है , उसमे कोई छिछोरापन रहीं होता।

उमेश – जैसा , अभी थोडी देर पहले तुम्हारी बातों में था ।

युवती – नहीं , तब आपने मुझे गलत समझा सर ।

उमेश – कुछ भी हो, प्रेम के मामले में ताली एक हाथ से नहीं बजती ।

युवती – मगर मेरे लिए इस मुहावरे का कोई अर्थ नहीं है ।

उमेश – क्यों ?

युवती – क्योंकि ताली बजाने की प्रक्रिया को मै हास्यास्पद की श्रेणी में मानती हूं।

उमेश – देखो , तुम्हारी इन बेतुकी बातों से मुझे कोई लेना देना नहीं है । लेकिन एक बात कान खोलकर सुन लो । तुम जो समझती हो , मै वो नहीं हूं।

युवती – मेरी पाक नजरो मे तो सर , आप बिल्कुल वही है जो मै समझ रही हू।

उमेश – क्या मतलब ?

युवती – मतलब की गहराई तलाशने से पूर्व मै आपसे एक अतरग प्रश्न और पूछने की इजाजत चाहती हू ।

उमेश – पूछो ।

युवती – सर , सच बताइये , आपने क्या किसी के आगे कभी अपने प्रेम का इजहार किया है ?

उमेश – कभी नहीं । मै कॉलेज मे पढाने जाता हू , किसी से इश्क की ऐसी वाहियात वाते करने नहीं ।

युवती – मै कॉलेज की वात नहीं कर रही सर । मेरा कहना है , कभी तो जीवन मे आपने भी किसी से प्रेम किया होगा ?

उमेश – इस वात का जवाव देना मै कोई उचित नहीं समझता ।

युवती – (मेज पर रखी फ्रेम में मंढी फोटो देखकर) मगर मुझे जवाब मिल गया ।

उमेश – कैसे?

युवती – सुनहरे फ्रेम मे लगी यह फोटो देखकर।

उमेश – तुम्हे क्या मालूम , यह किसकी है?

युवती – किसी की भी हो । इसका यहा हसना ही , सारा राज खोल देता है। खैर , प्रेम का विषय जाने दीजिए ।

उमेश – बडी अजीब लडकी हो ।

युवती – लडकी नही , लडकी की वहन ।

उमेश – जो भी हो ।

युवती – एक छोटा सा सवाल और । आपके सिर पर कुछ–कुछ सफेदी झलकने लगी है । क्या वजह है आप अभी तक एक से दो नहीं हुए ?

उमेश – यह तुम कैसे कह सकती हो ?

युवती – आपके इस दडबे को देखकर । यहा कहीं पर भी औरत के हाथ का हुनर नजर नहीं आता ।

उमेश – बहुत समझदार हो ।

युवती – तभी तो ।

उमेश – सच तो यह है कि घर बसाने की कभी सोची ही नहीं ।

युवती – सोची भी हो तो इस फोटो जैसी मनचाही कोई लडकी नहीं मिली ।

उमेश – यही समझ लो ।

युवती – सुना है , आपके जीवन में किसी आरती नाम की लडकी ने एक दफे काफी हलचल मचा दी थी ।(फोटो की ओर सकेत करके) कहीं वो यह तो नहीं है ?

उमेश – (चौंकते हुए) यह तुमको किसने कहा ?

युवती – पीछे जब अजमेर में थी तो एक रोज कीर्ति मैडम ने कहा था ।

उमेश – कीर्ति मैडम ।

युवती – वही जो , आरती की खास सहेली रही है ।

उमेश – समझ गया । अजमेर मे उसकी नोकरी लग गई थी । लेकिन तुम उसे कैसे जानती हो ?

युवती – वहा हम दोनों एक ही स्कूल में टीचर थीं ।

उमेश – इसका मतलब है तुम भी टीचिंग जॉब में हो ?

युवती – जी । यहा मै ट्रासफर होकर आई हू ।

उमेश – बहन को भी क्या साथ ही रखती हो ?

युवती – तो और कहा रखू ? आगे – पीछे हमारे कोई नहीं है ।

उमेश – अच्छा , मुझे तो यह बताओ कीर्ति मैडम ने तुम्हें और क्या – क्या कहा?

युवती – बातें तो कई बताई , लेकिन उनमे सबसे खास बात यह थी कि आरती को आपने निराशा के सिवाय और कुछ नहीं दिया ।

उमेश – गलत ।

युवती – गलत है या सही , यह तो मै नहीं जानती . लेकिन कीर्ति मैडम का कहना है कि आरती आपको जितना चाहती थी. उस तरह आपने उसके साथ कोई हमदर्दी नहीं दिखाई ।

उमेश – मतलब .. ..।

युवती – .. .. .उसकी भुआ ने , जो उसकी एक मात्र गार्जियन थीं , जयपुर में उसे जब घर से बाहर नहीं निकलने दिया और आपसे मिलने पर पाबदी लगा दी , तब आपने अपनी ओर से उसे उस संकट से उबारने का कोई प्रयास नहीं किया ।

उमेश – मै क्या करता ? वहां क्या कोई बवडर खड़ा करता ? उसका किडनैप करने का कोई करिश्मा दिखाता या उसके घर के आगे सत्याग्रह करने के लिए बैठ जाता ? नहीं , मुझे ऐसी कोई ओछी हरकत नहीं करनी थी। न हीं मुझे मजनू बनकर इधर – उधर घूमते रहना पसन्द था ।

युवती - सच !

उमेश - हा । उस समय मुझे जो उचित लगा , मैने वही किया ।

युवती - सुना है भुआजी ने आपको पुलिस कार्रवाई की भी धमकी दी थी ?

उमेश - हा । तभी तो मुझे अपना ट्रासफर यहा करवाना पडा । मै नहीं चाहता था कि मेरे कारण आरती की प्रतिष्ठा पर कोई आच आये ।

युवती - लेकिन बाद में भी तो आपने कभी उसकी कोई सुध नहीं ली ।

उमेश - यह किसको क्या पता? कई दफे उसके घर की टोह ली , लेकिन हर बार मुझे वहां ताला ही लगा मिला । आखिर एक दिन पडोस में किसी से पूछा तो पता चला कि वो अजमेर में शिफ्ट हो गई है ।

युवती - हा , यह बात सही है। भुआजी ने उसे जयपुर मे रहने ही नहीं दिया ।

उमेश - पता नहीं , अब वह कहा है और कैसी है ? न जाने , उसके साथ क्या क्या गुजर रही होगी ?

युवती - खैर , मुझे जो मालूम हुआ , वो बताती हूं । आपके यहा आ जाने के बाद विवशता की विडम्बनाओ को झेलती हुई आरती पर पहला प्रहार तब हुआ , जब भुआजी ने अजमेर जाकर उसकी शादी एक ऐसे विधुर से कर दी जो चार बच्चों का बाप था ।

उमेश - ओह !

युवती - दूसरी चोट उसे तब लगी , जब विवाह के दूसरे ही दिन बारात लौट रही थी कि .... ।

उमेश - . ...फिर क्या हुआ ?

युवती - एक सडक दुर्घटना मे एकाएक उसका सुहाग छिन गया । हाथों की मेहदी सूखी ही नहीं कि माथे का सिन्दूर मिट गया ।

उमेश - (अपना सिर धुनते हुए) ओह !!

युवती - मौत के खूनी पजों ने जहा उसके दूल्हे को अपने आगोश में जकड लिया, वहा दुल्हन बनी आरती घायल होकर चार महीने तक अस्पताल मे पडी उसी क्रूर मौत के साथ सघर्ष करती रही ।

उमेश - ऐसा दर्दनाक हादसा हो गया और मुझे पता ही नहीं चला । कितना दुर्भाग्यशाली हूं मै !

युवती – धीरज रखिये । अब वो बिल्कुल ठीक है । गले में कुछ घाव हो गया था वो भी मिट गया ।

उमेश – अब कहा है वो?

युवती – अब तक तो अजमेर ही थी । कुछ महीने पहले, बताते है, उसका कहीं ट्रासफर हो गया । टीचर जो लग गई थी ।

उमेश – ट्रासफर कहा हुआ , कुछ पता है ?

युवती – यह तो कीर्ति मैडम ही बता सकती है ।

उमेश – उसकी भुआजी ।

युवती – वे भला उसे कहा छोडने वाली थी । विधवा होने के बाद तो वे उसके साथ चींचड की तरह बराबर चिपकी रहीं ।

उमेश – मुझे पता है, उनके पास रहम-दिल तो था ही नहीं ।

युवती – वैधव्य की मर्यादाओं की लाज रखने की आड मे उन्होंने उस पर ऐसा अकुश लगाया कि उसका जीना ही हराम कर दिया ।

उमेश – क्रूर भी तो बहुत थी ।

युवती – बाद में तो उनकी दहशत इस कदर बढ गई कि आरती के बहते आसुओं ने कभी रूकने का नाम ही नहीं लिया ।

उमेश – यह तो जुल्म की पराकाष्ठा है । अब क्या स्थिति है ?

युवती – अब तो किस्मत ने करवट ले ली है । भुआजी से उसे छुटकारा मिल गया।

उमेश – वो कैसे ?

युवती – छ महीने पहले एकाएक ही भुआजी भगवान को प्यारी हो गई ।

उमेश – फिर तो झझट मिटा ।

युवती – उसके बाद ही आरती को अहसास हुआ कि अभी वो जिन्दा तो है ।

उमेश – क्या ये सारी बाते तुमको कीर्ति मैडम ने बतायी ?

युवती – और कौन बताता ?

उमेश – लेकिन उससे तुमने यह नहीं पूछा कि किसी की निजी जिन्दगी की डायरी के पन्ने इस तरह खोलकर दूसरे को नहीं दिखाये जाते ।

युवती – मैं क्यों पूछती ? मुझे तो इस कहानी में बहुत रस आ रहा था ।

उमेश – ओह , तो उसी रस की कटोरी लेकर तुम मुझे यहा दिखाने आई हो?

युवती – नहीं , मै तो केवल आपसे मुलाकात करने आयी हू । मतलब , अपनी बहन की सिफारिश करने ।

उमेश – लगता है तुम बहुत होशियार हो ।

युवती – वो तो हूं ।

उमेश – लेकिन मुझे इस बात का बहुत दुख है कि यहा तुम्हारी कोई दाल गलने वाली नहीं है ।

युवती – यह आप क्या कह रहें सर ? इस तरह निराश मत कीजिए । कम से कम इतना तो सोचिये , यहा नहीं आऊंगी तो और कहां जाऊगी ?

उमेश – जहन्नुम मे ।

युवती – वहा जगह होती तो मै कभी की चली जाती ।

उमेश – बडी मुहफट हो ।

युवती – रहम कीजिए सर । (विराम) अच्छा , बुरा न मानें तो , कुछ देर के लिए मुझे ही अपनी आरती समझ लीजिए न सर।

उमेश – क्या ऽऽ !!

युवती – प्लीज ।

उमेश – कभी आईने मे अपना मुंह देखा है ?

युवती – वो तो रोज देखती हू बुरका उतार कर ।

उमेश – अरे , कुछ शर्म करो ।

युवती – नहीं सर । कहते है , शर्म करने वाला हमेशा धाटे मे रहता है ।

उमेश – तो ठीक है । फिर बनी रहो बेशर्म ।

युवती – सर , आप बात को समझने की चेष्टा कीजिए । आरती अब मिस नहीं रही जबकि मै अभी तक किसी की बेगम नहीं बनी ।

उमेश – क्यों ? शोहरों की कमी है क्या ?

युवती – नहीं , उसी की तलाश में तो लगी हू । खैर , मेरी बात जाने दीजिए। आपके लिए एक काम की बात है ।

उमेश - मेरे काम की बात !

युवती - जी । आरती को तो आप बेहद चाहते है न सर ?

उमेश - तो इससे क्या हुआ ?

युवती - पहले मेरी बात तो सुनिये । आरती के बारे मे यदि मै आपको सही-सही जानकारी दे दू तो . ।

उमेश - तो क्या ?

युवती - आप मुझे थोडी लिफ्ट दे सकेंगे ?

उमेश - अभी जो दे रखी है , क्या वो काफी नहीं है ?

युवती - देखिये सर , ऐसी महत्वपूर्ण बात को हवा मे उछालने में आपको ही नुक्सान है । सोच लीजिए ।

उमेश - सच-सच बताओ , तुम कहना क्या चाहती हो ?

युवती - समझते हुए भी नासमझ बनने का अभिनय मत कीजिए सर । क्या मै आपके मन की उस कुर्सी पर कुछ समय के लिए नहीं बैठ सकती , जिस पर आरती ने अधिकार जमा रखा है?

उमेश - नहीं । उसके अधिकार को कोई नहीं छीन सकता ।

युवती - तो फिर ठीक है । आप उसी को बिठाये रखिये । जबकि मैं जानती हू , उसके दीदार होने ही दुर्लभ है । (यह कहकर जाने लगती है)

उमेश - ठहरो जुबेदा ।

युवती - जुबेदा नही , जरीना ।

उमेश - हा, जरीना । कम से कम इतना तो बता दो , आरती जहा भी है ठीक तो है न ?

युवती - यह आपको कीर्ति मैडम बतादेंगी ।

उमेश - अरे , उससे कहां पूछना रहा ? तुम्हीं बता दो न ।

युवती - अच्छा , बता दूं तो बदले में क्या देंगे ?

उमेश - मेरे अलावा , जो भी चाहोगी , मिलेगा ।

युवती - फिर तो कोई बात बन सकती है ।

उमेश - बोलो , कितनी कीमत चाहिए ?

युवती - दस हजार ।

उमेश - केवल यह बताने के लिए कि वह कैसे है ।

युवती - जी । और वो इस समय है कहा , यह बताने के पन्द्रह हजार ।

उमेश - सच कहती हो ?

युवती - सौदे मे झूठ नहीं बोला जाता ।

उमेश - फिर तो, मेरे लिए तुम बहुत लक्की हो ।

युवती - इससे भी ज्यादा लक्की समझना है तो बीस हजार लगेगे ।

उमेश - वो किस बात के ?

युवती - आरती से मिलवाने के ।

उमेश - सच ।

युवती - कहा न ऐसी बातो मे झूठ नही चलता ।

उमेश - तो फिर मुझे मजूर है । किसी न किसी तरह उससे मिलवा दो ।

युवती - पहले कुछ एडवान्स , ।

उमेश - स्योर - स्योर । मै अभी लाकर देता हू ।

(उमेश अन्दर जाता है । पीछे से आरती बुरका उतारकर हाथ मे ले लेती है)

उमेश - (प्रफुल्लित होकर अपनी ही धुन में अन्दर से आते हुए) यह लो ।

(रूपये देने को होता है कि अचानक आरती को देखकर) कौन , आरती !

युवती - हा उमेश । मै ही वो अभागिन हू जो पिछले सात - आठ वर्षो से तुमसे अलग होकर विष के घूट पीती - पीती जिन्दगी को एक बोझ की तरह ढोती रही हू ।

उमेश - (भावावेश) यह मै क्या देख रहा हू ?

युवती - वही , जो सच है । भुआजी से मुक्ति मिलते ही मैने अजमेर से अपना ट्रांसफर यहा करवा लिया । इसलिए कि मुझे पता था , तुम यहीं हो।

उमेश - तुम्हारी आवाज को क्या हुआ ?

युवती – गले मे चोट लगने से , मेरी वो पहले वाली आवाज नहीं रही ।

उमेश – लेकिन जब यहा आ गई तो फिर यह स्वाग रचने की क्या सूझी ?

युवती – वाह ! ऐसे कैसे आ जाती एकाएक मिलने के लिए ? पहले यह पता लगाना जरूरी था कि तुम्हारे धर की स्थिति क्या है ?

उमेश – धर की स्थिति से क्या मतलब ?

युवती – मतलब यह कि तुम्हारे बीवी – बच्चे कहा है । यदि यहा धर मे हुए तो मुझे देखकर कहीं वे कोई गलत अर्थ न लगा बैठे ।

उमेश – क्या बात करती हो ? मेरे बीवी – बच्चे !

युवती – इसमे अचम्भे की क्या बात है ? क्यो , शादी करते तो गृहस्थी बढती नहीं ?

उमेश – मगर शादी करता तब न !

युवती – तो क्या किसी पडित ने शादी करने की मनाही कर रखी है ?

उमेश – नहीं तो ।

युवती – फिर क्या बात है ? क्या शादी की उम्र अभी भी दूर है ?

उमेश – यह बात नहीं है ।

युवती – फिर ! मेरा सोचना कोई गलत तो नहीं था । इसी कारण ही मुझे पहले जरीना की इस गुदगुदाती भूमिका में यहां आना पडा ।

उमेश – ताकि दो – दो परीक्षाएं एक साथ ली जा सकें ।

युवती – (हसती हुई) हा , यही समझ लो ।

सौभाग्य से तुम दोनो ही परीक्षाओं में खरे उतरे ।

उमेश – तो यह बात है । तुम हमारे इस लम्बे सीरियल का अब कोई समापन चाहती हो ?

युवती – इस सुखद मिलन के बाद कहानी को और आगे खींचना , अब कोई मायने नहीं रखता ।

उमेश – ठीक कहती हो । हमारे इस सीरियल की आज यह समापन किस्त है। क्यों सही न ?

युवती - बिल्कुल यही । इससे आगे की किस्त का न कोई औचित्य है और न ही हमे उसकी दरकार ।

उमेश - सच SS !!

युवती - हा SS !!

(दोनो आगे बढकर एक - दूसरे का हाथ थामते है कि मंच पर धीरे - धीरे अंधेरा छाने लगता है ।)

7. अन्तः किरण

पात्र परिचय –

1.	रेखा	–	पुलिस अफसर की दिग्भ्रमित बेटी
2.	राजन	–	रेखा का पति
3.	धीरज	–	राजन का दोस्त
4.	भीमजी	–	रेखा के पिता
5.	महादेव	–	राजन का घरेलू नौकर
6.	पार्वती	–	महादेव की पत्नी

एक

(राजन का ड्राइंगरूम । शाम का समय । महादेव अन्दर से गमछे से हाथ पौंछता हुआ आता है ।)

महादेव – (स्वगत) शाम हो गई , साहब अभी तक बैंक से नहीं लौटे । रोज तो टाईम पर आ जाते है , आज पता नहीं क्या बात है ? सुबह जाते समय मेमसाहिबा ने अपने कमरे मे कूलर न होने की बात पर कुछ कडवीं बाते कह दी थी , कहीं उनका तो बुरा नहीं मान गये ? नहीं ऐसी तकरारें तो दोनों में आये दिन होतीं है किन्तु साहब ने कभी कोई गुस्सा नहीं दर्शाया । (विराम) साहब हमारे बहुत सीधे है और समझदार भी । ऐसी तेजतर्रार पत्नी के होते हुए भी अपने सयम से कभी विचलित नहीं हुए। मेमसाहिबा तो हर समय हर बात की खाल उधेडने मे ही लगी रहती है। मगर साहब अपनी ओर से किसी बात को अधिक तुल नहीं देते । (विराम) चाहे यह उनकी कमजोरी समझे , चाह मजबूरी , वे मेमसाहिबा के सामने अधिक बोलना पसन्द नहीं करते । (विराम) दोनो के स्वभाव मे जमीन – आसमान का अन्तर है । साहब हमारे जरूरत से कहीं ज्यादा सीधे है तो मेमसाहिबा के नाक पर गुस्सा हर वक्त चढा रहता है । (विराम) खैर , मुझे क्या ! मुझे तो मेरे काम से मतलब है । (दीवारघड़ी की ओर देखते हुए) सात बजने वाली है ।

(टेलीफोन की घंटी बजती है) यह मरा टेलीफोन, जब देखो तब, टै – टै करता ही रहता है । कभी बन्द ही नहीं होता। लेकिन एक बात है , अकेले आदमी के लिए जीने का सबसे बडा सहारा यह टेलीफोन ही है । (चोगा उठाकर) हेलो . . .कौन. .. . . ?

पार्वती – (किसी दूसरे टेलीफोन पर दिखाई देती हुई) कौन क्या.. .... . . .मै . . . ..(हंसती है)

महादेव – मै . . कौन .?

पार्वती – मै हू जी . . . आपकी पार्वती. . . .।

महादेव – अरे , तो अभी तक घर नहीं गई ?

पार्वती – अजी , यहा से छूटूगी , तब न.. ... . बीबीजी कुछ देर के लिए पडोस मे कहीं गई हुई है... ... घर मे कोई नहीं है. .. .. । (फिर हंसती है)

महादेव – अरे , तो इतनी हस क्यों रही है कहीं पागल तो नहीं हो गई ?

पार्वती – अजी पागल तो आपके पीछे शुरू से ही रही हू . हसी तो यह सोचकर आ रही है कि अभी आप अकेले बैठ अवश्य ही मक्खियां मार रहे होगे ?

महादेव – अकेला कैसे ?

पार्वती – मेमसाहिबा तो आपकी , थोड़ी देर पहले हमारी कोठी के आगे से कार में बैठी कहीं जा रही थी ।

महादेव – क्यों , कोई काम से कहीं जाते नहीं क्या ?

पार्वती – यह बात नहीं वे जब बाहर गई है तभी तो आप अकेले हैं क्यों झूठ तो नहीं कह रही , ..?

महादेव – हा अकेला हू, .लेकिन तूने फोन क्यों किया .. ?

पार्वती – (हसती – हसती) वैसे ही ।

महादेव – (नकल उतारते हुए) वैसे ही । (फिर मन ही मन मुस्कराते हुए) बेमतलब मेरी पूजा ।

पार्वती – . पूजा यह मरी फिर कौन है . .. ... ?

महादेव – (चुटिया चटकाता सा) है कोई . तुझे उससे क्या...... ?

पार्वती – क्या-क्या .नहीं है .सच बताइये कौन है मरी वो . . ?

महादेव – चाहे कोई भी हो उसे इस तरह गाली मत दे..... ....।

पार्वती – दूगी ... . . हजार बार दूगी .. . . मै उस हरामजादी का सिर न फोड दू तो मुझे कहना ... . . . एक दफे मुझे उससे मिलने तो दो . ।

महादेव – रहने दे . . पूजा मेरी कोई ऐसी – वैसी नहीं है . ... .मेरे मन की आस्था है .. .उसके लिए तूने यदि किसी तरह की अनर्गल बात की , तो मुझ जैसा कोई बुरा नहीं होगा . . .. . . यह समझ लेना ।

पार्वती – क्या SS .? एक दफे फिर से कहना .. ..।

महादेव – मै पूछता हूं , पूजा के नाम से तुझे इतनी ईर्ष्या क्यो हो रही है ?

पार्वती – (रूठती सी) इस तरह उसकी बाते करते हुए आपको शर्म नहीं आती?

महादेव – आती है , लेकिन क्या करू . .. . . .पूजा को मै छोड नहीं सकता।

पार्वती – (झल्लाती हुई) तो मत छोडिये .. ... गले लगा लीजिए उसे. .....।

महादेव - लगा लूगा तू क्यों जलती है ?

पार्वती - लाय लगाकर पूछते है कि क्यों जलती है . . मै तो कहती हू उस चडालिनी के कीडे पडे (रोती हुई) बताते क्यो नहीं . वो कौन है ?

महादेव - मै क्यो बताऊ ?

पार्वती - अजी . बताते है कि नहीं . ?

महादेव - नहीं बताता ।

पार्वती - नहीं बताते . ।

महादेव - हा – हा .नहीं बताता ।

पार्वती - देखिये . बता दीजिए ... . ।

महादेव - कह दिया न. नहीं बताता . ।

पार्वती - हे ऽऽ नहीं बताते . तो आप मुझे हाडी में राधकर खायेगे ।

महादेव - (हसी का फव्वारा छोडता हुआ) वाह बावली वाह . . पूजा मेरी साधना है . साधना . महादेव भला पार्वती के सिवाय और किसकी साधना करेगा . . . ?

पार्वती - तो क्या साधना को ही पूजा कह रहे है . . . ?

महादेव - और नहीं तो . . . ।

पार्वती - मुझे क्या पता ? यह बात आपने भला पहले क्यों नहीं बताई .... यह अच्छी मजाक की आपने . . ।

(इसी बात पर महादेव जोर – जोर से हंसने लगता है)

पार्वती - (महादेव की बातों पर जैसे भरोसा न हो रहा हो) अजी , आप कह तो सच रहे है न . .. ?

महादेव - एकदम नब्बे पैसे सच . ..... !

पार्वती - .. नब्बे पैसे .. . !

महादेव - हा . बाकी दस पैसे इन भिनभिनाती मक्खियो के लिए , जिनको मै यहां बैठा – बैठा मार रहा हू.. ....।

(फिर हंसने लगता है)

पार्वती - आप तो सच , मसखरी करने पर उतर आये . ..अच्छा , यह बताइये इस समय आप क्या कर रहे है . . . . ?

महादेव - साहब की प्रतीक्षा कर रहा हू गेमसाहिबा भी वापस लौटने वाली है उनके आते ही मै भी घर आ रहा हूँ . तू अब जल्दी चली जा अंधेरा गहराता जा रहा है . !

(बाहर से राजन को आते देखकर महादेव फोन रख देता है। उधर पार्वती का फोन पर बातें करते हुए दिखना भी बन्द हो जाता है।)

राजन - (प्रवेश करके) किससे बातें कर रहे हो महादेव ?

महादेव - जी मेरी घरवाली का फोन था ।

राजन - अच्छा - अच्छा। रेखा कहा है ?

महादेव - वे बाहर गई है । कह गई कि जल्दी ही लौट आयेंगी ।

राजन - अच्छी बात है । (सोफे पर बैठते हुए) आज कोई मैग्जिन तो नहीं आई?

महादेव - जी (मेज के नीचे से मैग्जिन निकालकर देते हुए) यह रही । चाय बनाऊ साहब?

राजन - बना लाओ । पहले एक गिलास पानी दे जाओ ।

महादेव - अभी लाया साहब । (कहता हुआ अन्दर चला जाता है)

(कालबैल बजती है)

राजन - (आवाज देकर) महादेव , देखना बाहर कौन है ?

महादेव - (अन्दर से ही) देखता हू साहब । (दरवाजा खोलकर) जी , धीरज बाबू है?

धीरज - (अन्दर आते हुए) क्यो भई ? यू ही घर मे रोज घुसे रहोगे या कभी बाहर भी निकलोगे?

राजन - हूँ, उल्टा चोर कोतवाल को डाटे । मै पूछता हू , इतने दिन तुम कहा थे?

धीरज - जयपुर गया था , कल ही आया हू । अभी थोडी देर पहले बैंक मे फोन किया तो पता लगा, आप जनाब यहा आये हुए है ।

राजन - बस , अभी - अभी आकर बैठा ही हू । जयपुर अकेला ही गया या और भी कोई साथ था ?

धीरज - और साथ मे तो कौन होता ? नीना ने भाभीजी से एक ही सीख ली है कि गाडी मे सफर करना है तो ए सी कोच मे बर्थ रिजर्व करवाने के बाद।

राजन - रईसी का रौब झाडने मे तो तुम्हारी भाभी सबसे आगे है । यह तो अच्छा हुआ , तुम्हारी वाइफ का उससे अधिक मिलना नहीं हुआ । उसकी बातो में जो आ गया , उसके पैर फिर धरती पर नहीं टिकते ।

धीरज – खैर , यह बताओ , भाभीजी है कहा ? दिखाई नहीं दे रही ।

राजन – कहीं बाहर गई है ।

धीरज – बाहर से मतलब पीहर ?

राजन – यह तो वही जाने । महादेव को तो यही कहकर गई है कि बाहर जा रही हू ।

धीरज – वैसे , उन्हे पीहर जाने की कुछ ज्यादा ही बीमारी लगी हुई है ।

राजन – यह बीमारी तो उसे, जिस रोज उसका यहा पदार्पण हुआ, उसी रोज लग गई थी ।

धीरज – इसलिए कि पीहर उनका यहीं है । (विराम) एक बात बताओ राजन , भाभीजी का कोई और तो चक्कर नहीं है ? बुरा मत मानना , तुम मेरे अन्तरग साथी हो , इसलिए पूछने की गुस्ताखी कर रहा हूं ।

राजन – दूसरा तो इस तरह पूछने की कोई हिम्मत ही नहीं करता । अब जब तुमने पूछ ही लिया तो मै भी अपनी बात , जो आज तक किसी से नहीं कही, तुम्हे अपना हमदर्दी जानकर पहली दफे बता रहा हू ।

धीरज – बेझिझक होकर बताओ ।

राजन – सच तो यह है कि मुझे रेखा को समझने का अभी कोई मौका ही नहीं मिला ।

धीरज – यह क्या कह रहे हो ? छ महीने हो गये शादी को , जनाब उसे अभी तक समझ ही नहीं पाये ।

राजन – यही तो विडम्बना है ।

धीरज – फिर तो दाल में कुछ काला है दोस्त ।

राजन – सभवत तुम्हें यह बात कुछ अनहोनी या अटपटी सी लगे , लेकिन हकीकत यही है ।

धीरज – जबकि एक ही घर में रह रहे हो ! रियली वडरफुल !

राजन – बस , मुझे तो अपने पिताजी की बात की साख रखनी थी, रखली । उन्होने कहा – एस पी साहब की लडकी से शादी करनी है , मैने कर ली । यह जानते हुए भी कि उनकी नकचढी बेटी के साथ मेरा जुडाव मुश्किल है , फिर भी निभा रहा हू और अपने मन की भावनाओ के ज्वार को नियत्रित किये हुए हू ।

धीरज – फिर तो धन्य है तुम्हें । अब समझ में आया कि तुम दोनों की गाडी पटरी पर ठीक से क्यों नहीं उतरी ?

राजन – हो सकता है आहिस्ता – आहिस्ता उतरे । लेकिन अभी कुछ नहीं कहा जा सकता ।

धीरज - एक बात और । तुमने व्यवस्था की सारी जिम्मेदारी उन पर क्यो डाल दी ? जबकि इस स्थिति में तुम्हें हर कदम सोच समझकर उठाना चाहिए।

राजन - अरे मैने उस पर कोई जिम्मेदारी नहीं डाली । उसने यहा आते ही घर की सारी बागडोर स्वय अपने हाथ मे लेली।

धीरज - यह कैसे ?

राजन - उसके पीहर के सस्कार ही ऐसे है । वहा उसकी मा डिक्टेटर बनी हुई है ।

धीरज - फिर तो सही है । एक पुलिस अफसर की बेटी , अधिकार जताने का अहकार उसे विरासत में मिला हुआ है ।

राजन - तभी तो ।

धीरज - लेकिन यार, एक बात है। व्यवस्था यदि मर्द के हाथ में रहे, तो पत्नी चाहे किसी भी सस्कार मे पली हुई हो , अपनी सीमा को लांघने का साहस नहीं कर सकती ।

राजन - कहना तुम्हारा सही है । लेकिन मै जरा आपसी तालमेल में कुछ ज्यादा विश्वास रखता हू ।

धीरज - किन्तु तालमेल की भावना दोनों मे हो , तब न!

राजन - यह बात भी सही है तुम्हारी।

(महादेव चाय लेकर आ जाता है)

महादेव - (चाय की ट्रे मेज पर रखता हुआ) साहब , अब आप आज्ञा देवे तो मै घर जाऊं ? खाना बनाकर रख दिया है । सुबह जल्दी ही आ जाऊगा।

राजन - अरे हा , तुम्हारे जाने का टाइम हो गया । अच्छा तुम जा सकते हो ।

(महादेव चला जाता है। पीछे राजन और धीरज चाय पीने लगते हैं कि मच पर प्रकाश विलुप्त होने लगता है ।)

दो

(सुबह का समय । राजन का वही ड्राइंगरूम । टेलीफोन की घंटी बजती है कि रेखा अन्दर से आती है)

रेखा - (फोन उठाकर) हेलो. कौन . . . सुनीता अरे , मै तो तैयार बैठी हू बस तुम्हारी कार आई नहीं कि चल पडूगी . ये . . ये अभी अपने कमरे मे ही है . . मुझे क्या .. .. . मै तो तुम्हारी सहेली हू . . मर्द के आगे कभी झुकने वाली नहीं हू . . अरे , चिन्ता मुझे किस बात की

इनका सारा काम मैने महादेव को सौप रखा है हा - हा सच कहती हू . .महादेव जाने और ये जाने . लेकिन हा गलत बात पर मै इन्हे टोके विना नहीं रहती वैसे मै किसी काम से बधी हुई नहीं हूं यह कोई आज की बात नहीं है शुरु से ही मै अपने मन की करती रही हू. बस - बस बाकी बातें बाद में , तुम पहले अपनी कार रवाना करो आई वेट हर . ।

(कहकर फोन रख देती है)

(इसी समय बाहर से महादेव आ जाता है)

रेखा - महादेव , इस तरह बिना पूछे बाहर कहा चला गया ?

महादेव - जी , साहब के काम गया था ।

रेखा - तो क्या कहकर नहीं जा सकता था ? आईन्दा कहीं जाना हो तो पूछकर जाना ।

महादेव - जी , .।

रेखा - यह हाथ में क्या है तुम्हारे ?

महादेव - जी बीड़ी का बडल. . . . . ।

रेखा - तो इन्होने तुझे क्या यह बडल लाने को भेजा था ?

राजन - (अन्दर से आते हुए) क्या बात है ?

रेखा - यह बीडी पीनी आपने कब से चालू कर दी ?

राजन - क्यों , कभी पीता हुआ देखा था क्या ?

रेखा - तो फिर यह क्यो मगवाई ?

राजन - मंगवाने मे क्या हर्ज है ? पडी हुई चीज कभी काम ही आती है ।

रेखा - यह फिर क्या काम आती है ?

राजन - तुम नहीं जानती। वक्त-बेवक्त इसकी कभी भी जरूरत पड सकती है?

रेखा - मुझे बेवकूफ मत समझो। बीडी बस पीने के काम आती है। इसके सिवाय इसे रखने का कोई औचित्य नहीं है ।

राजन - तुम्हारे कहने से क्या होता है ? बस , तुम तो यह समझ लो कि कभी-कभी इसे पीने की मेरी इच्छा हो जाती है।

(दोनो की बातो से उकताकर महादेव अन्दर चला जाता है)

रेखा - अच्छा ! तो यह कहो कि लुक - छुपकर पीने की आदत डाल रखी है।

राजन – तुम बात की खाल बहुत उधेडती हो ।

रेखा – मुझे बरगलाने की कोशिश न करो । साफ ही क्यों नहीं कह देते कि लुक-छिप कर पीने का चस्का लगा हुआ है ?

राजन – तो यही समझ लो ।

रेखा – जब तम्बाकू का धुआ ही मुह मे लेना है तो फिर सिगरेट पीओ न ! कौन मना करता है ? अपनी कुछ शान तो रखो।

राजन – सिगरेट – बीडी के बारे तुम क्या जानो । जो काम बीडी पीने से निकलता है , वो सिगरेट पीने से पूरा नहीं होता।

रेखा – रहने दो । भला यह भी कोई बात हुई ? बीडी मे ऐसा फिर क्या है , जो सिगरेट मे नहीं है ?

राजन – देखो , तुम्हारी इस छोटी सी बुद्धि में ये बडी बाते नहीं आने की । इसलिए तुम्हे समझाना , मेरे लिए बहुत कठिन है ।

रेखा – क्यो , मै कोई नासमझ हू ?

राजन – नहीं – नहीं बहुत समझदार हो , बस ।

रेखा – बस नहीं है! मुझे बीडी के नाम से ही नफरत है । और आप हो कि इसे ही फूकने पर तुले हुए है।

राजन – मुझे एक बात बताओ । तुम्हारे पापाजी साठ को पार कर रहे है । वे बीडी क्यो पीते है ? तुम्हें जब बीडी से इतनी नफरत है तो फिर उन्हे क्यों नहीं मना करतीं ?

रेखा – उनकी बराबरी आप मत कीजिए । फिर , उन्हे मै मना करती क्या अच्छी लगूंगी ?

(महादेव अन्दर से आता है)

महादेव – (राजन से) जी , आपको यह बताना मै भूल ही गया कि रामनाथ जी ने कहलवाया है , उनकी पुत्रवधु बैक में आपके पास आये तो उसका काम करवा देना ।

राजन – ठीक है । मै समझ गया ।

(महादेव का प्रस्थान)

रेखा – उसे बैक मे क्या काम है ?

राजन – है कोई।

रेखा – यही तो पूछ रही हूं ।

राजन – क्यो , तुम्हें बताना कोई जरूरी है ?

रेखा – लेकिन बताने मे हर्ज क्या है ?

राजन – हर्ज कुछ भी नहीं है , लेकिन तुम्हे बताकर मुझे कोई नई तकरार पैदा नहीं करनी ।

रेखा – क्या SS !!

राजन – हा SS !! तुम बात का बतगड बनाते देर नहीं लगाती ।

रेखा – तो ठीक है मत बताइये ।

राजन – बात न कोई बात, बेकार ही उलझ रही हो ।

रेखा – बेकार का लेबल तो मेरे माथे पर पहले से ही लगा हुआ है । मेरी सभी सहेलिया नोकरी करती है और एक मै ही हू जो घर मे बेकार बैठी हू

राजन – क्यो झूठ बोल रही हो ? घर में बैठना तो तुमने कभी सीखा ही नहीं। तुम्हारे पैरो मे तो मैने हमेशा शनीश्चर लगा हुआ ही देखा ।

रेखा – आपको चिढ क्यो हो रही है?

राजन – चिढने की बात नहीं है । वैसे भी तुम्हें घर में बैठना अच्छा नहीं लगता। जिस दिन पीहर नहीं जाती तो दूसरी जगह पहुंच जाती हो ।

रेखा – दूसरी जगह ।

राजन – . . . मतलब , अपनी सहेली सुनीता के यहा ।

रेखा – खैर , आप कुछ भी कहिये, मै यहा अकेली बैठी दीवारो से सिर फोडना नहीं चाहती ।

राजन – दीवारो से सिर वो फोडे जो पागल हो । (इसी समय बाहर से कार का हॉर्न सुनाई पडता है)

रेखा – आपके पास यदि थोडी देर और ठहर गई तो मै सचमुच ही पागल हो जाऊंगी । सुनीता ने कार भेज दी है । मै जरा उसके यहा होकर आती हू । (आवाज देती हुई) महादेव ।

महादेव – (अन्दर से ही) आया जी ।

रेखा – आपका टाइम हो गया है बैक जाने का ।

राजन – मुझे पता है।

महादेव – (अन्दर से आकर) जी , मेमसाहिया ।

रेखा – देखो मै सुनीता के यहां जा रही हू । खाना तैयार है तो इनके लिए डाइनिंग टेबल पर लगा दो ।

महादेव – जी ।

राजन - तुम कब खाओगी ?

रेखा - मेरी चिन्ता आप न करो । मै अपने आप खा लूगी ।

राजन - वैसे भी मेरे साथ खाने की तुम्हे फुरसत ही कहा है ?

रेखा - आप क्या कहना चाहते हो मै सब समझती हू ।

राजन - (पुनः हॉर्न सुनकर) अच्छा - अच्छा तुम जाओ । कार का ड्राइवर बोर हो रहा होगा ।

(रेखा का प्रस्थान : राजन कुछ सोचकर अन्दर जाता है कि मंच पर अंधेरा छा जाता है ।

तीन

(सुबह का समय । राजन का वही ड्राइंग रूम । धीरज सोफे पर बैठा टेनिस के रैकेट पर अंगुलियां फेर रहा है कि महादेव अन्दर से चाय लेकर आ जाता है ।)

धीरज - तुम्हारे साहब कहा उलझ गये ?

महादेव - गुसलखाने से निकलकर बस , आने को ही हैं।

धीरज - रात को क्या वे देर से सोये थे ?

महादेव - नहीं तो । साहब तो टाइम पर ही सोते है । जगते भी है तो सही टाइम पर।

धीरज - और मेमसाहिबा?

महादेव - उनका मुझे पता नहीं । मेरे जाने से पहले ही अपने कमरे मे चली जाती है।

धीरज - मेमसाहिबा अभी तक उठी या नहीं?

महादेव - वे तो आज मेरे आने से पहले ही उठ गई थी । उन्हें रेलवे स्टेशन जाना था, सो अभी वहां गई है ।

धीरज - फिर तो आज रगमहल खाली है ।

महादेव - रगमहल तो प्रायः सूना ही रहता है ।

राजन - (अन्दर से आते हुए) मेरे भोले महादेव से इस घर के क्या-क्या भेद लिये जा रहे है ?

धीरज - क्यों महादेव पर विश्वास नहीं है क्या ?

राजन - अरे इसी के विश्वास पर ही तो मेरी गाडी गुडक रही है ।

धीरज – तो फिर यह किसी को क्या भेद देगा ? इसके नीयत मे खोट होती तो कभी का लका ढहा देता ।

राजन – बस – बस , रहने दो । आज सुबह – सुबह श्रीमानजी यहा कैसे नजर आ गये ?

धीरज – तुम्हारी खबर लेने को चला आया।

राजन – खबर यह है कि मै अभी सही सलामत हू ।

धीरज – तब फिर , अन्दर कबाडखाने मे से अपना टेनिस का रैकेट बाहर निकाल लाओ और मेरे साथ क्लब चले चलो।

राजन – कुछ दिन ठहर जाओ। रैकेट ढूढना पडेगा । पता नहीं कहा रखा हुआ है।

धीरज – ढूढने में कौन से दिन लगते है । कबाडखाने के सिवाय तो और कहीं जाने से रहा?

राजन – फिर भी, देखना तो पडेगा ही । खैर , पहले चाय पीओ।

धीरज – अच्छा, अब यह बताओ, भाभीजी के क्या हाल है?

राजन – जो पहले थे।

धीरज – वक्त की मौसमी हवाओं को वे कुछ महसूस करने लगीं कि नहीं ?

राजन – मौसम का उस पर कोई असर नहीं होने वाला । सोच पर कसे हुए अभिमान के तार जब तक ढीले नहीं पडेगे , उसके स्वभाव मे कोई अन्तर नहीं आयेगा ।

(महादेव अन्दर से आकर चाय के कप उठाता है ।)

महादेव – जी , मेमसाहिबा पधार गई हैं । (प्रस्थान)

धीरज – (उठते हुए) मै अब चलता हूं ।

राजन – ऐसे कैसे ? रेखा से नहीं मिलोगे?

धीरज – नहीं यार । उनसे मिलने में कोई सार नहीं है ।

राजन – क्यों भई ? तुम्हें वो क्या कहती है ?

धीरज – कहती तो कुछ नहीं । लेकिन मैने यह महसूस किया कि मुझे देखते ही उनके व्यवहार में सहजता के भाव कुछ चटकने लगते है ।

राजन – यह बात तुम्हारी सही है । दूसरों को देखते ही, चाहे कोई भी हो, उसका अहम् उस पर बेमतलब हीं सवार होने लगता है। खैर, अब कब मिलना होगा?

धीरज – कल सुबह क्लब मे । अच्छा अब मै चलता हू । (जाने लगता है कि रेखा सामने आ जाती है) नमस्ते भाभी।

रेखा – नमस्ते । अरे, क्या वापस लौट रहे है?

धीरज – हा।

रेखा – लेकिन आज तो सनडे है। कॉलेज तो जाना नहीं । फिर इतनी जल्दी क्या है ? आये हो तो चाय पीकर जाओ।

धीरज – चाय पी ली।

रेखा – तो क्या हुआ? मै तो अभी बस आयी ही हूं । थोडी देर तो बैठिये ।

धीरज – बैठू क्या, मुझे अभी क्लब जाना है ।

रेखा – तो चले जाना । दस-बीस मिनट मे कुछ बिगड नहीं जायेगा ?

धीरज – तो चलो बैठ जाता हूं । आप सुबह - सुबह कहां हो आई ?

रेखा – सुनीता दीदी के साथ जरा रेलवे स्टेशन गई थीं ।

धीरज – सुनीता तो वही न .।

राजन – , कर्नल जगजीतसिंह की बेटी , जिसने अपने पति को छोड़ रखा है ।

धीरज – ओह, तो अभी आपको वही छोड कर गई है?

रेखा – हा । (राजन से) लेकिन किसी की घरेलु जिन्दगी पर बिना वजह कीचड उछालना कोई अच्छी बात नहीं है ।

राजन – सॉरी।

धीरज – खैर , आप उन्हें यदि अन्दर ले आती तो कम से कम हम भी मिल लेते।

रेखा – मुझे क्या पता था कि आप यहां है ?

धीरज – राजन तो है ।

रेखा – लेकिन , ।

राजन – .. तुमने उसे अन्दर आने को कहा होता तब न !

रेखा – क्यों कहती ? क्या मुझे अपनी हसी उडवानी थी ?

धीरज – वो कैसे ?

रेखा – यहा रखा क्या है ? आगे वाला लॉन नहीं देखा ? एकदम उजाड पडा है ।

धीरज - देखभाल के लिए यदि माली न हो तो, उजाड ही रहेगा ।

रेखा - कहीं एक फूल भी खिला हुआ नहीं दिखता ।

धीरज - फूल कहा से खिलेगा ? दोनों मिलकर कोशिश करो तब न ! उजाड को उपजाऊ बनाने मे कोई देर थोडे ही लगती है ?

राजन - खुद को कोई चिन्ता हो तब न ! लॉन हरा-भरा हो , इस तरफ तो इसका कभी ध्यान ही नहीं जाता ।

धीरज - जबकि सबसे पहले घर की मालकिन को ही इसकी ओर ध्यान देना चाहिए ।

राजन - ऐसा इसका सोच ही नहीं है ।

धीरज - इस मामले में तो अब आपको बहुत सीरियस हो जाना चाहिए । उसमें अच्छी सी खाद डलवाओ, पानी सींचो और फिर देखो मनचाहे फूल कैसे नहीं खिलते ?

रेखा - मुझे अकेली से यह सब नहीं होगा। कुछ इन्हे भी तो सोचना चाहिए।

धीरज - सोचना तो दोनों को ही पडेगा। लेकिन पहल आपको ही करनी है।

राजन - खैर , वक्त आयेगा तो फूल भी खिलेगे ।

धीरज - हरे-भरे लॉन से घर की शोभा बढती है , यह बात आप दोनों नोट कर लेवें।

राजन - तुम्हें टेनिस खेलने के लिए जाना है तो अब अपना रास्ता देखो ।

रेखा - आप क्या इन्हें यहा से निकालना चाह रहे हैं?

राजन - तुम बोर हो रही है इसलिए कह रहा हू ।

रेखा - मैं कोई बोर नहीं हो रही । (धीरज से) क्या बात है , नीना इन दिनों दिखाई नहीं दे रहीं ? कहा है वो ?

धीरज - घर पर। अभी सोनू को पढा रही होगी।

रेखा - उससे मिले हुए को काफी समय हो गया । कभी तो उसे भी साथ ले आया करो।

धीरज - कैसे लाऊ ? उसने जिद्द कर रखी है कि आप जब तक अपने इस मिया के साथ हमारे यहा तशरीफ नहीं लायेंगी , तब तक वो इधर मुह नहीं करेगी।

रेखा - यह तो कोई बात नहीं हुई । इनके साथ आने की तो मै नहीं कहती , अकेली तो मै कभी भी आ सकती हू ।

धीरज - वो तो आप दोनों के साथ आने पर जोर दे रहीं है । अब आप जानो और वो जाने ।

रेखा – यह तो मुझे न बुलाने का बहाना है । वैसे , उससे मिलने का मेरा बहुत मन कर रहा है ।

धीरज – तो आइये न ! इसे भी साथ लेती आइये ।

रेखा – न – न – न, ये अपनी जाने ।

धीरज – फिर, मै तो चलता हू , नमस्ते ।

रेखा – नमस्ते।

(धीरज का प्रस्थान)

रेखा – सीमा के लिए पूछा था इनसे ?

राजन – तुम्हारी बहन के लिए . .।

रेखा – हा ।

राजन – तो अभी तुम ही पूछ लेती ।

रेखा – मै डायरेक्ट पूछ नहीं पाती , इसीलिए तो आपको कह रखा है ।

राजन – अभी तो नहीं पूछा । वैसे नीरज के कानों मे यह बात पहले से ही डाली हुई है । अब जब वह 'हा' कहेगा तब कोई बात बनेगी ।

रेखा – यह भी एक मुसीबत है । ये क्या अपने भाई से हां नहीं करवा सकते?

राजन – यह तो यही जाने । इसमे मै भला क्या कर सकता हू ?

रेखा – कर क्या नहीं सकते, सब कुछ कर सकते हो ।

राजन – वो कैसे ?

रेखा – ये आपके खास दोस्त है ।

राजन – वो तो है।

रेखा – फिर भी आपसे कुछ नहीं होता । आप क्या इन्हे जोर देकर कह नहीं सकते कि नीरज को इसके लिए राजी करना है ? डोर तो सारी इन्हीं के हाथ में है ।

राजन – लेकिन मै इसे जोर देकर कह नहीं सकता ।

रेखा – क्यों ?

राजन – वैसे ही ।

रेखा – जोर मत देवो , वैसे पोलाइटली तो कह सकते हो ?

राजन – पोलाइटली ही तो कहा था ।

रेखा – लेकिन एक दफे कहकर चुप हो गये ।

राजन - तो क्या बार - बार कहता रहू ?

रेखा - अपनी गर्ज हो तो एक दफे नहीं, सौ दफे कहना पडता है । मै जानती हू, ये आपकी बात को टाल नहीं सकते ।

राजन - मगर मै ज्यादा जोर देकर कहना नहीं चाहता ।

रेखा - क्यों , कोई खास बात है ?

राजन - बस यही समझलो ।

रेखा - (नकल उतारती) बस यही समझलो ।

राजन - हा । इसलिए कि एक दफे मैने इसकी बात को हवा में उछाल दिया था।

रेखा - वो क्या बात कही थी इन्होने ?

राजन - कोई भी कही हो । हर बात बतानी जरूरी नहीं है ।

रेखा - फिर तो मै पूछकर रहूगी ।

राजन - । (चुप)

रेखा - बताइये , क्या कहा था इन्होंने ?

राजन - देखो जिद मत करो । बेकार की बातों के लिए मेरा भेजा न चाटो ।

रेखा - क्या ऽऽ !! मै कोई बकरी हू जो आपका भेजा चाट जाऊगी ?

राजन - मुझे कुछ नहीं कहना ।

रेखा - जानते हो मै कौन हूं ?

राजन - एक रिटायर्ड पुलिस अफसर की बेटी।

रेखा - फिर तो यह भी जानते हो कि मैं जो चाहती हू उसे हासिल करके छोडती हूं?

राजन - जानता हूं ।

रेखा - फिर आप मुझसे कोई बात छिपाते क्यों हो ?

राजन - .. ... । (चुप)

रेखा - सुन नहीं रहे हो ? मै पूछती हूं इन्होने आपसे क्या कहा था जिसे आपने हवा मे उछाल दिया ?

राजन - . . . (चुप)

रेखा - बोलते क्यों नहीं ? (चीखती सी) क्या कहा था इन्होने ?

राजन - तो सुनो ! इसने कहा था .. ....इसने कहा था.. . .. मैं तुम्हारे साथ शादी न करूं ?

रेखा – एक दफे फिर कहना ।

राजन – इसने कहा था कि तुम जिस सुनीता के यहा जाती हो वो अच्छी लेडी नहीं है । उसकी सारी सहेलिया भी उसी की तरह गलत धारणाओं की शिकार हो रही है । इसलिए उसकी किसी सहेली से शादी करने का मतलब अपने पैरों मे कुल्हाडी मारना है।

रेखा – ओह तो यह बात है ! (विराम) फिर क्यों किया मुझसे विवाह ? इन्कार कर देते ।

राजन – इन्कार नहीं कर सका यही तो मजबूरी थी ।

रेखा – ऐसी क्या मजबूरी थी ?

राजन – किसी को अपनी मजबूरी बताना कोई जरूरी नहीं है ।

रेखा – लेकिन मै वो मजबूरी जानकर रहूगी । (कहती हुई आगे बढती है)

राजन – (पीछे खिसकता हुआ) लेकिन मै बताऊगा तब न !

रेखा – पीछे क्यों खिसक रहे हो ?

राजन – मेरी मर्जी ।

रेखा – ठहरो (पकडने की कोशिश करती है)

राजन – देखो तुम वहीं रहो ।

रेखा – नहीं आज मै आपकी वो मजबूरी जानकर रहूगी ।

राजन – रेखा!

रेखा – साफ – साफ बताते क्यों नहीं ?

राजन – बताने से हल क्या निकलेगा ?

रेखा – कुछ भी निकलो। मै बात की गहराई तक पहुच कर रहूंगी ।

राजन – फिर, मै बिल्कुल नहीं बताऊगा ।

रेखा – नहीं बताओगे ?

राजन – हा , नहीं बताऊगा ।

रेखा – देखती हू कैसे नहीं बताओगे । (पकडने की प्रक्रिया को तेज करती है)

राजन – मै कहता हू , आगे मत बढना ।

रेखा – तो पीछे मत खिसको ।

राजन – लेकिन तुम वहीं रुक जाओ ।

रेखा – नहीं . आप ऐसे नहीं मानेगे । (कहती हुई राजन को पकड़ने के पूरे उपक्रम करती है)

(राजन कुर्सियों को इधर-उधर खिसकाता हुआ एक बड़ी मेज के सहारे बचने का प्रयास करता है और फिर मौका देखकर उसी मेज के नीचे जाकर दुबक जाता है)

रेखा – (मेज के नीचे झांकती हुई) निकलिये बाहर ।

राजन – नहीं निकलता ।

रेखा – देखिये , निकल आइये । मुझसे बच नहीं सकेंगे ।

राजन – नहीं निकलता, नहीं निकलता ।

रेखा – तो नहीं निकलेंगे ?

राजन – कह दिया न, नहीं निकलता । (नकली शेर की तरह दहाड़ते हुए) तुम मुझ पर हुक्म चलाने वाली कौन होती हो ? यह मेरा घर है । मै इस घर का मालिक हू । मेज के ऊपर रहू या नीचे , तुम कहने वाली कौन? समझी। मेरी बिल्ली और मुझसे ही म्याऊ ।

रेखा – मै तो समझ गई , अब आपको समझाना है (कहती हुई नीचे झुककर मेज के नीचे से राजन के कुरते की कॉलर पकड़ लेती है) अब बोलिये।

राजन – रेखा यह क्या करती हो ? छोडो मेरी कॉलर। छोडती हो या नहीं ? (रेखा के हाथ से कॉलर छुड़वाने का प्रयत्न करता है)

रेखा – शोर मत मचाओ। चुपचाप बाहर निकल आओ।

राजन – (मेज के नीचे से निकलकर रेखा के हाथ से कुरते की कॉलर छुड़वाता है) कुछ तो शर्म करो।

रेखा – मुझे शर्मीली नहीं बनना।

राजन – तो मत बनो । बेशर्म बनी रहो । बोलो, क्या पूछना चाहती हो ?

रेखा – मै पूछती हू इन्होंने जब मना कर दिया तो आपने यह शादी का नाटक क्यों रचा?

राजन – सुनोगी?

रेखा – हां ।

राजन – इसलिए कि तुम्हारे पापाजी के अहसानों से मेरे पिताजी दबे हुए थे । इसी कारण . ...।

रेखा – ये मेरे पापाजी के कहे को वे टाल नहीं सके।

राजन – हा – हा ।

रेखा – लेकिन आप तो इन्कार कर सकते थे।

राजन – नहीं किया।

रेखा – क्यो नहीं किया?

राजन – पिताजी का मन रखने के लिए।

रेखा – जबकि मै आपको पसन्द नहीं थी।

राजन – यह बेतुकी बात बीच में क्यो जोडती हो ? पसन्द–नापसन्द की तो कोई बात ही नहीं थी।

रेखा – लेकिन मै जानती हू असली बात यही है।

राजन – यह बात होती तो मै तुम्हारी अगुलियो पर इस तरह कभी नाचता नहीं।

रेखा – क्या ऽऽ !!

राजन – हा ऽऽ !!

महादेव – (बाहर से आकर) मेमसाहिबा लालकोठी वाली बहिन जी वापस आई है?

रेखा – कौन सुनीता दीदी ?

महादेव – हा , जी ।

रेखा – कहा है ?

महादेव – बाहर बगीचे मे । पेडों की सूखी टहनियो को बडे गौर से खडी–खडी देख रहीं है।

रेखा – हमारे बगीचे में सूखे पेड – पौधो के सिवाय और है ही क्या ? देखकर हैरान हो रही होगी। कह दो मै आ रहीं हू।

महादेव – जी। (प्रस्थान)

रेखा – कॉलर के जरा हाथ क्या लगा दिया कि गुस्सा एकदम नाक पर चढ आया।

राजन – तुम्हें इससे क्या?

रेखा – खैर , मै चलती हू।

राजन – जाओ न, कौन मना करता है?

रेखा – बाहर मत आइये।

राजन – क्यो?

रेखा – थोडा अपना थोवडा तो देखो।

राजन – देखा हुआ है। मुझे अभी बाहर जाना है और इसी समय।

रेखा – कहा?

राजन – जहन्नुम में।

रेखा – क्यों , गुस्सा उतारने के लिए और कोई जगह ध्यान में नहीं आई?

राजन – मुझसे बहस मत करो।

रेखा – अच्छी बात है । पिछले वाले दरवाजे से चले जाइये । महादेव को कहो स्कूटर पिछली गली मे खडा कर देगा । (प्रस्थान)

राजन – (स्वगत) अच्छी पल्ले पडी । जीना हराम कर रखा है । इससे तो कुंआरा ही ठीक था । लेकिन पिताजी को न जाने क्या हुआ, इसके पापाजी की बात पर जरा भी ना–नुकर नहीं कर सके । वरना मुझे आज यह दिन देखने को नहीं मिलता । (प्रस्थान) (इसी के साथ मच पुनः अंधेरे के आगोश में छिपने लगता है।)

चार

(सुबह का समय । राजन का वहीं ड्राइंग रूम । महादेव फोन पर पार्वती से हंसता–हंसता बात करने में मग्न है ।)

महादेव – (फोन पर) तेरी बीबीजी क्या इतनी जल्दी ही कॉलेज चली जाती है ? अभी तो पौने सात ही बजे है।

पार्वती – (अपने फोन पर दिखाई देती हुई) अजी , सात बजे का कॉलेज है । तब जाना तो जल्दी ही पडता है न !

महादेव – और बच्चे . ?

पार्वती – . . . . . . वो उनसे पहले ही चले जाते है ।

महादेव – और , धीरज बाबू ?

पार्वती – बीबीजी , उन्हीं के साथ तो कॉलेज जाती है । लेकिन अभी दो दिन के लिए वे टूर पर गये है ।

महादेव – टूर पर ! यह फिर कौनसी गाडी है ?

पार्वती – यह तो मै भी नहीं जानती ।

महादेव – फिर तो यह कोई नई गाडी होगी ।

पार्वती – होगी . मैंने कौनसी देख रखी है. यहा तो यही कहकर गये हैं कि टूर पर दिल्ली जा रहे है । खैर , हमें क्या ? टूर पर जाये , चाहे हवाई जहाज में. वे जानें । (इसी समय बाहर से रेखा आ जाती है और कुछ देर के लिए चुपचाप खडी होकर महादेव की बातें सुनने लगती है।)

महादेव – लगता है , अभी तू वहा अकेली है।

पार्वती – और नहीं तो। यह अकेलापन ही तो बुरा लगता है। करने को कुछ काम हो तो अकेलापन खटकता नहीं है।

महादेव – कोई काम नहीं है तो फिर कोठी के ताला लगाकर कुछ देर के लिए अम्मा के पास क्यों नहीं चली जाती ?

पार्वती – वाह जी ! कोठी को इस तरह सूनी छोडकर कहीं जाया जाता है क्या?

महादेव – तो फिर अकेली बैठी वहा क्या करेगी ?

पार्वती – यही तो मुसीबत है। ऐसा करो न थोडी देर के लिए आप यहां आ जाओ न!

महादेव – मै .मै वहा आ जाऊं, यह कैसे हो सकता है ? मुझे यहां अभी बहुत से काम निपटाने हैं।

पार्वती – अजी , काम तो ऐसे ही निपटते रहेंगे। एक दफे यहां आकर ....।

महादेव – . नहीं–नहीं यह नहीं हो सकता। वैसे, तुझे वहां अकेली जानकर दिल तो मेरा भी बहुत करता है कि गुनगुनाते भंवरे की तरह उडता हुआ तुरन्त तेरे पास चला आऊं , लेकिन चाहने से क्या होता है?

(रेखा धीरे से नजदीक आकर महादेव के हाथ से फोन छीन लेती है और इशारे से उसे चुप रहने को कहती है ।)

रेखा – (फोन पर हाथ रखकर महादेव से) मुझे देखने दो , तुम पति – पत्नी रोज–रोज इतनी देर फोन पर क्या–क्या बाते करते हो ?

पार्वती – (फोन पर अपनी ही धुन में बोलती हुई) झूठ नहीं कहती । न जाने क्यो, आज आपसे मिलने को बहुत जी कर रहा है । वैसे तो दस – बारह बजे तक रोज यहा अकेली रहती हू । लेकिन अभी कुछ देर पहले कोठी की मुडेर पर बैठे मरे कबूतर–कबूतरी को आपस में गुटरगू – गुटरगू करते क्या देख लिया कि मै तो बावली ही हो गई । इससे पहले आपसे मिलने के लिए मन कभी इतना नहीं मचला । जी चाहता है कि इसी वक्त दौडी– दौडी आपके पास चली आऊं। किन्तु फिर सोचती हू कि आपकी मनहूस मेमसाहिबा मुझे देखकर कहीं बडबडाना शुरु न कर

दे । बुरा मत मानना, आपकी मेमसाहिबा एकदम सूमडी है । मेरी बीबीजी कहा करती है कि रेखाजी को अभी दुनियादारी का ज्ञान नहीं है। छ महीने होने को आये शादी करे हुए को, लगता है अभी तक उन्होने राजन बाबू को नजदीक से जाना ही नहीं है । बात तो उनकी सच्ची है । आपकी मेमसाहिबा को एक दफे भी मैने साहब के साथ कहीं जाते – आते नहीं देखा। पता नहीं, वे कौनसी माटी की बनी हुई है । आप भी तो कहते है कि उनके मुह पर कभी आपने खुशी के फूल खिलते नहीं देखे ।

रेखा – (फोन पर हाथ रखकर महादेव से) तेरी घरवाली तो बहुत बातूनी है। बोलती हुई रूकने का नाम ही नहीं लेती। तुझे वह अपने पास बुलाना चाह रही है अभी। (फोन पकड़ाते हुए) कह दे , अभी आ रहा हू।

महादेव – (फोन पर बतियाता हुआ) हु ! और भी कुछ कहना है?

पार्वती – कहना क्या है , आप एकदफे यहा जल्दी चले आइये न ।

महादेव – कहीं तू पागल तो नहीं हो गई है ?

पार्वती – क्यो , आपको क्या मेरे पागल हो जाने का विश्वास नहीं हो रहा है ?

महादेव – लगता है , अब तुझे जयपुर या आगरा ले जाकर कोई इलाज करवाना पडेगा।

पार्वती – और फिर मै आपको बुला ही क्यो रही हू। ईलाज करवाने के लिए ही तो बुला रही हू ।

महादेव – फिर तो तू मुझे भी वहा पागल बनाकर छोडेगी।

पार्वती – तो आप भी पागल हो जाइये न, मेरी तरह, मेरे पीछे ।

महादेव – अब थोडी शर्म कर ।

पार्वती – किसके आगे ?

रेखा – (फोन पर हाथ रखती हुई) अरे , उसे कहता क्यो नहीं कि आ रहा हू। बेमतलब ही उसे तरसा रहा है । जाता क्यो नहीं ?

महादेव – (फोन पर) आते क्यो नहीं – आते क्यो नहीं, तूने तो रट ही लगा दी? ठीक है आ रहा हू ।

रेखा – (खुश होती हुई) सच या झूठ ?

महादेव – सच । लेकिन एक बात सुनले । मै वहां आधे घटे से ज्यादा नहीं रूकूगा।

पार्वती – अजी , एक दफे आइये तो सही मेरे भोले भरतार ।

(दोनो अपने – अपने फोन रख देते है)

रेखा – महादेव , अपनी पार्वती की तरह बाते बनाने मे तो तू भी बहुत होशियार है । बीच-बीच मे उसकी मीठी बातो पर नमक छिडकना भी नहीं भूलता।

महादेव – जी , ऐसी तो कोई बात नहीं है । दरअसल, अभी यहा बहुत काम बाकी पडा है।

रेखा – पडा रहने दे। तू जा। हा , वापस जल्दी लौट आना।

महादेव – अच्छा जी। आप कहती है तो जाना ही पडेगा।

(प्रस्थान)

रेखा – (स्वगत) इसकी घरवाली तो सचमुच बहुत रसिक है। कैसी मीठी-मीठी बोल रही थी। (विराम) अपने मर्द से मिलने के लिए कितनी बेताब हो रही थी। (अचानक तेवर बदलकर) हु , ये सब बचकानी बातें है। औरत को इस तरह पुरुष के आगे सरेण्डर नहीं होना चाहिए। ऐसी बातों से ही तो औरत की कमजोरिया झलकती है और पुरुष को उस पर जोर जताने का मौका मिलता है। (विराम) समझ मे नहीं आता, पुरुष के बिना औरत अपने आप को अधूरी क्यो समझती है? लगता है, मुझे अब इस पर कुछ शोध करना पडेगा।

(अन्दर जाने लगती है कि फोन की घंटी बज उठती है)

रेखा – (फोन उठाकर) हेलो . . कौन पिताजी . . . प्रणाम-प्रणाम . यहीं उदयपुर से ही बोल रहे है न . . .कहिये क्या हुक्म है . ये ये तो अभी क्लब गये हुए है ... टेनिस खेलने हा – हा . वैसे , अब बस आने ही वाले है . . मै. .मै ठीक हू ... .. . जी. .. जी . अगले रविवार को जरूर आयेगे. . . . . हा जी. .... हा जी . क्यो नहीं . क्यो नहीं. .... मै होल्ड किये हुए हू. . बुलाइये न (विराम) .. .. . . कौन माताजी प्रणाम . .हा – हा . .... अजी खुशी की खबर यही है कि पापाजी रिटायरमैट के बाद अब यहीं सैटल हो गये है जी जी . .और तो खुशी की क्या खबर हो सकती है जी जी ... . . अभी पिताजी को कहा है न अगले रविवार को जरूर आयेगे.. अजी , ये चाहे साथ आये , न आये , मै जरूर आऊगी . . .. हा जी. हा जी . .. अच्छा जी. . . . .।

(फोन रखकर एकाएक कुछ सोच में पड जाती है कि मंच पर अंधेरा घिरने लगता है।)

पांच

(राजन का वही ड्राइंग रूम । दोपहर का समय। महादेव गुनगुनाता हुआ मेज पर रखे कपड़े समेट रहा है कि काल बैल बजती है ।)

महादेव - (स्वगत) आया जी । (कपडे एक तरफ इकट्ठे करके फाटक खोलने जाता है)

भीमजी - (अन्दर आते हुए) क्या बात है महादेव , घर मे कोई भी नहीं है ?

महादेव - जी , रेखा मेमसाहिबा तो दो घटे से आपके यहा गई हुई है ।

भीमजी - हमारे यहा! नहीं तो? वहा तो वो नहीं आई। हम अभी वहीं से आ रहे है।

महादेव - तब फिर सुनीता जी के यहां चली गई होंगी । उनकी लाल कोठी बीच मे ही पडती है ।

भीमजी - उसके यहा जरा फोन लगाकर पूछो । हम तो उसी से मिलने आये है और वो है कि बाहर चली गई ।

महादेव - जी , अभी फोन लगाकर पूछता हू । (कहकर सुनीता के यहां फोन करता है) हेलो कौन सुनीता जी के यहा से . अजी , मै रेखा मेमसाहिबा के घर से उनका सेवक महादेव बोल रहा हू. ये आपके यहा आई थी क्या . जी अच्छा तो सुनीता जी के साथ हॉस्पिटल गई है .. अच्छा - अच्छा. . . कोई बात नहीं जी . . । (फोन रखकर) जी , वे सुनीताजी के साथ हॉस्पिटल गई है . . .।

भीमजी - हॉस्पिटल जाने की फिर क्या जरूरत पड गई?

महादेव - जी , मेरा अनुमान सही निकला। सुनीता जी के सिवाय वे कहीं और जा ही नहीं सकतीं। वही उनकी खास सहेली है।

भीमजी - (मन ही मन बडबडाते हुए) वही तो उसे उल्टी पट्टी पढा रही है।

महादेव - हो सकता है , हॉस्पिटल से सुनीता जी के यहा वापस न लौटकर सीधी आपके यहां बंगले चली गई हो ।

भीमजी - यहा जायेगी तो तुरन्त फोन आ जायेगा।

महादेव - फिर तो साहबजी आपको थोडा इन्तजार करना पडेगा।

भीमजी - वो तो करना ही पडेगा। उससे मिलना बहुत जरूरी है।

महादेव - साहब जी, कहें तो थोडी चाय बना लाऊ?

भीमजी - नहीं रे। तू तो हमें यह बता, घर का सारा काम तू ही करता है या रेखा भी कुछ हाथ बटाती है ?

महादेव – वे हाथ क्या बटाये साहबजी, उन्हे फुरसत ही नहीं मिलती।

भीमजी – क्यो? वह सारे दिन करती क्या है?

महादेव – साहबजी, कहना तो नहीं चाहिए पर उन्हें घर मे खाली बैठे रहना पसन्द नहीं है। इस कारण वे अधिकतर बाहर ही रहती है । कभी आपके यहा तो कभी सुनीता जी के यहा।

भीमजी – हमारे यहा तो कभी – कभी ही आती है ।

महादेव – तब फिर सुनीता जी के यहीं उनका मन लगता है ।

भीमजी – इसका मतलब है , यहा उसका दीदा नहीं टिकता ।

महादेव – वे भी साहब जी क्या करे ? यहा उनको साथ कोई बात करने वाला भी तो नहीं है ।

भीमजी – क्यो , राजन बाबू क्या यहा नहीं रहते ?

महादेव – वे तो बैक चले जाते है ।

भीमजी – सुबह – शाम तो कहीं बाहर नहीं जाते ?

महादेव – हा , बैक से आने के बाद तो वे यहीं रहते है ।

भीमजी – फिर तो दोनो कहीं बाहर भी जाते होंगे ?

महादेव – जाते होगे, पर मैने दोनो को साथ जाते हुए कभी देखा नहीं।

भीमजी – क्या ऽऽ ! तूने कभी उन्हे कहीं साथ जाते देखा ही नहीं ?

महादेव – नहीं जी।

भीमजी – यह हम क्या सुन रहे है!

महादेव – जो सच है।

भीमजी – हु ऽऽ !! राजन बाबू अकेले तो कहीं बाहर जाते होगे ?

महादेव – नहीं जी । बैक से आने के बाद वे घर पर ही रहते है । आठ बजे तक बीच वाले बडे कमरे मे टी वी देखते है और खाना खाते है । उसके बाद अपने कमरे में चले जाते है।

भीमजी – और रेखा . ?

महादेव – उनका मुझे पता नहीं । आठ बजे के बाद मै तो अपने घर चला जाता हू। वे अपने कमरे में कब जाती है , कह नहीं सकता।

भीमजी – तो क्या दोनों अलग–अलग कमरे मे सोते है?

महादेव – जी , कमरे तो शुरू से ही दोनो के अलग – अलग है ।

भीमजी – (सिर पर हाथ रखकर) फिर तो मामला कुछ टेढा ही है । अच्छा यह बता, रेखा राजन बाबू के आगे बोलती तो सही है न ?

महादेव – साहब जी , उनका स्वभाव तो आपसे छिपा हुआ नहीं है । फिर भी ऐसी कोई बात नहीं है कि दोनो के बीच कोई, खाई खुद रही हो।

भीमजी – खाई खुदते हुए कोई देर थोडे ही लगती है । यह तो हमें मालूम है कि रेखा को कभी यह महसूस ही नहीं होता कि उसकी बात को कोई बुरा भी मानता है या नहीं ।

महादेव – खैर , इतना तो सही है कि दोनों अब एक – दूजे को समझने तो लग गये।

रेखा – (अचानक बाहर से आती हुई) अरे , पापाजी आप यहा' कब पधारे?

भीमजी – अभी थोडी देर पहले ही आये है। तुम कहा से आ रही हो?

रेखा – हॉस्पिटल से । सुनीता के पैर मे थोडी मोच आ गई थी , सो उसे दिखाने हॉस्पिटल चली गई उसके साथ ।

भीमजी – महादेव तो कह रहा है तुम हमारे यहां गई हो ?

रेखा – जा तो उधर ही रही थी । बीच में सुनीता को अपनी कोठी के बाहर थोडा लडखडाते हुए कार में बैठते देखा तो वहीं रूक गई । फिर उनके साथ ही हॉस्पिटल जाना पडा । वहां टाइम कुछ ज्यादा लग गया तो फिर आपके उधर जा ही नहीं पायी । सीधी यहीं चली आई ।

भीमजी – हमें एक बात समझ में नहीं आ रही कि तुम्हारे पैर अपने घर में क्यो नहीं टिकते ? कभी इस ओर भी कोई ध्यान दिया है तुमने?

रेखा – घर की जिम्मेदारी तो पापाजी , इस महादेव ने अपने ऊपर ले रखी है।

भीमजी – गलत। इसने नहीं ली, बल्कि तुमने जबरदस्ती इस पर डाल रखी है। मगर यह बात अच्छी नहीं है।

महादेव – मेमसाहिबा, कहे तो मै बाहर से चाय की पत्ती ले आऊं ? सुबह लाना भूल गया था।

रेखा – ले आ। जल्दी आना।

महादेव – अच्छा जी। (प्रस्थान)

भीमजी – बेटी , एक बात हमने तुझे पहले भी कही थी और आज भी कह रहे है। विवाहित कन्या के लिए उसका ससुराल ही असली घर होता है ।

रेखा – यह बात मैं कौनसी जानती नहीं?

भीमजी – तो फिर जानते हुए यह नासमझी की बात क्यों करती हो ? हमें इस बात की घोर पीड़ा है कि तुम कर्नल जगजीत सिंह की बिगडैल बेटी सुनीता के पदचिन्हों पर चल रही हो ।

रेखा – पापाजी ।

भीमजी – पहले हमें अपनी बात पूरी कह लेने दो । कर्नल जगजीत सिंह की बेटी सुनीता वही है जिस पर अहंकार का रंग उस पर इस कदर चढ़ा रहा कि उसने ससुराल को कभी ससुराल नहीं समझा । पति को पैर की जूती से ज्यादा जाना नहीं । उसी का यह परिणाम है कि आज वह अपने पति से अलग होकर कर्नल साहब की कोठी को कंगाली के कगार पर ले जाने पर तुली हुई है ।

रेखा – लेकिन वे तो इस बारे में कुछ और ही कहती है ?

भीमजी – जबकि कर्नल साहब के रौबीले चेहरे पर बेवक्त पड़ी झुर्रियां स्वतः ही बता रही है कि उनकी इकलौती बेटी सुनीता के झूठे अहंकार से उपजी त्रासदी ने उन्हें अन्दर तक हिला दिया है । आज जब हम अपनी बेटी को उनकी बेटी के बहकावे में आई हुई देखते है तो किंचित दुष्परिणामों की कल्पनामात्र से ही हमें हृदयाघात सा होने लगता है ।

रेखा – नहीं , पापाजी ऐसा आप कुछ मत सोचिये । मै समझती हूं आपको जरूर कुछ भ्रम हुआ होगा ।

भीमजी – बेटी हम कोई अनाडी नहीं है । अनुभवों का दायरा हमारा बहुत चौडा है । जो आशंका हमारे भीतर घर कर रही है , यदि वो गलत है तो हमें यह बताओ , राजन बाबू के साथ तुम जो व्यवहार कर रही हो , क्या वो सही है?

रेखा – यह आपको किसने कह दिया कि मै उनके साथ कोई दुर्व्यवहार कर रही हूं?

भीमजी – यह तो तुम अपने दिल से पूछो । पत्नी होकर तुमने अब तक उन्हें कौन सा सुख दिया है ? कुछ गहराई से सोचो । तारामती , अनुसूइया और सावित्री की गाथाएं क्या बिल्कुल ही भूल गई ?

रेखा – . . . . । (कुछ प्रत्युत्तर न देकर सिर नीचे झुका लेती है)

भीमजी – जानती हो , आज तुम्हारे कारण हमे धीरज बाबू के आगे कितना नीचे देखना पडा ।

रेखा – उन्होने फिर आपको क्या कह दिया ?

भीमजी – उनके कहने में सच का वो सार था , जिसके बारे मे हम कभी सोच ही नहीं सकते ।

रेखा – मुझे बताइये तो सही , उन्होंने क्या कहा ?

भीमजी – वे बोले– मै अपने भाई नीरज को, वो सजा हरगिज नहीं देना चाहूंगा, जो वर्तमान मे आपके दामाद राजन बाबू भुगत रहे है ।

रेखा – ऐसी बेतुकी बात । वे भला ऐसी कौनसी सजा भुगत रहे है ?

भीमजी – तुम्हारी बेरुखी की , तुम्हारे अडियलपन की और तुम्हारी नासमझी की। जरा हमें यह बताओ, तुमने राजन बाबू के पास बैठकर क्या कभी दो मीठे बोल भी बोले है ?

रेखा – वे जब मुझसे बेमतलब ही खींचे – खींचे से रहते है तो भला मेरा इसमे क्या दोष ? मेरा कमरा उनके लिए हरदम खुला हुआ है । मैने प्रतीक्षा में कोई कमी नहीं रखी , मगर उन्होने मेरे कमरे में आकर कभी झाका तक नहीं ।

भीमजी – माना , उन्होंने तुम्हारे कमरे की ओर नजर नहीं उठाई , लेकिन तुम यदि उनके कमरे में चली जाती तो तुम्हारा क्या बिगड जाता ? परमात्मा ने जब उनके लिए ही तुम्हारी रचना की है तो तुम्हे उनके पास जाने मे क्या आपत्ति है?

रेखा – अजी , जब मेरी रचना उनके लिए हुई है तो क्या उनकी रचना मेरे लिए नहीं हुई ? वे भी तो मेरे कमरे में आ सकते है।

भीमजी – लेकिन तुम यह क्यों भूल जाती हो कि पत्नी हमेशा अपने पति की सहधर्मिणी कहलाती है । पति आगे चलता है, पत्नी उसके पीछे ।

रेखा – सुनीता दीदी का यह कहना कि औरत को कभी मर्द से दबकर नहीं रहना, क्या यह सही नहीं है ?

भीमजी – कहा न , उसका यही सोच तो उसके गृहस्थ जीवन की तबाही का कारण बना ।

रेखा – पापाजी , मेरी यह समझ में नहीं आता कि सुनीता दीदी को फिर यह गलत सीख किसने दी कि पुरुष औरत को हमेशा दबी हुई देखना चाहता है। इसीलिए आज की औरत को प्रतिकार स्वरूप पुरुष को कभी कोई जुल्म ढहाने का मौका नहीं देना चाहिये।

भीमजी – अरे यह अनर्गल सीख चाहे उसे किसी ने दी हो लेकिन उसका दुष्परिणाम आज सबके सामने है। बेटी हम चाहते है कि तुम ऐसी किसी गलत धारणा की कहीं शिकार न हो जाओ ।

रेखा – शिकार हो जाती , यदि आपकी ये बातें कानो मे न पडती ।

भीमजी – अब तक तुम्हारी तरफ से हम जो अधेरे मे रहे, आज सही समय प्रकाश की इन नई किरणो ने हमे अपनी खुशी का अहसास करा दिया , हमारे लिए यह बहुत बडा उपहार है ।

रेखा – पापाजी , वाकई सुनीता दीदी की बातो मे आकर मैने जीवन के अधिकाश सुनहरे पृष्ठो पर काली स्याही फेरने मे कोई कसर नहीं रखी।

भीमजी – खैर , सुबह का भूला शाम को घर लौट आये तो वो भूला नहीं कहलाता।

रेखा – (गलगली होती हुई) अब मै किन शब्दो मे किनसे क्या माफी मागू , समझ नहीं पा रही हू ।

भीमजी – बेटी , अभी कुछ नहीं बिगडा । चिन्ता न करो । आवश्यकता है समझदारी से काम लेने की । सुहाग के सिन्दूर की सुध लेने की बात पर, अब तुम्हे सब से पहले गौर करना है

रेखा – सबसे पहले तो मै आपके साथ चलकर मम्मी जी से क्षमा मागना चाहती हू।

भीमजी – यह तो बहुत ही अच्छी बात है । तुम्हारी मम्मी तुम्हें याद भी कर रही थी आज सुबह।

रेखा – फिर तो मै इसी समय चलती हू । (आवाज देकर) महादेव!

महादेव – (अन्दर से आकर) जी , मेमसाहिबा।

रेखा – देखो , मै पापाजी के साथ बगले जा रही हू । ये आयें तो इन्हे वहीं भेज देना । आते समय हम दोनो साथ आ जायेगे ।

महादेव – जी ।

(भीमजी के साथ रेखा का प्रस्थान)

महादेव – (स्वगत) आज मै यह क्या सुन रहा हू ? (कान साफ करते हुए) मेरे कानों में कहीं कोई कचरा तो नहीं धुस गया कि मुझे कुछ उल्टा सुनाई दे गया हो । मेमसाहिबा क्या यह सच कह गई कि आते समय दोनों साथ आ जायेंगे । न–न–न, जरूर मुझे कुछ गलत सुनाई दे गया । पूर्व मे उगने वाला सूर्य, पश्चिम में तो उदय हो ही नहीं सकता । अचानक ऐसा बदलाव . .. नहीं – नहीं . . . ... (कहकर अचानक स्थिर होकर रह जाता है कि मच को अधेरा अपने आगोश में ले लेता है।)

छ:

(शाम का समय । राजन का वही ड्राइंग रूम। राजन सोफे पर बैठा चाय पीता हुआ कोई पत्रिका पढ़ रहा है ।)

महादेव – (प्रवेश करके) अभी थोड़ी देर पहले मेमसाहिबा का फोन आया था कि आप बैंक से लौट आये क्या ?

राजन – क्यों , ऐसी क्या बात थी ?

महादेव – वे आपको बंगले पर आने को कह रही थी ।

राजन – वो वहा कब गई थी ?

महादेव – दोपहर को । एस पी साहब आये थे । उनके साथ ही चली गई थी ।

राजन – पर मुझे वहां नहीं जाना ।

महादेव – अच्छा जी ।

(राजन चाय पीकर कप रखता है कि महादेव उसे उठाकर अन्दर ले जाता है । राजन पुनः पत्रिका पढ़ने लगता है कि फोन की घंटी बजती है)

राजन – (फोन उठाकर) हेलो – कौन ....धीरज. ... . .हां मै राजन बोल रहा हूं... . ... बस , अभी आकर बैठा ही हू...... . .. .. . क्या.. ......आज नीरज की बर्थडे है. ... .. . .यह तो बहुत खुशी की बात है. .. ..हां... .. . .हां... ..क्यों नहीं . . .... जरूर आऊंगा........ ...क्या.... ..... . अभी. ....इसी वक्त... .. . अरे भई मुझे कुछ फ्रेश तो हो लेने दो ......हा – हा ... .फ्रेश होते ही चला आऊगा . ... .प्रोमिज . ... वो यहा नहीं है... . . ....अपने मायके गई हुई है....... . .....हां – हां . ... मैं आ रहा हू. . ... स्योर. ....स्योर.......... . .स्योर ....। (फोन रख देता है)

महादेव – (अन्दर आकर) साहब धीरज बाबू का इससे पहले भी फोन आया था।

राजन – तुमने जिक्र तो नहीं किया ।

महादेव – भूल गया साहब।

राजन – अच्छा देखो, बगले से फिर फोन आये तो कहना मै अभी तक आया नहीं।

महादेव – अच्छा जी ।

राजन – मैं तब तक फ्रेश होकर आता हू ।

(प्रस्थान)

महादेव – (स्वगत) मेमसाहिबा का फोन तो बस अभी आया रहेगा । जब तक साहब से बात नहीं होगी , उन्हें चैन नहीं है ।

(कहकर ड्राइंग रूम की थोड़ी सफाई करता है कि फोन की घंटी बज उठती है ।)

महादेव - (फोन उठाकर) हैलो जी मेमसाहिबा साहब अभी तक आये नहीं नहीं तो कहीं से उनका फोन भी नहीं आया जी जी उनके आते ही मैं आपको फोन कर दूगा हा जी हां जी ...क्या यहा खाना नहीं बनाना जी जी अच्छा जी ...(फोन रखकर स्वगत) यह भी एक मुसीबत है। साहब कह रहे हैं उन्हें यहा जाना नहीं और ये फरमा रही है कि यहा खाना नहीं बनाना। तो क्या साहब को भूखा रखना है? कुछ समझ में नहीं आ रहा। साहब से ही पूछ लेता हू। देखता हू ये क्या कहते हैं । वे जो कहेंगे मै तो वही करूगा ।

राजन – (फ्रेश होकर अन्दर से आते हुए) क्या सोच रहे हो महादेव ?

महादेव – जी मेमसाहिबा का अभी फिर फोन आया था । मैंने कह दिया आप अभी तक आये नहीं है ।

राजन – अच्छा किया ।

महादेव – लेकिन साहब , उन्होंने यहा खाना बनाने के लिए मना किया है ।

राजन – यह तो और भी अच्छा है । मै अभी धीरज के यहा जा रहा हू । उसके भाई का बर्थ डे है । खाना मेरा वहीं है । इसलिए तुम्हें खाना बनाने की जरूरत भी नहीं है।

महादेव – फिर तो ठीक है साहब।

राजन – मै अब धीरज के यहा जा रहा हू।

महादेव – मेमसाहिबा का फिर फोन आया तो क्या कहू?

राजन – कहना मेरा फोन आया था। मुझे किसी काम से कहीं जाना पड गया सो लेट आऊगा।

महादेव – फिर तो वे यह पूछेगी कि मैने आपको बगले पर जाने के लिए कहा या नहीं ?

राजन – कह देना, कहा था। लेकिन वे जहां जा रहे है , वहां कोई जरूरी काम है।

महादेव – अच्छा जी । आठ बजे तक तो लौट आयेगे न साहब?

राजन – वो तो आना ही है । बल्कि मै आठ से पहले ही लौट आऊगा । उसे गुस्सा होने का मौका थोडे ही देना है । अच्छा मै चलता हू ।

(प्रस्थान)

महादेव – (स्वगत) साहब भी एक अजूबा है । बैंक के बडे अफसरो मे इनकी गिनती है , लेकिन यहा घर आते ही इनकी सारी अफसरी धरी रह जाती है। मेमसाहिबा के सामने तो अपनी पहचान तक भूल जाते है । उन्होंने एक दफे आठ बजे तक हर हालत में घर लौट आने का क्या कह दिया, साहब ने तो गाठ ही वाध ली । मुझे याद नहीं कि आठ बजे से पहले वे कभी घर न लौटे हो । हा इतना जरूर है कि मेमसाहिबा भी प्राय आठ से पहले-पहले घर आ जाती है ।

पार्वती – (अचानक अन्दर आती हुई) अकेले बैठे - बैठे किससे बाते कर रहे हो जी ?

महादेव – (चौंकते हुए) अरे , तू इस समय यहा कैसे आ गई ?

पार्वती – (हंसती हुई) पैरों से चलकर । अजी यह पूछो कि क्यों आई हूं ?

महादेव – क्यो आई है ?

पार्वती – ऐसे ही । सोचा , आप भी काम से निपट गये हों तो दोनो साथ ही घर चले चलें ।

महादेव – चल तो देता तेरे साथ , लेकिन अभी यहा कोई नहीं है ।

पार्वती – तो फिर अकेले बैठे अभी कौनसी मेमसाहिबा के साथ बतिया रहे थे ?

महादेव – मेमसाहिबा फिर कौनसी ? हमारी मेमसाहिबा तो . ।

पार्वती – ... . .आपकी नहीं साहब की ।

महादेव – हा – हां , उन्हीं की । वे अपने मायके गई हुई है ।

पार्वती – तो फिर क्या दीवारो से बातें कर रहे थे ?

महादेव – हा , यही समझ ले । वैसे , मै तुझे अभी याद करने ही वाला था ।

पार्वती – सच ।

महादेव – हा ।

पार्वती – तो बताइये , अचानक मैं आपको कैसे याद आ गई ?

महादेव – क्या करू ? जब अकेला होता हूं और कोई काम नहीं होता तो तू झट याद आ जाती है ।

पार्वती – क्यो झूठ बोलते हो ? आप मुझे याद करे , ऐसा मेरा भाग्य ही कहा?

महादेव – झूठ नहीं, सच कहता हूं ।

पार्वती – बस-बस, रहने दीजिए ।

महादेव – अच्छा , तूं बता , इस कटोरदान में क्या लाई है ?

पार्वती – थोडा सा हलुवा । बीबीजी ने आज पहली दफे मुझसे यह हलुवा बनवाया है । किसलिए , जानते हो ?

महादेव – जानता हू । आज उनके देवर का बर्थडे है ।

पार्वती – बर्थ डे ?

महादेव – जन्म दिन ।

पार्वती – हा , तो फिर यह कहो न ! पर आप को कैसे पता ?

महादेव – हमारे साहब अभी वहीं तो गये है ।

पार्वती – हा , यह आपने ठीक कहा ।

महादेव – लेकिन तू यह कटोरदान लेकर यहा क्यों चली आई ? सीधे घर ही चली जाती ।

पार्वती – अजी कहा न, मैने सोचा आप काम से निपट गये हों तो दोनों साथ ही घर चलेगे । अब जब आप साथ नहीं चल रहे है , तब थोडा सा हलुवा यहीं खा लीजिए । अभी तो गर्म – गर्म है। फिर ठण्डा हो जायेगा।

महादेव – न – न , अभी नहीं। घर आकर खा लूगा।

पार्वती – लेकिन आप तो देर से आयेंगे।

महादेव – तो क्या हुआ?

(इसी समय बाहर से रेखा आकर चुपचाप एक ओर खड़ी होकर दोनों की बातें सुनने लगती है।)

पार्वती – अच्छा तो फिर आप जल्दी आना । आप जब तक नहीं आयेगे , मै भी नहीं खाऊगी । आपकी बाट देखती रहूंगी ।

महादेव – चींटू की मा , मेरी बाट मत देखा कर । मेरे आने में देर सवेर हो ही जाती है । इसलिए मेरी चिन्ता करनी छोड दे ।

पार्वती – अजी , आपकी चिन्ता नहीं करुगी तो और किसकी करूंगी ? जब तक आप घर नहीं आते , चिन्ता तो बनी ही रहती है ।

महादेव – फिर तो मै भाग्यशाली हू कि मुझे तुम जैसी पत्नी मिली ।

पार्वती – मै आपसे भी अधिक भाग्यशाली हूं कि मुझे आप जैसे भरतार मिले ।

महादेव – बस – बस , रहने दे ।

पार्वती – अरे हा , उस दिन की बात याद आते ही मुझे हंसी आने लगती है । आपने जब यह बताया कि टेलीफोन पर मेरी सारी बातें मेमसाहिबा सुनती रही तो यह जानकर मै तो पानी – पानी हो गई ।

महादेव – उस वक्त तो वाकई मै भी एकदम सकपका गया । एकाएक पीछे से आकर उन्होंने मेरे हाथ से फोन छीन लिया और मुझे मुह बन्द रखने का इशारा करके चुपचाप कान लगाकर तेरी बाते सुनने लगीं।

पार्वती – पता नहीं , मै भी उस समय क्या-क्या बोलती गई । मुझे क्या पता कि मेरी सारी बाते आप नहीं , मेमसाहिबा सुन रही है ।

महादेव – चिन्ता ना कर । तेरी मीठीं बातों मे नींबूरस का थोडा खटास भी रहता है । मेमसाहिबा को तेरी बातो मे कुछ मजा ही आया होगा ।

पार्वती – अजी , उन्हें क्या मजा आया होगा ! वे एकदम सूमडी है । (अचानक होठों पर हाथ रखकर) अजी याद आया , फोन पर मैने उनको सूमडी ही कहा था । हाय राम उन्होने क्या सोचा होगा ?

महादेव – तुझे सूमडी वाली बात तो मुह से निकालनी ही नहीं चाहिए थी ।

पार्वती – मुझे क्या मालूम कि मेरी बाते उनके कानों मे जा रही हैं , अब क्या हो, मेरे मुंह से तो जो बाते निकलनी थी निकल गई । गुस्सा तो उन्हे जरूर आया होगा ।

महादेव – गुस्सा तो वैसे भी , उनकी नाक पर चढा ही रहता है ।

पार्वती – लगता है इसीं कारण दोनो मे ज्यादा पटतीं नहीं है ।

महादेव – तुझे कैसे पता ?

पार्वती – यह बात कभी छिपी रहती है क्या ? दोनों मे यदि पटती होती तो मेमसाहिबा के पैर अब तक भारी नहीं हो जाते ?

महादेव – मै यही सोच रहा था कि आखिर तेरे मुंह से यही बात निकलेगी ?

पार्वती – अजी , इस बात को आप क्या – जाने ? औरत होते तो मेरी बात समझते । गोद हरी होने की कितनी चाह होती है , यह औरत के सिवाय और कोई नहीं जान सकता ।

महादेव – लेकिन इस घर में अभी ऐसे हालात नहीं है । साहब कहीं सोते है और मेमसाहिबा कहीं ।

पार्वती – हाय राम ! तो क्या दोनो अभी अलग ही रह रहे हैं ? कभी साथ नहीं हुए ?

महादेव – लगता तो मुझे कुछ ऐसा ही है ।

पार्वती – फिर तो यह मेमसाहिबा की गलती है । साहब कहीं भी रहे, मेमसाहिबा को उनके पास ही रहना चाहिए । एक दफे उनके आगे मीठी मनुहार करके तो देखे , दिल के सारे अरमान फूलो की तरह खिल न जाये तो हमें कहें ।

महादेव – लेकिन यह बात उन्हें समझाये कौन ? बिल्ली के गले में घंटी कौन बांधे?

पार्वती – अजी , कभी मौका मिला तो यह काम मै ही करूगी । कहूगी कि साहबजी को एक दफे साजन बना कर तो देखे, सजनी के पैरो मे धुघरू न बजने लगे तो मेरे कान मरोड देना ।

(इसी समय रेखा पास आ जाती है)

रेखा – यह कौन है महादेव ?

महादेव – जी , यह मेरी घरवाली है। धीरज बाबू के यहा काम करती है।

पार्वती – नमस्ते जी।

रेखा – नमस्ते । (महादेव से) अच्छा तो यह है तेरी पार्वती जो आये दिन फोन पर अपने महादेव से बतियाती रहती है ।

महादेव – जी, मेमसाहिबा। अरे हा अभी साहब का फोन आया था ।

रेखा – कहा से?

महादेव – कहा से किया यह तो पता नहीं । बोले, मै एक जरूरी काम से कहीं जा रहा हू। चिन्ता मत करना।

रेखा – चिन्ता न करे तो क्या खुश होये? आयेगे कब, यह नहीं बताया?

महादेव – नहीं जी।

रेखा – कोई बात नहीं। आठ से पहले तो उन्हे आना ही है।

महादेव – जी।

रेखा – अच्छा , यह बता, फूलों की मालाए शहर मे कहा मिलती है?

महादेव – क्यो लानी है तो मै ले आऊ?

रेखा – नहीं, तुम पार्वती के पास रहो। मुझे बताओ कहा मिलेगी? मेरे पास पापाजी की गाडी है। मै खुद जाकर ले आऊगी।

महादेव – देखिये, मन्दिर मे चढ़ानी है तो बडे शिव मन्दिर के आगे मिल जायेगी। यदि बडी और सुन्दर वर माला लेनी है, तो सब्जी मार्केट के आगे वाली दुकानो पर जाना पडेगा ।

रेखा – यह सब्जी मार्केट फिर कहा है?

महादेव – पब्लिक पार्क के आगे से जब बापू बाजार जायेगे तो बीच मे दाए ओर सब्जी मार्केट अपने आप नजर आ जायेगा।

रेखा – फिर तो पता लगा लूगी। ये आये , तब तक मै उधर हो आती हू ।

महादेव – अब तो खाना बना लू ?

रेखा – नहीं । मै आते वक्त कुछ मीठा – नमकीन ले आऊगी । खाना खाने की जरूरत नहीं पडेगी। हा , ये नहीं आये तब तक, तुम यहीं रहना।

महादेव – अच्छा जी।

(रेखा का प्रस्थान)

महादेव – देखा लीं हमारी मालकिन को ?

पार्वती – देख ली ।

महादेव – आज तो कुछ बदली –बदली सी नजर आ रही है ।

पार्वती – इसलिए कि उस दिन मैने फोन पर इनके थोडे कान ऐंठ दिये थे ।

महादेव – फिर तो मुझे भी तुझसे डरना पडेगा ।

पार्वती – नहीं डरोगे तो त्रिया – चरित्र दिखाती देर नहीं लगाऊगी । हा SS !! फिर छींकते फिरोगे (कहकर उठने लगती है)

महादेव – अभी थोडी देर तो और बैठ।

पार्वती – ना – ना । इतनी देर बैठ गई , यही बहुत है । चींटू कहीं सो नहीं जाये इसलिए जल्दी जाकर उसका मुह मीठा कराना है । (कहकर कटोरदान उठाकर बाहर चली जाती है)

महादेव – (स्वगत) जा भई , मेरा भी कोई राम है। साहब जब तक नहीं आये , मुझे तो यहीं बैठे रहना है । अरे हा , पहले दरवाजा तो बन्द कर आऊ। अधेरा होने लगा है ।

(उठकर बाहर जाता है और दरवाजा बन्द करके वापस लौटता है कि फोन की धटी बज उठती है।)

महादेव – (फोन उठाकर) हेलो . मै महादेव बोल रहा हू . आप कौन . ... ,,?

राजन – (धीरज के यहां से फोन करता दिखाई देता है) अरे कौन क्या मै हू ।

महादेव – आप जो भी हो . मुझे इससे कोई मतलब नहीं . मेरे साहब अभी घर पर नहीं है . . ।

राजन – वाह रे . . . . .. मूर्ख.. . . ... ।

महादेव – देखो जी . . . .मुझे मूर्ख – वूर्ख कहने की जरूरत नहीं है . . . जानते नहीं. . . . . . .मै बहुत अक्कड स्वभाव का हू . . . मुझे किसी की अट सट सुननी पसन्द नहीं है . . . क्या समझे.!

राजन – अरे तुम अपनी ही कहते रहोगे या मेरी भी कुछ सुनोगे . . ।

महादेव – क्या सुनू. . . आपकी बहुत सुन चुका. साफ – साफ कहो, क्या कहना चाहते हो. . ?

राजन – तुम्हारा सिर . .. . .।

महादेव – मुह संभालकर बोलिये जनाब . मेरा नाम महादेव है.. . . किसी जमाने मे मेरे बापू पहलवानी किया करते थे .. . . .सो उनकी तरह मै भी किसी से डरने वाला नहीं हू ... . हा ... .।

राजन – अरे पहलवान के बच्चे यह क्या चरपर – चरपर मचा रखी है मेरी आवाज नहीं पहचानते . . .. ..मै राजन बोल रहा हू ।

महादेव – क्या SS !! ।

राजन – हा मै हू राजन ।

महादेव – फिर फिर तो. साहब मझसे वहुत गलती हो गई अव पहचान गया साहव मुझे माफ करे जी माफ करें ।

राजन – अरे अब यह रीं –रीं मत करो । यह बताओ , मेमसाहिबा कहा है . . ?

महादेव – जी वे एक दफे आई थीं . . लेकिन फिर वापस चली गई . ।

राजन – कहा गई . . . पता है ?

महादेव – जी सब्जी मार्कट गई हैं . ।

राजन – सब्जी मार्केट . . कहीं तेरा दिमाग तो खराव नहीं हो गया भला उसे सब्जी मार्केट से क्या लेना . तुमने कोई गलत सुन लिया होगा .।

महादेव – नहीं जी . गई तो वे सब्जी मार्कट ही है मुझे उसके बारे मे कुछ पूछा भी था . ।

राजन – ठीक है ठीक है मै सीधा घर ही आ रहा हू . . . . . ।

(दोनो अपने – अपने फोन रख देते हैं)

महादेव – (स्वगत) अजीब बात है । (कानो को कुचरता हुआ) न जाने आजकल इन कानो को क्या हो गया ? कहीं कोई कीडा तो नहीं घुस गया ? या कानो की बत्ती बुझ गई कि साहब की आवाज भी नहीं पहचान सका. . . ... हद हो गई .. .. ।

(फ़ोन की घंटी एक दफे फिर बजती है पर तुरन्त ही बन्द हो जाती है)

महादेव – (स्वगत) मुझे लगता है साहब ने धीरज बाबू के यहा कुछ खाया नहीं होगा । खाये भी कैसे. . .. ध्यान तो उनका इधर लगा हुआ है कि कहीं देर न हो जाये । खैर , मै ठहरा एक सेवक । कर ही क्या सकता हूं ? मेमसाहिबा ने यदि मना नहीं किया होता तो मै उनके लिए यहा खाना बना देता । अब मेरा तो इसमे कोई कसूर है नहीं । आगे साहब जाने और मेमसाहिबा जाने । अरे हां , मेमसाहिबा आते समय कुछ मिठाई – नमकीन लाने का कह रहीं थीं । फिर ठीक है । साहब भूखे तो नहीं रहेंगे। मगर एक बात समझ मे नहीं आई । मेमसाहिबा आज किस पर इतनी मेहरबान है कि फूलों की मालाए लेने गई है। क्या कोई

मेहमान तो आने वाला नहीं है ? हो सकता है , यहीं बात हो । वरना इतना तामझाम करना उनके वश का नहीं है ।

(कहता हुआ सोफे पर बैठकर आराम करता है कि कालबैल बजे उठती है । उठकर बाहर का दरवाजा खोलता है ।)

राजन – (अन्दर आते हुए) देर तो ज्यादा नहीं हुई ?

महादेव – (पीछे – पीछे आते हुए) नहीं तो ।

राजन – अच्छा हुआ , मै रेखा से पहले ही आ गया ?

महादेव – वे भी बस अब आने वाली है।

राजन – किसी की कार में गई है या टैक्सी मे?

महादेव – बगले से गाडी लेकर आई थी । उस में गई है ।

राजन – खैर , तुम अब अपने घर जाओ।

महादेव – अच्छा जी । (कहकर जाने लगता है)

राजन – (कुछ सोचकर) अरे – अरे , थोडा ठहरो । मुझे एक काम याद आ गया। सुबह उसने एक नेकलैस ठीक करवाने को दी थी । बैक जाते हुए मैं उसे सोनी मामराज के यहा दे तो गया था , लेकिन आते समय लाना भूल गया । कल उसे वहीं नेकलैस पहनकर कहीं जाना है । अभी आते ही वह उसके बारे मे पूछेगी?

महादेव – दूकान बता दो तो मै वहा से ले आऊ?

राजन – अब तुम क्या लाओगे? मेरे पास स्कूटर है। पाच मिनट लगेंगे , अभी ले आता हू।

महादेव – फिर तो साहब फुर्ती कीजिए । मेमसाहिबा के आने का टाइम हो गया है । उन्हें भी तो आठ से पहले –पहले आना है ।

राजन – मुझे पता है । लेकिन मै उससे पहले ही लौट आऊंगा । (जाते – जाते) लेकिन एक बात सुनो , कल को मुझे वहां दो-चार मिनट अधिक लग जाये और खुदा न खास्ता वो पहले आ जाये तो तुम एक काम करना. ... . ।

महादेव – क्या साहब... . ... ?

राजन – इस सोफे पर कोई चदर ओढकर सो जाना ।

महादेव – क्या ऽऽ !! यह आप क्या कह रहे है साहब ?

राजन – अरे , इतने डरते क्यो हो ? पहली बात तो यह है कि मै हर हालत में जल्दी लौट आऊगा । दूसरी बात आठ बजने में अभी थोडा समय है और वो आठ से एकदम पहले आ जाय यह मानने वाली बात नहीं है । मान लो , वो सयोग से मुझसे पहले आ भी जाय ता तुम हडबडाना मत । वो आते ही रोज की तरह सीधी अपने कमरे मे जायेगी ।

महादेव – लेकिन साहब , यदि वे यहा आ गई तो ?

राजन – अरे ऽऽ ! ऐसे मेरे कहा भाग्य कि वो यहा आकर रूके । इस बारे मे तो तुम निश्चिंत रहो । वैसे भी वो चार पाच दिनों से रीस मे ऊपर तक भरी हुई है । इस ओर तो वो आख उठाकर भी नहीं देखेगी । वो यहीं सोचेगी कि यहा बैठे – बैठे मुझे नींद आ गई होगी । इसलिए डरने जैसी तो कोई बात ही नहीं है।

महादेव – साहब , सबसे बडा डर तो मुझे इस बात का है कि उनके बाहर से आते ही कहीं मेरे शरीर मे कपकपी न छूट जाये।

राजन – वाह रे डरपोक ! कुछ देर पहले तो तुम फोन पर दहाड मार रहे थे कि पहलवान का बेटा होकर मै किसी से डरने वाला नहीं हू । अब इस छोटी सी बात पर ही लींद करने लग गये?

महादेव – साहब , मेमसाहिबा के आगे जब बडो – बडो की सांस उखडने लगती है तो मेरी फिर क्या औकात?

राजन – अच्छा – अच्छा , ज्यादा डरो मत । मै दरवाजा बाहर से बन्द करके जा रहा हूं। तुम अन्दर से चिटकनी मत लगाना । मै तुरन्त ही लौट आऊंगा।

महादेव – अच्छा जी । बस , आप जल्दी आ जावे ।

(राजन का प्रस्थान)

महादेव – (स्वगत) हे बजरग बली , अब तेरा ही आसरा है। (कहकर अन्दर से **कोई चद्दर लेकर आता है और सोफे पर बैठकर हनुमान चालीसा करने लगता है। अचानक बाहर से किसी के आने** की आहट सुनकर) लगता है दुकान बन्द होगी तो साहब तुरन्त वापस लौट आये । अच्छा हुआ , बला टली। डर के मारे मेरी तो सांस ही ऊपर चढने लगी थी । (**उठकर बाहर की तरफ झांकता है कि कंपकंपी छूट जाती है । दौडकर वापस आता है और सोफे पर चद्दर ओढने का उपक्रम करता है**) मर गया रे , अब तो बचाने वाला कोई नहीं है ।मेमसाहिबा तो आ गई । हे बजरगी बली , अब तू ही रक्षा करना । वरना् आज मेरी खैर नहीं है । (कहता हुआ **फुर्ती से चद्दर ओढकर लेट जाता है**)

रेखा – (**बाहर से आकर माला और मिठाई का सामान मेज पर** रखती हुई) अरे बैठे – बैठे यहा सोफे पर ही सो गये । (स्वगत) सच , उस दिन मै कुछ ज्यादा ही बोल गई । ध्यान ही नहीं रहा और मन मे आया , जो बोलती रही । मुझे सयम रखना चाहिए था । क्या करु । सुनीता दीदी के बहकावे में आकर मैने बेमतलब की जिद पकड ली । दूसरे शब्दों में यदि कहू कि मेरी अक्ल को कुछ ऐसा अजीर्ण हो गया कि स्वय अपने ही पैरों पर कुल्हाडी मारने लगी।

(इसी समय बाहर से राजन आ जाता है और वह चुपके से एक तरफ खडा खडा रेखा की बातें सुनने लगता है)

रेखा – (स्वगत) मै भी कैसी मूर्ख हूं कि अपनी इस बेतुकी जिद के पीछे आपको पहचानना ही भूल गई । खैर , अब मेरे चेतना के स्वर स्वत ही उभरने लगे है । (विराम) नींद तो अभी आपको क्या आई होगी ? गुस्से के मारे जल्दी सी नींद आती भी तो नहीं है । जानती हू , आपका यह क्रोध गलत नहीं है । आपकी जगह कोई और होता तो इस स्थिति में या तो खुद घर छोडकर चला जाता या मुझे घर से बाहर का रास्ता दिखला देता। (विराम) आज मुझे पापाजी ने मेरे जीवन की असली पगडडी ही नहीं दिखला दी, बल्कि मेरे अन्त किरण के आगे से भ्रम का अधेरा भी दूर कर दिया । आज मुझे महसूस होने लगा कि अब तक मै केवल भटकाव के गलियारे मे ही घूमती रही । झूठे अहंकार के अथाह सागर में निरर्थक ही डुबकी लगाती रही। पापाजी इसे मेरी नादानी कहते है लेकिन मै समझती हू यह मेरी बहुत बडी अक्षम्य बेवकूफी थी । अब पछता रही हू , मगर इस पछतावे का कोई महत्व नहीं है । बीते हुए सुनहरे दिन कभी वापस नहीं आ सकते। (भयभीत सा महादेव चद्दर में अपने पैर जरा सही करता है।)

रेखा – (स्वगत) जान गई , आप मेरी बातों को बडे ध्यान से सुन रहे है । यह तो बहुत अच्छी बात है । मेरे पश्चाताप की क्रिया सार्थक होगी । (विराम) अच्छा , एक मजे की बात बताऊ । दो – एक दफे मुझे महादेव और उसकी घरवाली पार्वती की आपस की कुछ मीठी बाते चुपके से सुनने का अवसर मिला । वैसे तो किसी की निजी बाते छिपकर नहीं सुननी चाहिए , मगर मुझसे रहा नहीं गया । (विराम) क्या बताऊ, दोनों प्रेमभरी बातों मे ऐसे मतवाले हो रहे थे कि पूछो ही मत । मै तो देख-सुन कर हकबकी रह गई । (विराम) अब यह अहसास होने लगा है कि मेरी बेवकूफी के कारण हमारे बीच प्रेम के अकुर फूटने की असली घडी अकारण ही फिसल गई । दिल के अरमानो को एक तरह से ग्रहण लग गया । अब केवल पछतावा ही पछतावा है । (विराम) खैर, हमें आगे की सुध लेनी है । विश्वास रखिये , आज से मुझे आप एक नये रूप मे देखेंगे । झूठ नहीं कह रही , अब मै वो पहले वाली रेखा नहीं हू । एक दफे आप चद्दर खिसका कर तो देखो, मै रेखा नहीं आपकी पत्नी हू, धर्मपत्नी । (विराम) क्या , अभी तक आप मुझसे नाराज है ? अजी , मै सौगन्ध खाकर कहती हूं कि मुझे मेरी पिछली बातो का बहुत पछतावा है । (विराम) देखिये , अब उठ जाइये । इस तरह चुप रहकर क्यों मेरा जी जला रहे है ? मै तो वैसे ही अधजली हूं।

(चदर हटाये जाने के डर से महादेव की सचमुच ही कंपकंपी छूट जाती है)

रेखा – (खुश होती हुई) लगता है , मेरी बातो से अब आप बहुत खुश हैं और मुझे माफ कर दिया । क्यों , यह सही बात है न ? हा तभी आप मन ही मन मुस्करा रहे है । आज मै पहली बार आपके होठों पर हसी थिरकती देखूगी । जरा इधर देखिये ।

मै भी आज आनन्द के मारे अल्हड हो रही हू । (विराम) मेरे इन रसीले शब्दो को सुनकर आपको शायद हैरानी तो होगी लेकिन यह बिल्कुल सच है। सही अर्थो में सुहागिन तो मै आज ही बनी हूं । विश्वास न हो तो देख लो मेरे माथे में सिन्दूर भरा हुआ है ? (विराम) क्या अब भी आप गुस्से में है ? अजी मै हाथ जोडकर बार-बार आपसे माफी माग रही हू । हा – हा भूठ नहीं कह रही । एक दफे उठिये तो सही । (विराम) अब ज्यादा तरसाइये मत । उठ जाइये न । तो नहीं उठेंगे । तब यह लीजिए . । (कहकर पलक झपकते ही चदर खींच लेती है । लेकिन जब राजन की जगह महादेव को देखती है तो मुह से चीख निकलने को होती है कि पीछे की ओर एक तरफ खडे राजन के होठों से हसी के फव्वारे छूटते देखकर सकपका जाती है । फिर कभी महादेव को देखती है तो कभी राजन को । उधर महादेव की सिट्टीबिट्टी गुम। जब असलियत का अहसास होता है तो सभी के चेहरे खिल उठते है।

(इस बीच मंच पर प्रकाश की किरणें एक बार तो खूब झिलमिलाने लगती है फिर तुरन्त ही शनैःशनैः मन्द पडनी शुरू हो जाती है।)

निर्मोही व्यास के नाटकों के चरित्र हमारे इर्द-गिर्द से उठकर उनमें आकार लेते हैं। हमसे हमारी ही बात करते नजर आते है। चरित्रों का यह परकाया प्रवेश आईना दिखाने में सक्षम हैं। यह नाटककार की सफलता ही कही जायेगी। मध्यवर्गीय जीवन की अभिव्यक्ति करते पात्र, चाहे वे मकान मालिक रामदयाल ओझा (शब्दों का सौदागर) हो या 'किराये की काया' की सुकन्या अथवा'समापन किस्त' की युवती या'अन्त किरण' की रेखा या राजन हो, हमारे परिचित पात्र हैंजो टाइप्ड होते हुए भी हमारी ही मानसिकता की परतें खोलते दिखाई देते हैं।